3 राजधानी
अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले में वोकल फॉर लोकल की धूम

6 अभिमत
मोदी के करिश्मे पर निर्भर भाजपा

10 विदेश
उत्तरी गाजा में इजराइली सैनिकों का अभियान तेज

12 स्पोर्ट्स
विश्व बिलियर्ड्स चैंपियन बने पंकज आडवाणी

RNI NO.DELHIN/2012/48369
वर्ष 12 अंक 18
नई दिल्ली, बुधवार, 22 नवंबर, 2023
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
नगर संस्करण

नई दिल्ली, लखनऊ, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

एलएसी पर अब तेजी से काम जारी

राष्ट्रीय-11

ईडी ने नेशनल हेराल्ड की 752 करोड़ की संपत्ति कुर्क की

एजेंसी। नई दिल्ली

- एजेंसी ने किया दावा, कांग्रेस पार्टी ने दानदाताओं और शेयरधारकों को धोखा दिया
- कांग्रेस ने एजेंसी की कार्रवाई को 'तुच्छ प्रतिशोध की रणनीति' बताया

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने मंगलवार को कहा कि उसने कांग्रेस पार्टी द्वारा प्रवर्तित एवं नेशनल हेराल्ड समाचार पत्र का स्वामित्व रखने वाली यंग इंडियन कंपनी के खिलाफ धन शोधन की अपनी जांच के तहत 751.9 करोड़ रुपए मूल्य की संपत्ति कुर्क की है। केंद्रीय जांच एजेंसी के बयान के अनुसार, समाचार पत्र के प्रकाशक एसोसिएटेड जर्नल लिमिटेड (एजेएल) और इसकी होल्डिंग कंपनी यंग इंडियन के खिलाफ धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत एक आदेश जारी किया गया था।

बयान में कहा गया है, जांच में खुलासा हुआ है कि एजेएल के पास अपराध से हुई आय अचल संपत्तियों के रूप में है, जो देश में दिल्ली, मुंबई और लखनऊ जैसे कई शहरों में है। इनका मूल्य 661.69 करोड़ रुपए है। वहीं, यंग इंडियन के पास अपराध से प्राप्त आय 90.21 करोड़ रुपए एजेएल के इक्विटी शेयर के रूप में है। ईडी ने इस मामले में कांग्रेस नेता सोनिया गांधी, उनके बेटे राहुल गांधी और पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे से पूछताछ की है तथा उनके बयान दर्ज किए हैं। अस्थायी कुर्की आदेश तब आया है जब पांच राज्यों छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान, तेलंगाना और मिजोरम में चुनाव चल रहे हैं और वोटों की गिनती 3 दिसंबर को होने वाली है। कांग्रेस ने एजेंसी की कार्रवाई को 'तुच्छ प्रतिशोध की रणनीति' बताया और ईडी को भाजपा का 'गठबंधन भागीदार' करार दिया, जिसका दावा है कि उसे विधानसभा चुनावों में निश्चित हार का सामना करना पड़ रहा है। संघीय जांच एजेंसी ने एक बयान में आरोप लगाया कि इस मामले में एजेएल और पार्टी के पदाधिकारियों द्वारा कांग्रेस के शेयरधारकों और दानदाताओं को 'धोखा' दिया गया। एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड (एजेएल) और यंग इंडियन (वाईआई) के खिलाफ धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत संघीय जांच एजेंसी द्वारा एक अनंतिम कुर्की आदेश जारी किया गया है। नेशनल हेराल्ड एजेएल द्वारा प्रकाशित किया जाता है और इसका स्वामित्व यंग इंडियन प्राइवेट लिमिटेड के पास है। कांग्रेस नेता सोनिया गांधी और राहुल गांधी यंग इंडियन के बहुसंख्यक शेयरधारक हैं और उनमें से प्रत्येक के पास 38 प्रतिशत शेयर हैं।

बयान में ईडी ने कहा कि उसने पीएमएलए के तहत जांच की जा रही मनी लॉन्ड्रिंग मामले में 751.9 करोड़ रुपये की संपत्तियों को अस्थायी रूप से संलग्न करने का आदेश जारी किया है। कानून के तहत, ऐसे अनंतिम आदेश को छह महीने की समयावधि में पीएमएलए के निर्णायक प्राधिकरण द्वारा अनुमोदित किया जाना चाहिए, जिसके बाद ईडी संलग्न संपत्तियों पर कब्जा कर सकता है। ईडी ने कहा कि जांच से पता चला कि एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड (एजेएल) के पास अपराध की आय है। भारत के कई शहरों जैसे दिल्ली, मुंबई और लखनऊ में फैली अचल संपत्तियों के रूप में रु। 661.69 करोड़ रुपये और यंग इंडियन (वाईआई) के पास अपराध से प्राप्त रुपये की आय है। एजेएल के इक्विटी शेयरों में निवेश के रूप में 90.21 करोड़ रुपये। नेशनल हेराल्ड की अचल संपत्तियों में दिल्ली में आईटीओ स्थित कार्यालय परिसर और लखनऊ में कैसरबाग के पास एक कार्यालय परिसर शामिल है। गांधी परिवार, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और पार्टी नेता पवन बंसल, डी के शिवकुमार (कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री) और उनके सांसद भाई डी के सुरेश से पूछताछ की गई और पिछले साल मामले के संबंध में एजेंसी ने उनके बयान दर्ज किए थे। सूत्रों के मुताबिक, ईडी मामले में आरोप पत्र दाखिल करने से पहले उन्हें पूछताछ के लिए दोबारा बुला सकता है। ईडी ने कहा, मनी लॉन्ड्रिंग का मामला एक अदालत के आदेश से आया है, जिसने 26 जून 2014 को नेशनल हेराल्ड के मामलों में कथित अनियमितताओं के खिलाफ एक निजी शिकायत पर संज्ञान लिया था।

अदालत ने माना था कि यंग इंडियन सहित सात आरोपी व्यक्तियों और संस्थाओं ने 'प्रथम दृष्टया' आईपीसी की विभिन्न धाराओं के तहत आपराधिक विश्वासघात के अपराध किए हैं, जिसमें धोखाधड़ी और बेईमानी से संपत्ति की डिलीवरी के लिए प्रेरित करना, संपत्ति का बेईमानी से दुरुपयोग और आपराधिक साजिश शामिल है। एजेंसी ने कहा कि आरोपी व्यक्तियों ने यंग इंडियन के माध्यम से एजेएल की सैकड़ों करोड़ रुपये की संपत्ति हासिल करने के लिए आपराधिक साजिश रची। एजेएल को समाचार पत्र प्रकाशित करने के उद्देश्य से भारत के विभिन्न शहरों में रियायती दरों पर जमीन दी गई थी। इसमें कहा गया है कि एजेएल ने 2008 में अपना प्रकाशन परिचालन बंद कर दिया और व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए संपत्तियों का 'उपयोग' करना शुरू कर दिया। इसमें कहा गया है कि एजेएल को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) को 90.21 करोड़ रुपये का ऋण चुकाना था। हालांकि एआईसीसी ने 90.21 करोड़ रुपये के उक्त ऋण को एजेएल से गैर-वसूली योग्य (शेष पेज 9)

सुरंग में फंसे श्रमिक कैमरे पर आए, बढ़ी उम्मीदें

उत्तरकाशी में सुरंग में फंसे मजदूरों की एंडोस्कोपिक कैमरे से बनाई गई वीडियो क्लिप। इसे छह इंच चौड़ी नई पाइपलाइन के जरिये भेजा गया।

पीएनएस/एजेंसी। उत्तरकाशी/नई दिल्ली

- सभी श्रमिक सकुशल, बहु-एजेंसी बचाव अभियान का ध्यान ढहे हिस्से के मलबे के बीच क्षैतिज रूप से खुदाई करने पर है
- मोदी ने उत्तराखंड के सीएम पर बातचीत हालात के बारे में जानकारी ली
- सरकार ने निजी टेलीविजन चैनलों को बचाव कार्यों के कवरेज में संवेदनशील रहने की सलाह दी

सिल्कयारा सुरंग के अंदर फंसे 41 श्रमिकों की पहली तस्वीर मंगलवार को सामने आने के बाद अधिकारियों ने कहा कि बहु-एजेंसी बचाव अभियान का ध्यान ढहे हिस्से के मलबे के बीच क्षैतिज रूप से खुदाई करने पर है। हालांकि, बचावकर्मी अन्य विकल्पों की तैयारी में लगे रहे - जिसमें नौ दिनों से अंदर फंसे श्रमिकों तक पहुँचने के लिए सुरंग के ऊपर से ड्रिलिंग करना भी शामिल है।

पिछले शुक्रवार दोपहर को मलबे के माध्यम से क्षैतिज ड्रिलिंग को रोक दिया गया था क्योंकि हेवी ड्यूटी ऑगर मशीन को एक कठोर चट्टान का सामना करना पड़ा था, जिससे बचाव एजेंसी अन्य तरीकों पर भी विचार कर रही थी। लेकिन मंगलवार को राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) सैयद अता हसनैन, सड़क परिवहन और राजमार्ग सचिव अनुराग जैन और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की टिप्पणियों से यह स्पष्ट हो गया कि इस रुके हुए ऑपरेशन को फिर से शुरू करना मुख्य प्राथमिकता है। उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में आपदा स्थल पर, छह इंच चौड़ी नई पाइपलाइन के माध्यम से भेजे गए एंडोस्कोपिक कैमरे द्वारा कैप्चर की गई एक वीडियो क्लिप उन रिश्तेदारों के लिए आशा लेकर आई जो कई दिनों से वहां डेरा डाले हुए हैं। चार धाम मार्ग पर निर्माणाधीन सुरंग के ढहे हिस्से में सोमवार देर रात 53 मीटर मलबे के माध्यम से पाइपलाइन को धकेल दिया गया।

बचाव एजेंसियों द्वारा जारी किए गए वीडियो में पीले और सफेद हेलमेट पहने कार्यकर्ता पाइपलाइन के माध्यम से भेजे गए खाद्य पदार्थों को प्राप्त करते हुए और एक-दूसरे से बात करते हुए दिखाई दे रहे हैं। उन्हें स्क्रीन पर देख रहे अधिकारी निर्देश देते हुए लेंस साफ करने के लिए कहते हुए सुने जा रहे हैं। कार्यकर्ताओं को कैमरे के पास आने और वॉकी-टॉकी का उपयोग करने के लिए कहा जाता है, जाहिर तौर पर पहले नीचे भेजा गया था। फिर कैमरे को वापस ऊपर खींच लिया जाता है ताकि पाइपलाइन को साफ करने के लिए दबाव में पानी छोड़ा जा सके। पहले से मौजूद चार इंच के कंप्रेसर ट्यूब के जरिए फंसे मजदूरों से परिजनों ने पहले भी बात की है। सूखे मेवे जैसी खाने की चीजें भी उस पतले पाइप से भेजी जा रही थीं। लेकिन नई 'लाइफलाइन' मनोबल बढ़ाने वाली बनकर आई है।

संचार बहुत बेहतर है और अब बड़ी मात्रा में भोजन भेजा जा सकता है। सुनीता हेंब्रम, जिनके बहनोई प्रदीप किस्कू फंसे हुए मजदूरों में से हैं, ने बताया कि मैंने आज सुबह उनसे बात की।' वह बिहार के बांका से सिल्कयारा आई हैं। उन्होंने कहा कि नई खाद्य नली के माध्यम से उन्हें संतरे भेजे गए हैं। उन तक खिचड़ी पहुंचाने का भी प्रयास चल रहा है। वे ठीक हैं। पहले हमें खुद को सुनने लायक बनाने के लिए चिल्लाना पड़ता था लेकिन आज उनकी आवाज़ स्पष्ट थी। अधिकारियों के मुताबिक, नई पाइपलाइन के जरिए दलिया, खिचड़ी, कटे सेब और केले जैसे खाद्य पदार्थ भेजे जा सकेंगे। साथ ही कार्यकर्ताओं को (शेष पेज 9)

इजराइल ने फिर कहा-लश्कर को घोषित करेगा आतंकी संगठन

पीएनएस/एजेंसी। नई दिल्ली

- 26/11 के मुंबई आतंकवादी हमलों की 15वीं बरसी से पहले इजराइल ने किया ऐलान, इस हमले में 166 लोग मारे गए थे, जिसमें कुछ इजराइल नागरिक भी थे

इजराइल ने 26/11 के मुंबई आतंकवादी हमलों की 15वीं बरसी से पहले पाकिस्तान से संचालित लश्कर-ए-तैयबा को आतंकी संगठन घोषित करने का अपना फैसला मंगलवार को दोहराया।

मुंबई में 26 नवंबर 2008 को कई जगहों पर हुए आतंकी हमलों में 166 लोग मारे गए थे जिनमें कुछ इजराइली नागरिक भी शामिल थे। इजराइल के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता लियोर हैयात ने कहा, हां, मैं इसकी पुष्टि कर सकता हूं। यह नई बात नहीं हैं और दरअसल यह 2013 से है। इसे हाल में एक प्रशासनिक चूक की वजह से दोबारा प्रकाशित कर दिया गया था लेकिन यह कोई नई बात नहीं है। इससे पहले भारत में इजराइल के (शेष पेज 9)

आर्थिक, सुरक्षा साझेदारी गहरी करेंगे भारत-ऑस्ट्रेलिया

- दोनों देशों के मंत्रियों की वार्ता के बाद विदेश मंत्री जयशंकर ने कहा, क्वाड समूह की बैठक की तैयारी कर रहा भारत

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

भारत और आस्ट्रेलिया ने दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने के प्रयास के तहत मंगलवार को यहां अपनी आर्थिक और सुरक्षा साझेदारी को गहरा करने का संकल्प जताया तथा 'स्वतंत्र, खुले, समावेशी और नियम-आधारित' हिंद-प्रशांत क्षेत्र के प्रति अपनी साझा प्रतिबद्धता पर जोर दिया।

चीन वहां अपनी ताकत दिखा रहा है जिससे तनाव बढ़ रहा है। अपने ऑस्ट्रेलियाई समकक्ष पेनी वोंग के साथ भारत-ऑस्ट्रेलिया विदेश मंत्रियों की फ्रेमवर्क वार्ता में भाग लेने के बाद एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि भारत क्वाड समूह की बैठक की तैयारी कर रहा है। इस ग्रुप में ऑस्ट्रेलिया, भारत, जापान और अमेरिका शामिल हैं। विदेश मंत्री ने कहा कि दोनों नेताओं ने व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता (सीईसीए) वार्ता पर आगे बढ़ने के महत्व को रेखांकित किया और इस विषय पर चर्चा की। जयशंकर ने कहा, हमने अपने छात्रों और पेशेवरों की दोनों देशों में आवाजाही अधिक सुगम बनाने की दिशा में आगे बढ़ने के तरीके पर बात की। विदेश मंत्री ने कहा कि दोनों नेताओं ने पश्चिम एशिया की स्थिति पर भी विस्तार से चर्चा की। संवाददाता सम्मेलन में इजराइल-हमास संघर्ष के बारे में पूछे जाने पर जयशंकर ने भारत की स्थिति के बारे में बात की और कहा कि इस बेहद जटिल और चुनौतीपूर्ण स्थिति के कई पहलू हैं।

जयशंकर ने कहा, सात अक्टूबर को जो हुआ, निश्चित रूप से आतंकवाद उसका एक पहलू है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के रूप में हम यही सोचते हैं कि हमें आतंकवाद पर कभी समझौता नहीं करना चाहिए, हमें इसके बारे में बहुत स्पष्ट होना चाहिए। इसलिए वह एक मुद्दा है और इसमें बंधकों का मुद्दा भी शामिल है। उन्होंने कहा, दूसरा मुद्दा आज गाजा में मानवीय संकट का है। मानवीय सहायता की तत्काल आवश्यकता है और वहां अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून का पालन करना आवश्यक है। तीसरा मुद्दा फलस्तीनियों के अधिकारों और भविष्य से संबंधित है। उसका भी कोई समाधान होना चाहिए। हमारी और विश्व के अनेक देशों की दृष्टि में वह दो-राष्ट्र समाधान में ही निहित हो सकता है। जयशंकर ने कहा, हमें एक रास्ता तलाशना होगा जिसके जरिए इन सभी पहलुओं को संबोधित किया जा सके। उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत-ऑस्ट्रेलिया व्यापक रणनीतिक साझेदारी में वास्तविक प्रगति हो रही है। उन्होंने कहा, आज अन्य बातों के अलावा हमने व्यापक आर्थिक सहयोग समझौते (सीईसीए) वार्ता पर आगे बढ़ने के महत्व पर भी चर्चा की। हमने अपने छात्रों और पेशेवरों की आवाजाही दोनों देशों में अधिक सुगम बनाने के लिए आगे बढ़ने के तरीके पर बात की। जयशंकर ने कहा, हम दोनों व्यापक और समावेशी विकास के लिए हिंद-प्रशांत में अधिक विश्वसनीय और लचीली आपूर्ति श्रृंखला बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि टू प्लस टू संवाद के तहत और (शेष पेज 9)

क्विक न्यूज

झारखंड के मुख्यमंत्री के करीबी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की

नई दिल्ली। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के करीबी सहयोगी पंकज मिश्रा पर साहिबगंज जिले में अवैध खनन के आरोपों की जांच के लिए सीबीआई ने प्राथमिकी दर्ज की है। सोमवार को दर्ज प्राथमिकी में सीबीआई की रांची इकाई ने मिश्रा, पवित्र कुमार यादव, राजेश यादव, संजय कुमार यादव, बच्चू यादव, संजय यादव और सुवेश मंडल पर साहिबगंज के नीबू पत्थर में पत्थरों की चोरी और अवैध खनन में कथित तौर पर शामिल होने का मामला दर्ज किया है। झारखंड उच्च न्यायालय ने सीबीआई को साहिबगंज पुलिस द्वारा नामजद आरोपियों और याचिकाकर्ता विजय हांसदा के आचरण की प्रारंभिक जांच करने का निर्देश दिया था। विजय हांसदा ने ही रिट याचिका वापस लेने की मांग की थी। अदालत ने हांसदा की याचिका पर मुकदमा दर्ज करने का आदेश जारी किया था। याचिका में आरोप लगाया गया कि पिछले ढाई साल से पत्थर माफिया उनके जिले के खनन अधिकारियों सहित सरकारी अधिकारियों की मिलीभगत से अवैध खनन कर रहे हैं और माफिया भारी-भरकम मशीनों का उपयोग और विस्फोट कर रहे हैं।

दीवाली और छठ के बाद शादी का सीजन करेगा मालामाल

- शादियों का सीजन बृहस्पतिवार देवउठान एकादशी 23 नवंबर से शुरू हो रहा है, जो 15 दिसंबर तक चलेगा, कुल 4.7 लाख करोड़ रुपए का कारोबार होने का अनुमान

पायनियर सामाचार सेवा। नई दिल्ली

त्योहारी सीजन देशभर के व्यापारियों और अर्थव्यवस्था के लिए शानदार रहा। दिवाली और छठ में रिकॉर्ड बिक्री के बाद कारोबारी 23 नवंबर से शादियों का सीजन शुरू होने जा रहा है जो 15 दिसंबर तक चलेगा।

एक अनुमान के मुताबिक इस शादियों के सीजन में देशभर में करीब 38 लाख शादियां होने का अनुमान है। शादी की खरीदारी से लेकर शादियों में जरूरी सर्विसेज पर 4.78 लाख करोड़ रुपये का कारोबार इस सीजन में होने का अनुमान है। शादियों का सीजन बृहस्पतिवार देवउठान एकादशी 23 नवंबर से शुरू हो रहा है, जो 15 दिसंबर तक चलेगा। शादियों के मौसम का बड़ा लाभ होटल उद्योग को भी होगा।

शादी में सामान की खरीद के अलावा, टेंट डेकोरेटर, फूलों की सजावट, क्रॉकरी, खानपान सेवा, कैब सेवा, पेशेवर समूहों का स्वागत, सब्जी विक्रेता, फोटोग्राफर, वीडियोग्राफर, बैंड सहित कई प्रकार की सेवाएं भी शामिल होती हैं। इसके साथ ही इवेंट मैनेजमेंट भी एक बड़ा व्यावसाय बनकर उभरा है। व्यापारियों के संगठन कनफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने उम्मीद जताई है कि 23 नवंबर से शुरू हो रहे शादियों के आगामी सीजन में देशभर में लगभग 38 लाख विवाह संपन्न होंगे, जिनसे (शेष पेज 9)

ओडिशा के आदिवासी इलाके को एक सदी बाद मिली ट्रेन

- राष्ट्रपति मुर्मू का ससुराल और मायका ट्रेन नेटवर्क से जुड़ा, परंपरा से हटकर राष्ट्रपति ने स्पेशल प्रेसिडेंट सुइट ट्रेन से नहीं बल्कि सामान्य यात्री ट्रेन में यात्रा की
- तीन ट्रेनों को दिखाई हरी झंडी

दीपक कुमार झा। बादामपहाड़ (ओडिशा)

राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ट्रेन को हरी झंडी दिखाते हुए।

ओडिशा-झारखंड सीमा पर स्थित आदिवासी बहुल क्षेत्र को ट्रेनों की झलक पाने और अपने सपनों को साकार करने के लिए एक सदी से अधिक समय तक इंतजार करना पड़ा, जब तक कि उनकी भूमि की बेटी और बहू भारत के राष्ट्रपति के रूप में गद्दी पर नहीं बैठीं।

मंगलवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का पैतृक स्थान रायरंगपुर और उनका ससुराल बादामपहाड़ जो महज 32 किमी की दूरी पर हैं वे रेल नेटवर्क से जुड़ गए। इतना ही नहीं इस क्षेत्र को एक ही बार में पड़ोसी जमशेदपुर, रांची और कोलकाता सहित महत्वपूर्ण शहरों से कनेक्टिविटी मिल गई, जिससे पूरे जीवाश्म और खनिज समृद्ध क्षेत्र के आर्थिक विकास की पर्याप्त गुंजाइश भी मिल गई। राष्ट्रपति के रूप में अपने 'ससुराल' और 'मायका' के बीच पहली ट्रेन यात्रा करने से पहले, मुर्मू ने तीन ट्रेनों बादामपहाड़-टाटानगर लोकल ईएमयू; बादामपहाड़-राउरकेला साप्ताहिक एक्सप्रेस, और बादामपहाड़-शालीमार साप्ताहिक एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई। इस मौके पर मुर्मू ने कहा कि किसी भी क्षेत्र का विकास उस क्षेत्र की कनेक्टिविटी पर निर्भर करता है। बादामपहाड़ रेलवे स्टेशन पर सभा को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि चाहे वह रेल हो, सड़क हो या डाक सेवाएं हों - ये सभी सेवाएं लोगों के जीवन को आसान बनाती हैं। ओडिशा कैडर के आईएएस के रूप में राज्य की सेवा कर चुके रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव द्वारा क्षेत्र की आवश्यकता को समझने के कारण इस परियोजना को बढ़ावा मिला।

वैष्णव के अलावा ओडिशा के राज्यपाल रघुबर दास, केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान और ओडिशा सरकार के शीर्ष पदाधिकारी इस भावनात्मक क्षण में उपस्थित थे। ये सभी ट्रेनें मुर्मू के पैतृक शहर ओडिशा के मयूरभंज जिले के रायरंगपुर से होकर गुजरती हैं। वर्तमान में राष्ट्रीय ट्रांसपोर्टर द्वारा माल ढुलाई के अलावा रायरंगपुर स्टेशन तक एक भी मेल/एक्सप्रेस ट्रेन नहीं थी। स्थानीय लोग दशकों से बादामपहाड़ और रायरंगपुर को जोड़ने वाली मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों की मांग कर रहे थे। मुर्मू की झलक देखने के साथ-साथ ट्रेनों को भी देखने आएं स्टेशन के पास रहने वाले शैलेंद्र पात्रा ने कहा (शेष पेज 9)

सैकड़ों शिक्षकों के लाखों रुपये डकार गया क्लर्क

जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय में तैनात बाबू पर धन निजी बैंक में ट्रांसफर करवाने का आरोप

● प्राइवेट बैंक के कर्मचारियों के साथ सांठ-गांठ कर की सरकारी धन की हेराफेरी

सांकेतिक फोटो

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा में सैकड़ों सरकारी टीचर्स के खाते पर डाका डाले जाने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय में तैनात एक बाबू पर आरोप है कि उसने एक प्राइवेट बैंक के कर्मचारियों के साथ सांठ.गांठ करके सरकारी धन को प्राइवेट बैंक में ट्रांसफर करवा दिया।

जिला विद्यालय निरीक्षक डॉक्टर धर्मवीर चौधरी ने ग्रेटर नोएडा के थाना सूरजपुर में दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि डीएसओ कार्यालय के अधीन जनपद गौतमबुद्धनगर में 547 अध्यापक कर्मचारी न्यू पेंशन स्कीम एनपीएस के हकदार हैं। इनको प्रतिमाह 10 प्रतिशत की दर से वेतन की एनपीएस की कटौती के साथ राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध कराए गए 14 प्रतिशत राज्यांश के साथ एनएसडीएल मुंबई को धनराशि हस्तांतरित की जाती है। धनराशि ट्रांसफर करने से पूर्व संबंधित अध्यापक कर्मचारी खाता खुलवाने के लिए आवेदन करता है। इस दौरान आवेदन पत्र पर कर्मचारियों द्वारा स्पष्ट किया जाता है कि उनका अंशदान एनएसडीएल द्वारा किस फंड मैनेजर को ट्रांसफर किया जाए। उन्होंने बताया कि जनपद में उपरोक्त 547 कर्मचारियों ने राजकीय फंड मैनेजर एसबीआई लिंक में जमा करने की सहमति दी थी। जांच करने पर पाया गया कि 547 अध्यापकों व कर्मचारियों की एनपीएस कटौती तथा राज्यांश की धनराशि को एनएसडीएल को हस्तांतरित नहीं किया गया है। इस धनराशि को एसबीआई लिक फं ड मैनेजर को हस्तांतरित ना करके एचडीएफसी को हस्तांतरित किया गया है।

जांच में पता चला कि यह सारा धंधा कार्यालय के लेखाकार देवेंद्र कुमार ने एचडीएफ सी बैंककर्मी श्रीमती योग्यता व रवि कुमार की मिलीभगत से किया है।

जिला विद्यालय निरीक्षक ने आरोप लगाया कि उनके एनपीएस पासवर्ड लेखाकार देवेंद्र कुमार के पास रहता है। देवेंद्र कुमार ने पासवर्ड का दुरुपयोग कर एनपीएस की धनराशि को गैर कानूनी तरीके से सरकारी फं ड मैनेजर एसबीआई यूटीआई एलआईसी की बजाय अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए एचडीएफसी बैंक को ट्रांसफ र कर दिया। थाना प्रभारी में बताया कि जिला विद्यालय निरीक्षक की शिकायत पर लेखाकार सहित दोनों बैंक कर्मियों के खिलाफ धोखाधड़ी व गबन का मामला दर्ज कर लिया है।

कॉलेज के छात्रों को ऑनलाइन नशा बेचने के आरोप में छह लोग गिरफ्तार

● शैक्षिक संस्थानों के साथ बहुराष्ट्रीय कंपनियों में काम करने वालों को करते थे नशे की आपूर्ति

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

गौतमबुद्ध नगर पुलिस ने विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं और यहां स्थित बहुराष्ट्रीय कंपनियों में काम करने वाले अभियंताओं को ऑनलाइन मादक पदार्थ की आपूर्ति करने में कथित रूप से शामिल एक गिरोह के छह लोगों को गिरफ्तार किया है। थाना बीटा- दो पुलिस ने बीती रात इन्हें गिरफ्तार करके उनके पास से 20 किलो 390 ग्राम गांजा, 400 ग्राम चरस तथा एक कार बरामद किया।

एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि थाना बीटा- दो पुलिस को बीती रात को सूचना मिली कि कुछ लोग जो बाहर से गांजा लाकर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को इसे बेचते हैं, वे आने वाले हैं।

उन्होंने बताया कि सूचना के आधार पर अल्फा गोल चक्कर के पास पुलिस ने एक वारना कार और मोटरसाइकिल पर सवार छह लोगों को गिरफ्तार किया। पुलिस ने कहा कि पूछताछ के दौरान आरोपियों ने अपना नाम चिंटु ठाकुर, पिंटू उर्फ कालू ,जयप्रकाश, वर्षा, विकास तथा रिंकू उर्फ सेठ बताया। अधिकारी ने बताया कि पूछताछ पर पुलिस को पता चला कि यह लोग चरस और गांजा खरीदकर लाते हैं तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और नोएडा के विभिन्न कॉलेजों, विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं और बहुराष्ट्रीय कंपनियों में काम करने वाले अभियंताओं तक इसे पहुंचाते हैं। उन्होंने बताया कि पुलिस यह पता लगाने का प्रयास कर रही है कि उनके गिरोह में और कितने लोग हैं।

घर से कूड़ा उठाने के बदले यूजर चार्ज लेने वाली कंपनी के खिलाफ जांच शुरू

● स्पैरो कंपनी के खिलाफ जांच में मेयर, नगर आयुक्त, पार्षद टीम में शामिल

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

जिस कंपनी को नगर निगम ने डोर टू डोर कूड़ा कलेक्शन करने की एवज में यूजर चार्ज का ठेका दिया है इस स्पैरो कंपनी के खिलाफजांच शुरू हो गई। जांच टीम की बैठक मेयर सुनीता दयाल ऑफिस में हुई।

बैठक में मेयर सुनीता दयाल के अलावा नगर आयुक्त विक्रमादित्य मलिक, जांच टीम में शामिल पार्षदों में पार्षद अजय शर्मा, राजीव भाटी, प्रवीण चौधरी और बिल्लू यादव शामिल रहे। निगम प्रशासन की जांच टीम में शामिल रहे अधिकारियों में नगर निगम के हेल्थ अफसर मिथिलेश कुमार, जीएम जलकल आनंद त्रिपाठी, नगर निगम के लेखा परीक्षक विवेक त्रिपाठी, और कविनगर जोनल प्रभारी सुनील राय शामिल हुए। करीब 11 बजे शुरू हुई बैठक में जांच टीम ने काफी देर तक मशक्कत की। हाल ही में हुई बोर्ड की बैठक में स्पैरो कंपनी को नगर निगम द्वारा दिया गया 10 वर्ष के लिए ठेके को लेकर विवाद चला आ रहा है।

निगम के मुख्य कर निर्धारण अधिकारी डॉ0 संजीव सिन्हा का कहना है कि कंपनी को ठेका देने का प्रस्ताव बोर्ड की बैठक से पास है। वहीं दूसरी और तत्कालीन कई पार्षदों का कहना है कि बोर्ड की बैठक में यह प्रस्ताव कभी पेश तक नहीं किया गया। निगम ने अपनी मर्जी से कंपनी को कार्य दिया है।

प्रेमी संग मिलकर महिला ने पति को किया अधमरा

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

सेक्टर-24 थाना क्षेत्र के मोरना गांव में रहने वाली एक महिला ने अपने कथित प्रेमी संग मिलकर अपने पति के ऊपर जानलेवा हमला किया। घटना की रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस मामले की जांच कर रही है।

सेक्टर-24 के थाना प्रभारी निरीक्षक अमित कुमार ने बताया कि मोरना गांव निवासी छोटा बाबू रावत ने सोमवार रात को थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई कि शाम को ड्यूटी से घर लौटने पर उन्होंने चौड़ा गांव निवासी टिकेंद्र सिंह चौहान को अपने घर पर बैठा देखा। अपनी पत्नी दुर्गा रावत से जब उन्होंने टिकेंद्र के घर आने के बारे में पूछा तो वह गुस्सा हो गई और उनसे झगड़ने लगी।

थाना प्रभारी ने बताया कि पीड़ित के विरोध किया तो दुर्गा तथा टिकेंद्र ने घर में मौजूद लोहे की छड़ से उसे मारना पीटना शुरू कर दिया, जिससे वह बुरी तरह घायल हो गए। पीड़ित के बेहोश होकर गिर जाने पर दोनों उसे मरा हुआ समझकर वहां से भाग गए। उन्होंने बताया कि आसपास के लोगों की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने रावत को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती करवाया।

विश्वकप में ऑनलाइन सट्टा खिलवा रहा दंपति गिरफ्तार

गाजियाबाद। वर्ल्ड कप में ऑनलाइन सट्टा लगवा रहे दिल्ली के एक दंपति को गाजियाबाद पुलिस ने गिरफ्तार किया है। ये कपल दुबई बेस्ड एप्लिकेशन से सट्टा खिलवा रहा था। अनुमान है कि इस कपल ने अभी तक पांच करोड़ का लेनदेन दुबई के खातों में किया गया है।

पुलिस अभी तक ये बात स्पष्ट नहीं कह पा रही है कि दुबई बेस्ड एप महादेवा थी या कोई और। पुलिस अधिकारी सिर्फ आगे की जांच जारी रखने की बात कह रहे हैं। नंदग्राम थाना पुलिस ने बताया, राजनगर एक्सटेंशन में विंडसर पैराडाइज सोसाइटी है। यहां के फ्लैट नंबर ए.1708 में ऑनलाइन सट्टा लगाने की सूचना मिली थी।

सोसाइटी की बैठक में पूर्व कर्नल पर जानलेवा हमला

● समस्याओं को लेकर चर्चा के दौरान दोनों पक्षों के बीच हुई थी झड़प

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

ग्रेटर नोएडा में मंगलवार की दोपहर एक सोसायटी की मीटिंग में जमकर हंगामा हो गया। हंगामा इतना बढ़ा कि कुछ लोगों ने सेना से रिटायर कर्नलल पर कुर्सी से हमला कर दिया। मामले की जानकारी पर पहुंची थाना बीटा 2 पुलिस ने मामला शांत कराया।

जानकारी के अनुसार, ग्रेटर नोएडा की ट्विन टावर अपार्टमेंट में ओनर्स एसोसिएशन की मीटिंग चल रही थी। मीटिंग में सोसाइटी वासियों की विभिन्न समस्याओं को लेकर विचार मंथन किया जा रहा था। बताया जाता है कि इसी दौरान यहां रहने वाले रिटायर्ड कर्नल अतुल प्रताप और लेफ्टिनेंट कर्नल शक्ति सिंह राणा के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी हो गई। यह कहासुनी इतना बढ़ गई कि दोनों आमने सामने आ गए। आरोप है कि कुछ लोगों ने रिटायर कर्नल अतुल प्रताप पर कुर्सी से हमला बोल दिया, जिससे वह घायल हो गए। इस बीच किसी व्यक्ति ने थाना बीटा 2 पुलिस को सूचना दी।

ठेकेदार पर पति के अपहरण का महिला ने लगाया आरोप

● सोनभद्र से नोएडा पहुंची युवती ने दनकौर में केस दर्ज कराया

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

गौतमबुद्ध नगर के थाना दनकौर में सोनभद्र निवासी एक महिला ने ठेकेदार पर पति का अपहरण करने और धमकी देने का आरोप लगाते हुए मामला दर्ज कराया है। महिला ने कहा कि एक ठेकेदार उसके पति को जनपद सोनभद्र से काम करने के लिए दनकौर लेकर आया, लेकिन उसकी उसके पति से बात नहीं हो पा रही है।

पीड़िता के अनुसार, अनिल कुमार के साथ काम करने वाले लोगों का कहना है कि उसके पति की ठेकेदार के यहां काम करते समय मौत हो चुकी है। थाना दनकौर के एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि आरती कुमारी ने बीती रात को थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई। उन्होंने कहा कि आरती का आरोप है कि सोनभद्र निवासी उनके पति अनिल कुमार को ठेकेदार हकीम मियां पुत्र रज्जाक काम करने के लिए नोएडा लेकर आया था।

पीड़िता का आरोप है कि दो-तीन महीने तक उसकी उसके पति से बात होती रही, लेकिन इसके बाद उसकी उसके पति से बात होनी बंद हो गई। आरोप के मुताबिक, ठेकेदार बार-बार पूछने पर भी अनिल के बारे में कुछ नहीं बताता और धमकी देता है। आरती ने कहा कि ठेकेदार ने उसे मुंह बंद रखने के लिए कई बार पैसा देने का भी लालच दिया।

थाना प्रभारी ने बताया कि घटना की रिपोर्ट दर्ज कर मामले की जांच कर रही है। कोर्ट के आदेश पर मामला सोनभद्र में दर्ज हुआ था, लेकिन इसके बाद इस मामले को नोएडा स्थानांतरित किया गया है।

भाजपा पालिका, पंचायत सदस्यों को प्रशिक्षण

गाजियाबाद में प्रशिक्षण सत्र को संबोधित करते पूर्व मंत्री व विधायक अतुल गर्ग।

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

2024 लोकसभा चुनाव को लेकर भाजपा अपने हर नेताए पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं को एकजुटता का संदेश देते हुए चुनाव की तैयारियों में जुटने का आहवाहन कर रही है।

जनता तक भाजपा सरकार की उपलब्धियों व आगामी रणनीतियों के बारें में बताने के लिए लगातार संवाद कर रही है। इसी क्रम में आज शास्त्रीनगर में भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के आहवाहन पर नगर पालिका व नगर पंचायत सदस्यों का एक दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग कार्यक्रम आयोजित किया गया। शिविर में चार वर्ग सम्पन्न हुए। पहले सत्र का शुभारंभ वरिष्ठ भाजपा नेता व पूर्व महानगर अध्यक्ष विजय मोहन, रजापुर ब्लॉक प्रमुख मोनिका चौधरी, मुरादनगर ब्लॉक प्रमुख राजीव त्यागी ने दीप प्रज्जवलित कर किया। दूसरे सत्र में पूर्व मंत्री व शहर विधायक अतुल गर्ग ने पार्टी के इतिहास के बारे में जानकारी दी। तीसरे सत्र को पूर्व महापौर अशु वर्मा ने सम्बोधित किया। चौथे और अंतिम सत्र में राज्यसभा सांसद अनिल अग्रवाल ने प्रश्नोत्तरी संवाद एवं ब्लॉक समिति की सफलता की जानकारी दी।

संक्षिप्त समाचार

नोएडा में सड़क पर दौड़ती कार में लगी आग को बुझाते दमकल कर्मी।

नोएडा में सड़क पर दौड़ रही कार में लगी आग

नोएडा। नोएडा में मंगलवार की दोपहर सड़क पर दौड़ रही कार में अचानक आग लगने से हड़कंप मच गया। गनीमत यह रही कि कार से आग की लपटें उठती देखकर चालक समय रहते बाहर निकल आया। मौके पर पहुंची दमकल गाड़ी ने आग पर काबू पा लिया। मंगलवार की दोपहर करीब 12;00 बजे नोएडा के सेक्टर 71 स्थित बाबा बालक नाथ मंदिर के पास जा रही अल्टो कार से अचानक धुआ उठने पर चालक ने कार को सड़क किनारे खड़ा कर दिया। थोड़ी ही देर में कार से आग की लपटे उठने लगी। देखते ही देखते कार को धूं धूंकर जल उठी। कार से उठे आग के गुबार को देखकर राहगीरों और स्थानीय लोगों में हड़कंप मच गया। कुछ लोगों ने आग बुझाने का प्रयास किया, लेकिन सफलता नहीं मिल पाई। इस दौरान किसी व्यक्ति ने थाना फेस तीन पुलिस व फायर ब्रिगेड को आग लगने की सूचना दी। कार में आग लगने से ट्रेफिक जाम की स्थिति बन गई। चीफ फायर ऑफिसर सीएफओ प्रदीप चौबे ने बताया कि मौके पर पहुंची एक दमकल गाड़ी ने आग पर काबू पाया।

लंबे समय बाद संभव का आयोजन, कई शिकायतें दर्ज

गाजियाबाद। लंबे समय के बाद आज नगर निगम सभागार में संभव दिवस का आयोजन किया गया। संभव कार्यक्रम के दौरान बड़ी संख्या में लोगों ने उपस्थित होकर अपनी समस्याओं को बताया। संभव दिवस का आयोजन प्रत्येक मंगलवार को सुबह दस बजे से दो बजे तक नगर निगम सभागार में आयोजित किया जाता है। संभव दिवस में आज सुबह ही लोगों ने अपनी समस्याओं से अवगत कराया। संभव दिवस में अपर नगर आयुक्त अरूण कुमार यादव, चीफइंजीनियर एनके चौधरी, सहायक नगर आयुक्त पल्लवी, आदि अधिकारियों ने संभव में शिरकत की। 11 लोगों की ओर से शिकायतें दर्ज कराई जा चुकी है। इनकी संख्या बढने की संभावना है।

गाजियाबाद में हलाल सर्टिफिकेट की जांच के लिए छापेमारी

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

गाजियाबाद में मंगलवार को भी खाद्य एवं औषधि विभाग की हलाल सर्टिफिकेट प्रोडक्ट को लेकर छापेमारी जारी रही। दो दर्जन से अधिक स्टोर और मॉल के अंदर दो दिन में यह छापेमारी चल रही है। जहां भी हलाल सर्टिफिकेट प्रोडक्ट मिले हैं। उनको जब्त कर लिया गया है और सैंपल जांच के लिए भेजा है।

5 जगहों पर हलाल सर्टिफिकेट के सामान मिले हैं, ऐसे दुकानदारों के खिलाफ खाद्य एवं औषधि विभाग मुकदमा दर्ज करा रहा है। गाजियाबाद में असिस्टेंट कमिश्नर फू ड विनीत कुमार ने बताया कि सोमवार से हलाल सर्टिफाइड प्रोडक्ट को लेकर छापेमारी चल रही है। अभी तक दो दर्जन के करीब मॉल स्टोर आदि की जांच की जा रही है। जहां भी इस तरह का प्रोडक्ट मिल रहा है, उसको जब्त करने के साथ जांच के लिए भेजा जा रहा है। पांच ऐसी दुकान जहां इस तरह का प्रोडक्ट मिला है। उन सभी पर फूड सेफ्टी एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया जाएगा। अधिकतर सुपर मसाला नूडल्स कुछ ऑर्गेनिक टाइप के प्रोडक्ट भी मिले हैं। जिन पर इस तरह का सर्टिफिकेट लगा है। विनीत कुमार ने बताया कि कुछ मल्टीनेशनल कंपनी के स्टोर हैं।

हाईकोर्ट ने नोएडा प्राधिकरण को दिया झटका

● अदालत के आदेश से एस बिल्डर को राहत, जमीन पर कब्जा देने, जीरो पीरियड और नक्शा पास करने का आदेश

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा के सेक्टर-150 में स्पोर्ट्स सिटी से जुड़े ऐस बिल्डर को प्रयागराज हाईकोर्ट ने बड़ी राहत दी है। कोर्ट ने प्राधिकरण बोर्ड की और से लगाई गई पाबंदियों को रद्द कर दिया है।

कंपनी को जमीन पर कब्जा देने और प्राधिकरण को नक्शा पास करने का आदेश दिया है। इतना ही नहीं, कंपनी को भूखंड आवंटन की तारीख से लेकर अब तक जीरो पीरियड का लाभ देने के लिए कहा है। ब्याज की धनराशि समायोजित करनी पड़ेगी। दरअसल, नोएडा प्राधिकरण ने सेक्टर.150 में स्पोर्ट्स सिटी प्रोजेक्ट के तहत भूमि आवंटन किया था, जिसमें ऐस बिल्डर भी हिस्सेदार है। कंपनी ने जमीन की एवज में पूरा पैसा जमा कर दिया दिया।

इसके बावजूद प्राधिकरण ने 60 हजार वर्गमीटर की जगह 30 हजार वर्गमीटर जमीन ही नहीं दी गई। पूरी जमीन पर आज तक कब्जा नहीं दिया है। जब कंपनी ने भूखंड पर निर्माण करने के लिए संशोधित नक्शे दाखिल किए तो प्राधिकरण ने बोर्ड बैठक में लगाई गई पा बंदियों का हवाला देते हुए नक्शा पास करने से इनकार कर दिया। दूसरी तरफ , प्राधिकरण लगातार पैसा की मांग कर रहा है। कंपनी ने भुगतान रोका तो भूखंड आवंटन रद्द करने के लिए नोटिस भेज दिया गया। ऐस इंफ्रा सिटी डेवलपर्स प्राइवेट लिमिटेड ने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया।

कंपनी ने हाईकोर्ट को बताया कि प्राधिकरण ने 2014.15 में स्पोर्ट्स सिटी योजना लॉन्च की थी। कंपनियों के कंसोर्शियम में ऐस इंफ्रा सिटी डेवलपर्स प्राइवेट लिमिटेड शामिल थी। कंसोर्शियम ने 12 लाख वर्गमीटर भूमि का आवंटन 19 हजार 400 रुपए प्रति वर्गमीटर की दर से किया गया।

पुरानी पेंशन बहाली को लेकर रेलवे कर्मियों ने किया गुप्त मतदान

गाजियाबाद। पुरानी पेंशन बहाली की हड़ताल को लेकर गाजियाबाद सहित सभी रेलवे स्टेशनों सहित अन्य संगठन गुप्त मतदान कर रहे हैं।

गाजियाबाद स्टेशन पर भी नॉदन रेलवे मैन्स यूनियन की गाजियाबाद शाखा द्वारा गुप्त मतदान कराया जा रहा है। स्टेशन पर करीब 1400 कर्मचारी तैनात हैं। शाखा के सचिव लोकेन्द्र सिंह ने बताया कि पुरानी पेंशन बहाली को लेकर आंदोलन किए जा रहे हैं लेकिन अभी तक भी उनकी मांगों लेकर संज्ञान नहीं लिया गया। ऐसे में फि र से हड़ताल करने का निर्णय हाल ही में मुंबई में हुए अधिवेशन में लिया गया था।

रेव पार्टी के दोनों कोबरा को जंगल में छोड़ा गया

● रिमांड के दौरान राहुल की निशानदेही पर किया था बरामद, एल्विश यादव केस में है नामजद

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

एल्विश केस में फाजिल पुर गांव से बरामद किए गए दो कोबरा सांप को वन विभाग की टीम ने सूरजपुर के जंगल में छोड़ दिया है। इसके लिए कोर्ट में सांप को छोड़ने की अर्जी लगाई थी। शाम तक कोर्ट से आदेश आने के बाद दोनों सांप को छोड़ा गया। इन सांप का प्रयोग रेव पार्टी में किया जाता था। इनको राजस्थान, झारखंड से पकड़कर यहां राहुल के गोदाम में रखा गया था।

राहुल की निशानदेही पर इन सांप को रिकवर किया गया था। दो दिन पहले सांप का मेडिकल कराया गया था। उन दौरान ये बात सामने आई थी कि दोनों सांपों की विष ग्रंथियां निकाल ली गई थी। जिला वन अधिकारी प्रमोद श्रीवास्तव ने बताया कि वन्य जीवों के साथ किसी प्रकार की खिलवाड़ करना दंडनीय अपराध है। आरोपियों के खिलाफ दर्ज केस में इन सभी अपराधों को भी शामिल किया जा रहा है। इस केस में अब तक कुल 11 सांपों को बरामद किया जा चुका है। सभी को जंगल में छोड़ा जा चुका है। बता दे इस केस में यूट्यूबर एल्विश यादव भी नामजद है। एक बार एल्विश से पुलिस पूछताछ कर चुकी है। सिंगर फ ाजिल पुरिया का नाम भी इस केस में कई बार आ चुका है। हालांकि पुलिस उससे पूछताछ करेगी या नहीं इसको मंथन जारी है। इसका फैसला आला अधिकारी ही लेंगे। इन सांपों की विष ग्रंथी भी नहीं है। इससे पहले भी मिले पांच सांपों की विष ग्रंथी नहीं थी। ऐसे में सांपों का जहर निकालकर तस्करी का मामला सामने आ रहा है। इन जहर का प्रयोग नशे के लिए रेव पार्टियों में किया जाता था। राहुल की रिमांड और पूछताछ के बाद सिाक्ष्य के आधार पर पुलिस रिपोर्ट तैयार कर रही है। इसके आधार पर दोबारा से पूछताछ हो सकती है।

नोएडा की आलीशान कोठियों में जहरीले सांपों का डेरा

नोएडा। नोएडा के सेक्टर.117 में एक जहरीले सांप के द्वारा 3 साल की मासूम बच्ची को डसने के बाद बच्ची की मौत से पूरा नोएडा शहर को सदमे में डाल दिया है। नोएडा के आलीशान कोठियों में जहरीले सांप व विषैले जंतुओं के कारण डर में जी रहे हैं। नोएडा के पॉश सेक्टर.51 में रहने वाले जहरीले सांप व विषैले जंतुओं के डर के साये में हैं। सेक्टर.51 आरडब्ल्यूए के महासचिव संजीव कुमार ने बताया कि सेक्टर के ई.22 प्लॉट में घर के आंगन में करैत सांप देखा गया जो काफी जहरीला सांप माना जाता है। महासचिव संजीव कुमार ने बताया कि पहले भी सेक्टर में विषैले सांप निकले हैं। इसका मुख्य कारण सेक्टर के खाली प्लॉटों में उगी झाड़ियां और बंद कंप्लीशन वाले मकान हैं जहां झाड़ियां उग आई हैं। नोएडा के सेक्टर.51 आरडब्ल्यूए महासचिव संजीव कुमार ने नोएडा प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी डा लोकेश एम को पत्र लिखकर खाली प्लॉटों पर उगी झाड़ियों को अभियान चलाकर साफ करने के लिए एक पत्र लिखा है।

पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह ने 11 थानों के थानाध्यक्ष बदले

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह ने कानून व्यवस्था को चाक-चौबंद करने के लिए 11 थानाध्यक्षों का तबादला किया है। पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह के मीडिया प्रभारी ने बताया कि निरीक्षक अरविंद कुमार को पुलिस लाइन से थाना बिसरख का प्रभारी तैनात किया गया है।

निरीक्षक अवधेश प्रताप सिंह को थाना सेक्टर.63 का प्रभारी निरीक्षक बनाया गया है। निरीक्षक अमरेश कुमार को थाना बादलपुर का प्रभारी निरीक्षक बनाया गया है। निरीक्षक सरिता सिंह को थाना ईकोटेक.3 का प्रभारी निरीक्षक बनाया गया है। मुनेंद्र सिंह को पुलिस लाइन से थाना बीटा दो के प्रभारी निरीक्षक के रूप में तैनात किया गया है। निरीक्षक देवेंद्र शंकर पांडे को थाना कासना का प्रभारी निरीक्षक बनाया गया है। निरीक्षक राघवेंद्र सिंह को थाना रबपुरा का प्रभारी बनाया गया है। निरीक्षक सुबोध कुमार को पुलिस लाइन से थाना सेक्टर-126 के प्रभारी निरीक्षक के पद पर तैनात किया गया है।

उन्होंने बताया कि निराशा राम प्रकाश को पुलिस लाइन से प्रभारी निरीक्षक थाना सेक्टर.49 बनाया गया है। मीडिया प्रभारी ने बताया कि निरीक्षक किरण राज सिंह को निरीक्षक महिला थाना बनाया गया है। उन्होंने बताया कि उपनिरीक्षक सुनील कुमार को चौकी प्रभारी जेवर टोल प्लाजा से थानाध्यक्ष जारचा के के पद पर तैनात किया गया है।

रोडरेज की घटना में भिड़े भाजपा नेता

गाजियाबाद। बीती रात नन्दग्राम थाना क्षेत्र अंतर्गत राजनगर एक्टेंशन में हुई रोडरेज की घटना के दौरान भाजपा के कद्दाबार नेता एवं हिन्दूवादी संगठन से जुड़े लोग आपस में भिड़ गये। सूत्रों के मुताबिक इस घटना के दौरान भाजपा के नेताओं के बीच जमकर मारपीट एवं गाली ग्लोंच हुई। इस मारपीट के मामले की सूचना मिलने के बाद मौके पर पुलिस भी पहुंच गई। जिसके बाद पुलिस ने झगड़े पर आमदा दोनों नेताओं के गुटों को समझा.बुझाकर अलग.अलग कर दिया। फिर पुलिस ने दोनों पक्षों के द्वारा दी गई तहरीर के आधार पर जांच शुरू कर दी। इस संदर्भ में पुलिस के एक अधिकारी का कहना था कि अगर दोनों पक्ष रिपोर्ट दर्ज करवाने की बात कहेंगे तो पुलिस रिपोर्ट दर्ज कर अग्रिम कार्रवाई करेगी।

सैक्स रैकेट के संचालन के विरोध में हंगामा

गाजियाबाद। क्रासिंग रिपब्लिक थाना क्षेत्र की सैन विहार कॉलोनी में चल रहे सैक्स रैकेट के संचालन को बंद करवाने के लिये कॉलोनिवासियों ने पुलिस की उदासीनता दिखाने के बाद खुद स्वयं सामूहिक कार्रवाई की है। सैन विहार में रहने वाले सैकड़ों महिला-पुरूषों ने उक्त मकान को घेरकर जमकर हंगामा एवं प्रदर्शन किया और फिर सैक्स रैकेट का संचालन करने वाली महिला के यहां ग्राहक बनकर आये दो लोगों को पकड़कर उन्हें पुलिस के हवाले कर दिया। इतना ही होने पर भी जब कमिश्नरेट पुलिस अपनी कुंभकरणीं नींद से नहीं जगी तो आज सुबह वहां रहने वाले लोगों की भीड़ ने सैक्ट रैकेट का संचालन करने की आरोपित महिला के मकान को घेरकर हंगामा व प्रदर्शन करना शुरू कर दिया। इसी बीच हिन्दू रक्षा दल के पदाधिकारी व कार्यकर्ता भी मौके पर पहुंच गए और आरोपी लोगों के खिलाफ पुलिस प्रशासन से कार्रवाई की मांग की है।

आरआरटीएस फंडिंग पर सुप्रीम कोर्ट ने आप सरकार को चेताया

अलवर-पानीपत रूट के लिए धन मुहैया नहीं कराने पर दिल्ली सरकार से जताई नाराजगी

● शीर्ष अदालत ने कहा कि रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम कॉरिडोर के लिए एक सप्ताह के अंदर बकाया धन का भुगतान नहीं किया जाता है तो विज्ञापन के लिए आवंटित राशि परियोजना में लगाया जाएगा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

आम आदमी पार्टी की सरकार उच्चतम न्यायालय से रीजनल रैपिड रेल ट्रांजिट सिस्टम परियोजना के लिए फंड आवंटित करने का वादा करने के बाद भी राशि आवंटित नहीं कर रही है। इस पर शीर्ष अदालत ने नाराजगी जताते हुए कहा कि दिल्ली सरकार कोर्ट के आदेश का पालन क्यों नहीं कर रही है। अगर राष्ट्रीय परियोजनाएं प्रभावित होंगी और उसकी बजाय विज्ञापन पर धन खर्च किया जाएगा तो विज्ञापन के बजट पर रोक लगा देंगे और इसे आरआरटीएस परियोजना के लिए डायवर्ट कर देंगे।

न्यायालय ने कहा कि अगर एक सप्ताह के अंदर बकाया धन का भुगतान नहीं किया जाता है तो विज्ञापन के लिए आम आदमी पार्टी सरकार द्वारा आवंटित धन परियोजना में लगाया जाएगा। आरआरटीएस परियोजना में दिल्ली को यूपी में मेरठ, राजस्थान में अलवर और हरियाणा में पानीपत तक जोड़ने वाले सेमी-हाई स्पीड रेल कॉरिडोर बनाए जाने हैं।

शीर्ष अदालत ने कहा कि पीठ ने कहा अप्रैल में दिल्ली सरकार ने रकम (415 करोड़) देने की बात कही थी। पीठ ने गौर किया कि आरआरटीएस परियोजना से दिल्ली में प्रदूषण भी कम होगा। पीठ ने कहा कि दिल्ली सरकार के बजट आवंटन में बीते तीन वर्षों में करीब 1100 करोड़ रुपये विज्ञापन के लिए आवंटित किए गए हैं। मौजूदा वित्तीय वर्ष में भी यह आवंटन 550 करोड़ रुपये है। पीठ ने कहा कि बजटीय आवंटन ऐसी चीज है जिसे सरकार को पूरा करना चाहिए।

बजटीय प्रावधान पर राज्य सरकार को गौर करना चाहिए, लेकिन अगर ऐसी राष्ट्रीय परियोजनाएं प्रभावित होती हैं और विज्ञापनों पर पैसा खर्च किया जाता है, तो वह यह निर्देश देगी कि उस कोष को इस परियोजना के लिए हस्तांतरित कर दिया जाए। न्यायमूर्ति संजय किशन कौल और न्यायमूर्ति सुधांशु धूलिया की पीठ ने कहा कि दिल्ली सरकार के वकील ने 24 जुलाई को आश्वासन दिया था कि परियोजना के लिए भुगतान किया जाएगा।

सीएम केजरीवाल इस्तीफा दें : सचदेवा

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है कि उच्चतम न्यायालय द्वारा दिल्ली सरकार के विज्ञापन बजट को आरआरटीएस खाते में स्थानांतरित करने का आदेश गंभीर मामला है। मुख्यमंत्री केजरीवाल न केवल दिल्ली के लोगों को धोखा देने के लिए बल्कि शीर्ष अदालत के निर्देशों का उल्लंघन करने के लिए इस्तीफा दें। सचदेवा ने कहा है कि केजरीवाल सरकार लगभग एक साल से आरआरटीएस फंड के भुगतान से इनकार कर रही है और जुलाई 2023 में सुप्रीम कोर्ट ने आप सरकार को आरआरटीएस फंड के अपने हिस्से का तुरंत भुगतान करने का निर्देश दिया था। केजरीवाल सरकार सार्वजनिक कार्यों में धन की कमी का हवाला देती रही है।

फटकार लगाना जनहित में : लवली

प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अरविंदर सिंह लवली ने कहा कि यह चौंकाने वाली बात है कि सुप्रीम कोर्ट को रैपिड रेल परियोजना में राज्य के 415 करोड़ रुपये के योगदान का भुगतान नहीं करने पर दिल्ली सरकार को फटकार लगानी पड़ी है। साथ ही चेताया कि अगर एक सप्ताह के अंदर बकाया धन का भुगतान नहीं किया जाता है तो विज्ञापन के लिए आवंटित राशि परियोजना में लगाया जाएगा। लवली ने कहा कि सरकार की लापरवाही के चलते राष्ट्रीय राजधानी में सार्वजनिक परिवहन खस्ताहाल है, राज्य सरकार को रैपिड रेल परियोजना में पूरा सहयोग करना चाहिए था, क्योंकि परियोजना के समय पर पूरा होने से लाखों यात्रियों को बड़ी राहत मिलेगी।

कार-स्कूटर टक्कर में पिता-पुत्र की मौत

नई दिल्ली। पश्चिमी दिल्ली में मंगलवार तड़के एक कार ने स्कूटर को कथित तौर पर टक्कर मार दी, जिससे युवक और उसके आठ साल के बेटे की मौत हो गई। राजौरी गार्डन इलाके में हुई दुर्घटना में व्यक्ति की पत्नी और आठ माह के बेटे को भी चोटें आईं हैं।

पश्चिमी दिल्ली के पुलिस उपायुक्त विचित्र वीर ने बताया कि पुलिस मौके पर पहुंची और पाया कि एक कार ने स्कूटी को पीछे से टक्कर मारी है। उन्होंने बताया कि एक व्यक्ति, उसकी पत्नी और दो बच्चे दोपहिया वाहन पर सवार थे। दुर्घटना में इन सभी को चोटें आईं। घायलों को नजदीकी अस्पताल ले जाया गया, जहां दिनेश वासन और दक्ष को चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। उसकी पत्नी प्रीति और आठ माह के बेटे प्रयाण का इलाज किया जा रहा है। पुलिस ने बताया कि घटना के सिलसिले में संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है।

बामनोली भूमि अधिग्रहण मामला : मुख्य सचिव की याचिका पर फैसला सुरक्षित

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● बामनोली भूमि अधिग्रहण मामला : मुख्य सचिव की याचिका पर फैसला सुरक्षित

उच्च न्यायालय ने मुख्य सचिव नरेश कुमार की एक याचिका पर मंगलवार को अपना फैसला सुरक्षित रख लिया। इस याचिका में कुमार ने अदालत से समाचार पोर्टल द वायर को वह लेख हटाने का निर्देश देने का अनुरोध किया था, जिसमें बामनोली भूमि अधिग्रहण मामले के संबंध में उन पर कथित तौर पर आक्षेप लगाया गया था।

न्यायमूर्ति सचिन दत्ता की पीठ के समक्ष यह मामला आया और उन्होंने कहा कि वह अंतरिम याचिका पर आदेश पारित करेंगे। नौ नवंबर को द वायर पर प्रकाशित लेख के संबंध में कुमार ने मानहानि याचिका दायर की थी। लेख में बामनोली भूमि अधिग्रहण मामले में कथित तौर पर कुमार के बेटे का नाम लाभार्थी परिवार से जोड़ा गया था। उक्त 19 एकड़ भूमि को द्वारका एक्सप्रेसवे के निर्माण के लिए 2018 में भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने अधिग्रहित किया था।

कुमार ने अपनी याचिका में लेख को हटाने, समाचार पोर्टल और संवाददाता को उनके खिलाफ और कोई मानहानिकारक लेख प्रकाशित करने से रोकने का निदेश देने का अनुरोध किया था। सुनवाई के दौरान, कुमार की ओर से पेश हुए वरिष्ठ वकील मनिंदर सिंह ने कहा कि यह लेख लोगों के मन में उनके खिलाफ संदेह पैदा करने और कुछ लोगों को खुश करने के लिए पूर्व नियोजित तरीके से प्रकाशित किया गया।

समाचार पोर्टल के वकील ने कहा कि लेख में कुछ सवाल उठाए गए थे और इसका इरादा किसी भी तरह से कुमार को बदनाम करना नहीं था। याचिका में कहा गया है कि मुख्य सचिव ने 13 नवंबर को पोर्टल और संवाददाता को एक कानूनी नोटिस भी भेजा था, जिसमें दावा किया गया था कि लेख की सामग्री प्रथम दृष्टया भ्रामक और मानहानिकारक है। खबरों के मुताबिक, जमीन की कीमत मई में 41.52 करोड़ रुपए से बढ़ाकर 353.79 करोड़ रुपए कर दी गई। रिपोर्टों के अनुसार, इसके अलावा केंद्रीय गृह मंत्रालय ने बढ़े हुए दामों पर मुआवजे को मंजूरी देने के लिए दक्षिण पश्चिम दिल्ली के जिला मजिस्ट्रेट हेमंत कुमार के खिलाफ कार्रवाई शुरू की।

प्रीमियम बस एग्रीगेटर स्कीम लागू होने का रास्ता साफ

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● उपराज्यपाल से मंजूरी मिलने के बाद दिल्ली सरकार ने जारी की अधिसूचना

दिल्ली एनसीआर के लोग जिस तरह लोग अपने मोबाइल फोन से कैब, ऑटो या बाइक टैक्सी बुक कराते हैं, ठीक उसी तरह से जल्द ही एक जगह से दूसरी जगह आने-जाने के लिए प्रीमियम बस में अपनी सीट भी बुक करा सकेंगे।

राष्ट्रीय राजधानी में मोबाइल ऐप आधारित प्रीमियम बस योजना लागू होने का रास्ता साफ हो गया है। उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना की मंजूरी के बाद केजरीवाल सरकार के परिवहन विभाग ने मंगलवार को इस स्कीम को लागू करने के लिए अधिसूचना जारी कर दी है। इस स्कीम से जुड़कर बसें चलाने के इच्छुक प्राइवेट बस एग्रीगेटर्स लाइसेंस के लिए आवेदन कर सकते हैं। इसके लिए एप्लिकेशन फॉर्म का फॉर्मेट भी जारी कर दिया गया है। जल्द ही लाइसेंस जारी करने की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी, जिसके बाद इस स्कीम के तहत प्रीमियम बसें चलने लगेंगी। इन बसों में लोग आरामदायक तरीके से सफर करके एक जगह से दूसरी जगह जा सकेंगे। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा है, उन्हें उम्मीद है ये सेवा दिल्ली की सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था में बहुत बड़ा बदलाव लाएगी। लोग अपनी कार और स्कूटर छोड़कर बसों में सफर करना शुरू करेंगे। पिछले चार वर्षों में इसे सार्थक बनाने की कोशिश की जा रही थी।

परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने कहा दिल्ली मोटर व्हीकल लाइसेंसिंग ऑफ एग्रीगेटर (प्रीमियम बस) योजना, 2023 की अधिसूचना दिल्ली के लिए ऐतिहासिक है। यह सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने और प्रदूषण को कम करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। यह योजना लोगों को विश्वस्तरीय, प्रदूषण रहित और सुविधाजनक यात्रा विकल्प प्रदान करने की सरकार की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। योजना के तहत इंट्रा-सिटी यात्राओं के लिए प्रीमियम बस शुरू करने का प्रावधान है। दिल्ली मोटर व्हीकल लाइसेंसिंग ऑफ एग्रीगेटर योजना, 2023 प्रीमियम बस को परिभाषित भी करती है। इसके तहत प्रीमियम बसें वैसी लक्जरी सार्वजनिक बस होगी जिसमें कम से कम 9 यात्रियों के बैठने की क्षमता होगी और बसें पूरी तरह से वातानुकूलित होगी। साथ ही इन बसों में वाईफाई, जीपीएस और सीसीटीवी के साथ पूर्व आरक्षित रिक्लाइनिंग सीटें होंगी।

प्रमुख विशेषताएं : मार्ग लाइसेंस धारकों के पास अपनी प्रीमियम बसों के संचालन के लिए संभावित मार्गों को निर्धारित करने की छूट होगी। डायनेमिक होगा जो दिल्ली परिवहन निगम एसी बसों के अधिकतम किराये से कम नहीं हो सकती है।

भारत विरोधी नारे लिखने वाला गिरफ्तार

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● कश्मीरी गेट फ्लाई ओवर पर खालिस्तान के समर्थन और भारत विरोधी नारे लिखे थे

राष्ट्रीय राजधानी में करीब दो महीने पहले एक फ्लाईओवर पर खालिस्तान समर्थक भित्तिचित्र पाए जाने के मामले में दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने ने हरियाणा के 38 वर्षीय युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान मलक सिंह उर्फ मलिक के रूप में की गई है, जो हरियाणा के कुरूक्षेत्र का रहने वाला है। उसने प्रतिबंधित संगठन सिख फॉर जस्टिस (एसएफजे) के प्रमुख गुरपतवंत सिंह पन्नू के इशारे पर दिल्ली और देश के अन्य हिस्सों में भित्तिचित्र बनाए।

पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि कश्मीरी गेट फ्लाईओवर पर खालिस्तान के समर्थन में और भारत विरोधी नारे लिखे पाए जाने के बाद पुलिस ने 27 सितंबर को एक प्राथमिकी दर्ज की थी। इन नारों में दिल्ली बनेगा खालिस्तान एसएफजे और खालिस्तान जिंदाबाद एसएफजे लिखा था। बाद में, इंटरनेट पर एक वीडियो में पन्नू ने दावा किया था कि कनाडा से खालिस्तान समर्थक सिख निज्जर की हत्या का बदला लेने के लिए संसद भवन को निशना बनाने के मकसद से दिल्ली पहुंचे, और दिल्ली में कई भित्तिचित्र बनाए गए।

विशेष पुलिस आयुक्त (विशेष प्रकोष्ठ) एचजीएस धालीवाल ने बताया, जांच के दौरान, पगड़ी पहने एक व्यक्ति की पहचान की गई। संदिग्ध व्यक्ति पंजाब जाने वाली एक बस में सवार हुआ और कुरूक्षेत्र के पिपली में उतरा। बाद में, संदिग्ध व्यक्ति की पहचान मलक सिंह के रूप में की गई। उन्होंने कहा, रविवार को, पुलिस ने सिंह को गिरफ्तार कर लिया, जो पन्नू के निर्देश पर कश्मीरी गेट मेट्रो स्टेशन के पास युधिष्ठिर सेतु की दीवार पर भित्तिचित्र बनाने में शामिल था।

प्रदूषण पर केंद्र-राज्य राजनीति छोड़ उपायों पर करें विचार : सुप्रीम कोर्ट

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने मंगलवार को कहा कि केंद्र और राज्यों को राजनीति भूलकर यह देखने में अपना दिमाग लगाना चाहिए कि पराली जलाने को कैसे रोका जा सकता है। इसने कहा कि आरोप-प्रत्यारोप का खेल जारी रहने से वायु प्रदूषण के कारण लोग प्रभावित होंगे।

पंजाब सरकार ने शीर्ष अदालत को बताया कि फसल अवशेष जलाने पर भूमि मालिकों के खिलाफ 984 प्राथमिकी दर्ज की गई हैं और दो करोड़ रुपए से अधिक का पर्यावरण क्षतिपूर्ति शुल्क लगाया गया है तथा लगभग 18 लाख की वसूली हुई है।पीठ ने पराली जलाने का संदर्भ देते हुए कहा, राज्यों और केंद्र को राजनीति भूलकर यह देखने में अपना दिमाग लगाना चाहिए कि फसल अवशेषों को जलाने को कैसे रोका जा सकता है। न्यायमूर्ति संजय किशन कौल और न्यायमूर्ति सुधांशु धूलिया की पीठ ने कहा, लोगों को इससे कोई सरोकार नहीं है कि आप इसे

कैसे करते हैं और आप क्या करते हैं तथा अदालत का काम बारीकियों में पड़ना नहीं है। अदालत का काम है आपसे आपका काम करवाना। आप यह कैसे करते हैं यह आपकी समस्या है। प्रदूषण के मामले में सहायता कर रहीं न्याय मित्र एवं वरिष्ठ अधिवक्ता अपराजिता सिंह ने पीठ को सूचित किया कि रविवार को ऐसी घटनाएं सामने आईं।

एक्यूआई में सुधार के लिए उपाय ढूंढें अधिकारी : एनजीटी

वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए अधिकारियों द्वारा की गई कार्रवाई पर असंतोष व्यक्त करते हुए एनजीटी ने निर्देश दिया कि वे दिल्ली में हवा की गुणवत्ता में सुधार सुनिश्चित करने के लिए हरसंभव उपाय करें। अधिकरण ने खराब होती वायु गुणवत्ता पर स्वत: संज्ञान लेते हुए एक सप्ताह में कार्रवाई रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिया है। मामले में सुनवाई 29 को होगी।

पराली समाधान योग्य समस्या : रेनजेन

जर्मनी की सॉफ्टवेयर कंपनी एसएपी के डिप्टी-चेयरमैन पुनित रेनजेन का मानना है कि पराली जलाने की वजह से दिल्ली में पैदा हुई वायु प्रदूषण की समस्या का समाधान हो सकता है। भारतीय अमेरिकी रेनजेन ने हरियाणा और पंजाब में शुरू की गई दो पायलट परियोजनाओं के आधार पर यह दावा किया है। रेनजेन ने कहा, यह बहुत गंभीर स्थिति है और इसके कई कारण हैं। लेकिन दिल्ली में वायु गुणवत्ता संबंधी समस्याओं में पराली जलाने का योगदान लगभग 25 से 30 प्रतिशत का है। उत्तर भारत विशेषकर पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में पराली जलाने के 80,000 मामले होते हैं।

दिल्ली में पेयजल संकट गंभीर होने की आशंका : आतिशी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● उपराज्यपाल से इस मामले मे हस्तक्षेप करने का किया अनुरोध

जल मंत्री आतिशी ने मंगलवार को कहा कि दिल्ली जल बोर्ड को कोष जारी नहीं किया गया है जिससे राष्ट्रीय राजधानी में पानी का गंभीर संकट पैदा हो सकता है। आतिशी ने उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना से इस मामले में हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया है।

वित्त विभाग का प्रभार भी संभाल रहीं आतिशी ने आरोप लगाया कि उनके लिखित निर्देशों के बावजूद दिल्ली जल बोर्ड को कोष जारी नहीं किया गया। उन्होंने कहा, राष्ट्रीय राजधानी में भीषण जल संकट पैदा हो सकता है। नियमित कामकाज के अलावा वेतन देने के लिए पैसे नहीं हैं। ठेकेदारों ने काम करने से इनकार कर दिया है। इससे दिल्ली में भीषण जल संकट पैदा हो सकता है, सीवर ओवरफ्लो हो सकते हैं और गंदा पानी आ सकता है। उन्होंने यह भी दावा किया कि मुख्य सचिव नरेश कुमार के निर्देश पर वित्त विभाग ने कोष जारी नहीं किया। मुख्य सचिव कार्यालय या वित्त विभाग की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है।

मंगोलपुरी स्टेशन पर फैक्ट्री मजदूर की चाकू मारकर हत्या

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

मंगोलपुरी रेलवे स्टेशन के समीप लूट के प्रयास में कथित रूप से पांच लोगों ने 36 वर्षीय एक व्यक्ति की चाकू मारकर हत्या कर दी। बाहरी दिल्ली के पुलिस उपायुक्त जिम्मी चिराम ने बताया कि पीड़ित की पहचान बिहार के मूल निवासी मंजय पासवान के रूप में हुई है, जो हरियाणा के बहादुरगढ़ में रहता था और इलाके में स्थित जूते बनाने की एक फैक्टरी में काम करता था।

पुलिनस के अनुसार, घटना के वक्त पासवान के साथ मौजूद जितेंद्र ने बताया कि वे दोनों स्टेशन के प्लेटफॉर्म को पार कर रहे थे, तभी सामने से आ रहे पांच लोगों ने उन्हें लूटने का प्रयास किया। दोनों पक्षों के बीच झड़प हुई और गिरोह ने चाकुओं से दोनों पर हमला कर दिया। जितेंद्र मौके से भागने में सफल रहा, लेकिन आरोपियों ने पासवान को पकड़कर चाकू मार दिया। कुछ देर बाद जब जितेंद्र वहां से गुजर रहे चार से पांच लोगों के साथ लौटा, तो उसने पासवान को रेल पटरी पर खून से लथपथ अवस्था में पड़ा देखा। उन्होंने बताया कि पासवान की गर्दन पर चोट आई थी। मामले में पश्चिम विहार वेस्ट थाने में हत्या का मामला दर्ज किया गया है।

पत्नी से विवाद के बाद पति ने दो बेटों पर किया हमला, एक की मौत

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● खुद भी जान देने की कोशिश की

उत्तर पश्चिमी दिल्ली के भारत नगर में पत्नी से कहासुनी के बाद एक व्यक्ति ने अपने दो बच्चों पर हमला का उसने जान देने का प्रयास किया। इस हमले में उसके दो साल के बेटे की मौत हो गई जबकि दूसरा बेटा घायल हो गया। आरोपी जेजे कॉलोनी निवासी राकेश बेरोजगार और शराब का आदी है।

पुलिस अधिकारी ने बताया कि सोमवार शाम राकेश का पत्नी से विवाद होने पर उसने दोनों बेटों के साथ खुद को कमरे में बंद कर लिया। उसने बच्चों पर धारदार हथियार से हमला किया और बाद में खुद भी जान देने का प्रयास किया। शाम करीब साढ़े छह बजे घटना की सूचना मिलने के बाद भारत नगर थाने की टीम मौके पर पहुंची। घायलों को दीप चंद बंधु अस्पताल ले जाया गया, जहां से उन्हें डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल रेफर कर दिया गया। राकेश के छोटे बेटे की अस्पताल में मौत हो गई, जबकि उसका और पांच साल के बड़े बेटे का इलाज चल रहा है। मामले में राकेश के हत्या के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई है।

संक्षिप्त समाचार

जिला अदालतों में धनराशि की कमी को लेकर चिंता

नई दिल्ली। न्यायिक अधिकारियों के लिए जगह की कमी पर चिंता प्रकट करते हुए दिल्ली उच्च न्यायायल ने मंगलवार को प्रदेश सरकार ने पूछा कि क्या वह निचली अदालतों में सुनवाई की खातिर सबूतों का रिकार्ड रखने वाले स्थानीय आयुक्तों के वास्ते राशि और जमीन प्रदान करेगी। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन की अगुवाई वाली पीठ ने कहा कि दिल्ली सरकार राशि नहीं जारी कर रही है तथा खुद उच्च न्यायालय भी उन नए मजिस्ट्रेट के वास्ते अदालतकक्षों के आवंटन में गंभीर समस्या से जूझ रहा है जो अगले साल पदभार ग्रहण करेंगे। न्यायमूर्ति मनमोहन और न्यायमूर्ति मिनी पुष्कर्ण की पीठ ने कहा, हमारी प्राथमिकता अदालतें हैं। हमारे पास पर्याप्त अदालतें नहीं हैं, अगले साल 110 मजिस्ट्रेट तैयार होने जा रहे हैं।

एक जून को नगर निगम दिवस घोषित करने का सुझाव

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम के सदन की अगली बैठक में एक जून को नगर निगम दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव पेश किया जाएगा। एमसीडी के एक अधिकारी ने बताय कि एक जून, 1863 को नगरपालिका की सामान्य समिति की पहली बैठक हुई थी और प्रस्ताव है कि इस दिन को नगरपालिका दिवस के रूप में घोषित किया जाए और मनाया जाए। एमसीडी ने कहा, एमसीडी का 160 साल पुराना इतिहास है और यह देश के सबसे पुराने संगठनों में से एक है, जो उचित सम्मान का हकदार हे तथा इसके लिए एक अच्छा तरीका उसके स्थापना दिवस को मनाया जाना हो सकता है। दिल्ली नगर पालिका फरवरी 1863 में अस्तित्व में आई और अप्रैल 1863 में दिल्ली के संचालन के लिए उपनियम बनाए जाने के वास्ते एक समिति गठित की गई थी। आम समिति की पहली बैठक एक जून, 1863 को आयुक्त की अध्यक्षता में हुई थी। एमसीडी अधिनियम 1957 में लागू किया गया था और यह सात अप्रैल, 1958 से प्रभाव में आया था।

खान मार्केट दुनिया का 22वां सबसे महंगा खुदरा बाजार

नई दिल्ली। दक्षिणी दिल्ली का खान मार्केट किराए के लिहाज से दुनिया का 22वां सबसे महंगा खुदरा बाजार है। यहां वार्षिक किराया 217 डॉलर प्रति वर्गफुट है। रियल एस्टेट परामर्श कंपनी कुशमैन एंड वेकफील्ड ने एक रिपोर्ट में यह कहा। खान मार्केट पिछले साल इस सूची में 21वें स्थान पर था। कंपनी ने मंगलवार को अपनी रिपोर्ट दुनिया के प्रमुख बाजार जारी की। इसमें दुनिया के मुख्य शहरों के प्रमुख बाजारों में खुदरा तौर पर जमीन या दुकानों के किराए का विश्लेषण किया गया है। कुशमैन एंड वेकफील्ड ने एक बयान में कहा, दिल्ली का खान मार्केट दुनिया के शीर्ष 25 सबसे महंगे मुख्य बाजारों में शामिल है।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला में वोकल फॉर लोकल की धूम

मेले में खादी ग्रामोद्योग थीम पवैलियन के स्टॉल आगंतुकों के लिए बने आकर्षण का केंद्र

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

प्रगति मैदान स्थित भारत मंडपम में शुरू हुए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला वसुधैव कुटुंबकम (व्यापार से एकजुटजुता) थीम पर आयोजित किया जा रहा है। स्थानीय रूप से निर्मित उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपील के अनुरूप, खादी और ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी) ने ग्रामीण भारत में कारीगरों के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इस पहल का मकसद तीज त्योहारों के दौरान लोगों को वोकल फॉर लोकल की भावना से जोड़ना है।

खादी और ग्रामोद्योग आयोग ने प्रगति मैदान के हॉल नंबर 3 में खादी थीम पवेलियन स्थापित किया है। यह पूरे अतंर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में सबसे दिव्य, भव्य और व्यापक है, जो पीएम मोदी के आत्मनिर्भर भारत के अनुरूप तैयार किया गया है। खादी पवेलियन कुल 3559 स्वॉयर मीटर में तैयार किया गया है।

प्रगति मैदान के हाल नंबर 3 में अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले में खादी उत्पाद को दिखाती युवती।

जिसमें से 688.5 स्वॉयर मीटर में देशी चरखा, जम्मू-कश्मीर का पश्मीना चरखा, विद्युत चालित कुम्हारी चॉक, कच्ची घानी तेल निकालने की प्रक्रिया, मंदिर में पूजा के लिए उपयोग किए हुए पुष्पों को री-साइकल कर बनाई गई अगरबत्ती- धूपबत्ती बनाने के स्टॉल भी लगाये गये हैं। इसका उद्देश्य आगंतुकों को पारंपरिक वस्तुओं से जुड़ाव का अनुभव प्रदान करना है। खादी पवेलिन में कुल 214 स्टॉल स्थापित किये गये हैं। इन 214 स्टालों पर देशभर के अलग-अलग क्षेत्रों के कारीगरों द्वारा निर्मित उत्पादों द्वारा भारत की समृद्ध विरासत, शिल्प कौशल और हस्त कला को प्रदर्शित किया जा रहा है। 214 स्टालों में से 40 फीसदी से अधिक स्टॉल खादी निर्माण से जुड़ी संस्थाओं को आवंटित हैं, शेष लगभग 60 फीसदी स्टॉल ग्रामोद्योग, पीएमईजीपी और स्फूर्ति की इकाइयों के लिए आरक्षित हैं।

सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश की 26 संस्थाएं ले रही भाग

इस खादी थीम पवेलियन में उत्तर प्रदेश की सबसे ज्यादा 26 संस्थाएं, जम्मू और कश्मीर की 13, पश्चिम बंगाल की 8 और कर्नाटक की 5, राजस्थान की 4 खादी संस्थाओं समेत देश के करीब हर राज्य की खादी संस्थाएं प्रतिभाग कर रही हैं। मेले में खादी और ग्रामोद्योग एवं पीएमईजीपी की इकाइयों द्वारा उत्पादित हस्तशिल्प में वाराणसी से बनारसी सिल्क साड़ी और पश्मीना शॉल, गुजरात से पटोला सिल्क, पूर्वोत्तर से एरी सिल्क और मूंगा सिल्क, पश्चिम बंगाल से टसर, तमिलनाडु से कांचीपुरम, कर्नाटक से मलबेरी, मध्यप्रदेश से चंदेरी साड़ी और बिहार से भागलपुरी सिल्क आगंतुकों को आकर्षित कर रही हैं।

गाड़ी से 20 हजार किमी का सफर तय कर ऑस्ट्रेलिया जाएगा गुरुग्राम का अनमोल

पर्यावरण के प्रति जागरुक करना भी है इस यात्रा का उद्देश्य

इससे पहले कार में लंदन का कर चुका है सफर

ऑस्ट्रेलिया जाने के लिए तैयार गाड़ी के साथ अनमोल व उसका साथी।

ऑस्ट्रेलिया के सफर में अनमोल के साथ उसका एक साथी भी जाएगा

काले रंग की स्कॉर्पियो गाड़ी पर बनवाए हैं विभिन्न देशों के नक्शे

संजय कुमार मेहरा। गुरुग्राम

कार में लंदन का सफर तय कर चुका गुरुग्राम का युवक अनमोल अब स्कॉर्पियो गाड़ी से ऑस्ट्रेलिया का सफर तय करेगा। 100 दिन के इस सफर में वे 11 देशों को पार करके ऑस्ट्रेलिया जाएंगे। पूरी दुनिया में रोड से घूमकर वहां की संस्कृति को समझने और पर्यावरण के प्रति जागरुक करने का उनका सपना है। इस सपने को पूरा करने के लिए वह अलग-अलग देशों में जा रहे हैं।

गुरुग्राम के रहने वाले अनमोल कहते हैं कि वह दुनिया की यात्रा गाड़ी में करने के साथ वहां की संस्कृति को वीडियो शूट के माध्यम से भारत के लोगों तक पहुंचाना चाहते हैं। बुधवार 22 नवम्बर को ऑस्ट्रेलिया का 20 हजार किलोमीटर का सफर तय करने के लिए वह गुरुग्राम से रवाना होंगे। इस सफर को वह चार से पांच महीने में तय करेंगे। भारत से ऑस्ट्रेलिया पहुंचने तक वे 11 देशों का सफर तय करेंगे।

भारत से ऑस्ट्रेलिया की यात्रा में चार महीने में दो सदस्यों का 40 लाख रुपये खर्च आएगा। इस खर्च में गाड़ी की मैंटेनेंस से लेकर होटलों में रहने का भी खर्चा शामिल है। अनमोल ने अपनी गाड़ी के बोनट पर नमस्ते लिखवाया है, वहीं गाड़ी के चारों ओर खिड़कियों व अन्य जगहों पर उन देशों के नक्शे बनवाए हैं जिन देशों से वे गुजरेंगे।

बता दें कि अनमोल ने हाल ही में इंडिया टू लंदन का सफर भी सड़क मार्ग से पूरा किया है। उन्होंने 30 देशों के साथ 21 हजार किलोमीटर का सफर पूरा किया। अनमोल बताते हैं कि उन्होंने भारत से लंदन का जब दौरा किया था तो उन्हें ईरान में भारतीय खाना मिलने में दिक्कत आई। हालांकि पहले से जानकारी होने की वजह से वह अपने साथ भारत से खाद्य पदार्थ लेकर गए थे। पैक्ड फूड लेकर वे गए थे और होटल में रुककर वह उस खाने को खाते थे।

भारत से ऑस्ट्रेलिया के रूट को लेकर अनमोल ने बताया कि वह भारत से चलकर नेपाल में जाएंगे। नेपाल से चीन होते हुए लाओस, वियतनाम, कंबोडिया, थाईलैंड, म्यांमार, म्यांमार से वापस थाइलैंड, थाईलैंड से मलेशिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया पहुंचेंगे। इंडोनेशिया से शिपिंग के जरिए ऑस्ट्रेलिया पहुंचेंगे। अनमोल चीन में पहुंचने के लिए उत्साहित हैं।

ऑस्ट्रेलिया पहुंचने के बाद वह अपने साथी के साथ हवाई जहाज से वापस आएंगे। उनकी गाड़ी शिपिंग के माध्यम से भारत लायी जाएगी।

नगर निगम गुरुग्राम के दो कर्मचारियों की सेवाएं समाप्त, एक सस्पेंड

गुरुग्राम। लंबे समय से हड़ताल के चलते नगर निगम गुरुग्राम के तीन सफाई कर्मचारियों पर गाज गिर गई है। दो सफाई कर्मचारियों की सेवाएं समाप्त की गई हैं, वहीं एक को सस्पेंड किया गया है।

नगर निगम गुरुग्राम की ओर से जारी आदेशों में कहा गया है कि सफाई कर्मचारी रामसिंह, नरेश कुमार तथा राजेश के खिलाफ पुलिस द्वारा 14 नवंबर को मुकदमा दर्ज किया गया था। इन कर्मचारियों के आचरण की वजह से नगर निगम की छवि खराब हुई है। इसके चलते सफाई कर्मचारी रामसिंह तथा नरेश कुमार की नगर निगम से सेवाएं तुरंत प्रभाव से समाप्त कर दी गई हैं। तीसरे सफाई कर्मचारी राजेश को निलंबन आदेश जारी किए गए हैं। गौरतलब है कि गुरुग्राम के सिविल लाइन्स थाने में 14 नवंबर को दर्ज एफआईआर नंबर-248 के अनुसार नगर निगम गुरुग्राम में बतौर ठेकेदार काम करने वाले व्यक्ति ने शिकायत दी थी कि नरेश मलकट, रामसिंह, राजेश व अन्य लोग शिकायतकर्ता से प्रत्येक माह 25 हजार रुपये दबाव डालकर मांगते हैं। ना देने की सूरत में उनकी गाड़ियों को रोक देते हैं और गाड़ियों में नुकसान पहुंचाते हैं। शिकायत में कहा गया कि प्रत्येक माह के हिसाब से इनमें लगभग 3 लाख रुपये दिए जा चुके हैं। नरेश प्रधान की लगातार धमकी भरी कॉल आ रही हैं कि या तो जनवरी से अब तक के पैसे दे दो, वरना गाड़ी नहीं चलने देंगे। इसी शिकायत के आधार पर पुलिस द्वारा एफआईआर दर्ज करके कार्रवाई की गई। सफाई कर्मचारी नरेश कुमार तथा रामसिंह को गिरफ्तार किया गया।

तकनीकी सहायता देने के नाम पर यूएसए मूल के लोगों से ठगी करने वाले कॉल सेंटर का भंडाफोड़

कॉल सेंटर के मालिक/संचालक सहित 12 आरोपी गिरफ्तार

आरोपियों के कब्जा से 9 डेक्सटॉप कंप्यूटर, दो लैपटॉप, एक मोबाइल फोन व एक मॉडम बरामद

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

यूएसए मूल के लोगों को तकनीकी सहायता देने के नाम पर ठगी करने वाले कॉल सेंटर का भंडाफोड़ हुआ है। पुलिस ने मौके से 12 आरोपियों को गिरफ्तार किया। आरोपियों के कब्जा से नौ डेक्सटॉप कंप्यूटर, दो लैपटॉप, एक मोबाइल फोन व एक मॉडम बरामद किए गए। पुलिस प्रवक्ता सुभाष बोकन ने मंगलवार को बताया कि आरोपियों से और भी पूछताछ की जा रही है।

जानकारी के अनुसार 20/21 नवम्बर की रात को निरीक्षक जसवीर प्रबंधक थाना साईबर पूर्व की टीम पुलिस टीम को सूचना मिली कि मकान नंबर-एस37//19 डीएलएफ फेज-3 अवैध/ फर्जी तरीके से कॉल सेन्टर चलाकर यूएसए मूल के नागरिकों को कस्टमर सर्विस देने के नाम पर धोखाधड़ी करके ठगी की जाती है। इस सूचना पर सहायक पुलिस आयुक्त साईबर अपराध विपिन अहलावत के निर्देशन में एक रेडिंग पुलिस टीम गठित की गई। बताए गए स्थान पर चलाए जा रहे कॉल सेंटर पर रेड की गई।

रेड के दौरान इस कॉल सेंटर फर्जी/ अवैध तरीके से संचालित होना तथा विदेशी नागरिकों को तकनीकी सहायता देने के नाम पर धोखाधड़ी करके ठगी करना पाया गया। मौके से

पुलिस गिरफ्त में फर्जी कॉल सेंटर चलाने के आरोपी।

कॉल सेंटर के मालिक/ संचालक सहित कुल 12 आरोपियों को काबू किया गया। जिनकी पहचान अनंत राज वर्मा (संचालक) निवासी राजाजी पुरम, (उत्तरप्रदेश), रजत मिश्रा निवासी उत्तरप्रदेश हाल पता गांव नाथूपुर गुरुग्राम, संकल्प (मैनेजर) निवासी उत्तर-प्रदेश हाल पता गांव नाथूपुर गुरुग्राम, मयंक निवासी जिला नूंह, विशाल निवासी मध्यप्रदेश हाल पता पालम विहार (गुरुग्राम), रवि शंकर निवासी मारुति कुंज भोंडसी (गुरुग्राम), शिवम निवासी मध्य-प्रदेश हाल पता डीएलएफ फेज -3 (गुरुग्राम), पुष्पेंद्र चौहान निवासी जिला नूंह, विकास प्रकाश निवासी केरल हाल पता महावीर कैंपस छतरपुर (दक्षिण दिल्ली), विवेक सिंह निवासी उत्तर प्रदेश हाल पता गांव नाथूपुर गुरुग्राम, पुष्पेंद्र सिंह निवासी गांव नाथूपर गुरुग्राम व अजय सिंह निवासी लुधियाना (पंजाब) हाल पता डीएलएफ फेज-3 गुरुग्राम के रुप में हुई। आरोपियों के खिलाफ कई धाराओं में थाना साईबर अपराध पूर्व में केस दर्ज किया गया है। आरोपियों से पुलिस पूछताछ में पता चला कि आरोपी अनंत राज वर्मा कॉल सेंटर का संचालक है। संकल्प व रजत मिश्रा इसके कॉल सेंटर के मैनेजर हैं। वे अपने उपरोक्त साथियों/कर्मचारियों के साथ मिलकर इस कॉल सेंटर को चलाता है। उसने सभी को कस्टमर सर्विस के लिए सेलरी/कमीशन पर रखा हुआ है। आरोपी रजत और संकल्प को ठगी की राशि में से कमीशन के तौर पर 15 प्रतिशत व बाकी सभी आरोपियों को 10 प्रतिशत कमीशन के तौर पर पैसे मिलते थे।

कॉल सेंटर के मालिक /संचालक से पुलिस पूछताछ में यह भी बताया कि यह वर्ष- 2021 से अपने साथी आरोपियों के साथ मिलकर यह काम कर रहा है। उसने यूएसए के नागरिकों को ऐप्पल, माइक्रोसॉफ्ट, अमेजन, पेपल आदि की कस्टमर केयर सर्विस प्रदान देने के लिए वर्चुवल टीएफएन नंबर लिए हुए हैं। इसी के माध्यम से वे ठगी करते थे।

गुरुग्राम विवि में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 22 नवंबर से

गुरुग्राम। विवि के डिपार्टमेंट ऑफ केमिस्ट्री द्वारा विश्वविद्यालय परिसर सेक्टर-51 में रसायन विज्ञान में विविधता और समावेशिता विषय पर 22 और 23 नवंबर को दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। जिसका उद्घाटन एमएस यूनिवर्सिटी, भरतपुर, राजस्थान के कुलपति प्रो. रमेश चंद्र करेंगे। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में सीएसआईआर के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक डॉ. राम विश्वकर्मा उपस्थित रहेंगे।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि एसी-क्यूसीआई, एनएबीईटी के अध्यक्ष डॉ. जीके पांडेय होंगे। दो दिनों तक तक चलने वाले इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की अध्यक्षता गुरुग्राम विवि के कुलपति प्रो. दिनेश कुमार करेंगे। इस सम्मेलन में देश-विदेश से छात्र, शिक्षक, शोधकर्ता समेत बड़ी संख्या में प्रतिनिधि हिस्सा लेंगे एवं रसायन विज्ञान में विविधता और समावेशिता के क्षेत्र में अवसरों और चुनौतियों पर विचार-विमर्श करते हुए नई राह तलाश करेंगे।

प्रदेश अध्यक्ष नायब सैनी का गुरुग्राम में होगा भव्य अभिनंदन

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष के स्वागत के लिए होने वाले कार्यक्रम को लेकर बैठक करतीं जिला अध्यक्ष गार्गी कक्कड़।

गुरुग्राम। नवनियुक्त भाजपा प्रदेश अध्यक्ष नायब सिंह सैनी का गुरुग्राम आने पर भव्य नागरिक अभिनंदन व स्वागत किया जाएगा। जिला अध्यक्ष गार्गी कक्कड़ ने बताया कि 27 नवंबर को प्रदेश अध्यक्ष नायब सिंह सैनी गुरुग्राम आएंगे। इस संदर्भ में मंगलवार को पार्टी कार्यालय में बैठक की गई।

बैठक में जिला की गुरुग्राम, पटौदी, बादशाहपुर और सोहना विधानसभाओं के पदाधिकारियों के अलावा विभिन्न मोर्चा प्रकोष्ठ के पदाधिकारी और अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे। जिला अध्यक्ष गार्गी कक्कड़ ने बताया कि भाजपा प्रदेशाध्यक्ष नायब सैनी के अभिनंदन समारोह की तैयारियां लगभग पूरी हो चुकी हैं। 27 नवंबर को 11 बजे गुरुग्राम में आयोजित होने वाला नागरिक अभिनंदन समारोह भव्य व शानदार होगा। उन्होंने बताया कि प्रदेश अध्यक्ष श्री सैनी का गुरुग्राम आगमन पर ढोल नगाड़ों व परंपरागत रूप से स्वागत किया जाएगा। इसके लिए ज़िला भाजपा कार्यकर्ताओं के अलावा विभिन्न मोर्चों के पदाधिकारियों को अलग-अलग जिम्मेदारी दी गई हैं।

इस मौके पर जिला महामंत्री मनीष गाड़ौली, महामंत्री महेश यादव, प्रदेश शहरी निकाय सह संयोजक अनिल यादव, प्रदेश आईटी प्रभारी अरुण यादव, प्रदेश कार्यालय प्रमुख हरविंद कोहली, बेगराज यादव, रविन्द्र खटाना, अलिशा तोमर, पूनम भटनागर, प्राची खुराना, सज्जन सिंह, जिला उपाध्यक्ष हरबीर अधना, मनोज शर्मा, ज्योति डेंबला, सोनाली मित्रा, राजेश अरोड़ा, जिला सचिव सोनिया यादव, जिला मीडिया सहप्रमुख नीरज यादव, जयवीर यादव, अन्नू जिंदल, दीपक गुप्ता व पार्टी के सम्मानित पदाधिकारी मौजूद रहे।

वार्ड-15 के पार्षद संदीप सिंगला ने ली पद व गोपनियता की शपथ

पायनियर समाचार सेवा। सोहना

नगर परिषद के नवनियुक्त पार्षद संदीप सिंगला ने पद व गोपनियता की शपथ ली। शपथ लेने के बाद नवनियुक्त पार्षद ने अधिकारियों के साथ मिलकर पहले ही दिन वार्ड में लेकर जाकर जनसमस्याओं से अवगत कराया।

नगर परिषद के वार्ड-15 के नवनियुक्त पार्षद संदीप सिंगला को परिषद कार्यालय में पद व गोपनियता की शपथ चेयरपर्सन अंजू देवी ने सभागार में दिलाई। मंगलवार को सदन की बैठक को नवनियुक्त पार्षद संदीप सिंगला को पद व गोपनियता की शपथ दिलाने के लिए बुलाई गई थी। इस अवसर कार्यकारी अधिकारी संदीप मलिक, एक्सइएन विक्की सिंह, पार्षद राकेश रोहिल्ला, हरिश नन्दा, निरज सिंगला, परमिन्द्र यादव

सोहना नगर परिषद के वार्ड 15 के नवनियुक्त पार्षद संदीप सिंगला पद व गोपनियता की शपथ लेते हुए।

समेत अन्य पार्षद मौजूद थे। संदीप सिंगला ने शपथ लेने के साथ ही समारोह में मौजूद वार्डवासियों को जनसमस्याओं का समय पर सामधान करने का आश्वाशन दिया। उन्होने कहा कि परिषद अधिकारियों और सदन का सहयोग लेते हुए वार्ड में विकास कार्य कराएं जाएंगे। विकास कार्य बिना किसी भेदभाव और बिना देरी के कराएं जाएंगे।

अधिकारियों के साथ किया वार्ड का दौरा : नवनियुक्त पार्षद संदीप सिंगला ने पहले दि नही वार्ड-15 में परिषद के अधिकारियों को साथ ले जाकर जनसमस्याओं से अवगत कराया। अधिकारियों से वार्ड में मिली सफाई, खराब स्ट्रीट लाइट, टूटी फर्श व चैम्बर का समाधान जल्द से जल्द कराने का आश्वासन मौजूद वार्ड वासियों के समक्ष लिया गया।

ग्रामीण महिलाओं ने खेलकूद प्रतियोगिता में प्रतिभा का किया शानदार प्रदर्शन

पायनियर समाचार सेवा। सोहना

एसडीएम प्रदीप सिंह ने कहा कि ग्रामीण महिलाओं को इस प्रकार की प्रतियोगिताओं में अपने अंदर छूपी प्रतिभा को दिखाने तथा घर से बाहर निकलते हुए खेलकूद प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने का अवसर मिलता है। ग्रामीण महिलाओं की इस प्रतियोगिता की विजेताओं को नकद राशि का पुरस्कार दिया गया।

मंगलवार को स्थानीय देवीलाल खेल स्टेडियम में महिला एवं बाल विकास परियोजना विभाग द्वारा ग्रामीण महिलाओं की खंड स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता कराई। इस अवसर पर एसडीएम प्रदीप सिंह ने महिलाओं की मटका दौड़ को हरी झंडी दिखाते हुए प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। इस अवसर पर सीडीपीओ सर्वेश कुमारी, कार्यवाहक पीओ मीनाक्षी समेत सुपरवाइजर रेखा सोनी, अनिता देवी, अंजू देवी, संतोष आदि सभी आंगनबाड़ी केन्द्र से

सोहना के देवीलाल खेल स्टेडियम में मंगलवार को हुई ग्रामीण महिलाओं की विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिता में महिलाएं अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन करते हुए।

कार्यकर्ता, सहायक कर्मचारी मौजूद थी। प्रतियोगिता में छह खेलों को शामिल किया। जिसमें साइकिल रेस, मटका दौड़, आलू दौड़, 100, 300 और 400 मीटर की दौड़ शामिल थी। मटका दौड़ में सुमन प्रथम, पूनम द्वितीय व ज्योति ने तीसरा स्थान प्राप्त किय। 100 मीटर दौड़ में ललिता प्रथम, मोनिका द्वितीय व अनिता तीसरे नंबर पर रही। 300 मीटर दौड़ में नेहा प्रथम, खुशी द्वितीय व अमिशा ने तीसरे नंबर पर रही। 400 मीटर दौड़ में ज्योति प्रथम, अनु द्वितीय व मनीषा ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। साइकिल दौड़ में मधु प्रथम, मोनिका द्वितीय व ज्योति तीसरे नंबर पर ही। आलू-चम्मच दौड़ में निर्मला प्रथम, रेखा द्वितीय व प्रीति तीसरे स्थान पर रही। प्रतियोगिता की विजय प्राप्त करने पर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली महिला को 2100, द्वितीय स्थान पर रहने वाली को 1100 तथा तीसरे नंबर की विजेता को 750 रुपये का नकद इनाम दिया गया।

ग्रामीण महिलाओं को अच्छा अवसर

इस अवसर पर मुख्य अतिथि रहे एसडीएम प्रदीप सिंह ने कहा कि ग्रामीण महिलाओं का जीवन अपने सामान्य कामकाज करते-करते हुए निकल जाता है। लेकिन सरकार की इस योजना से ग्रामीण महिलाओं को अपने अंदर छूपी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का अवसर मिलता है। जिससे ग्रामीण महिलाओं को घर से बाहर की दुनिया का देखने और अपने साहस का प्रदर्शन करने का सुन्दर अवसर मिलता है। आज घरेलू कामकाजी महिलाएं भी बहुत ही प्रतिभाशाली होती है। जैसे-जैसे महिलाओं को अवसर मिले। उन्हे अपनी प्रतिभा को दिखाने के लिए आगे आना चाहिए।

जीएल शर्मा ने पीएम मोदी से मिलकर किया साधुवाद

पीएम मोदी से मुलाकात करते जीएल शर्मा।

गुरुग्राम। हरियाणा भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं डेयरी सहकारी विकास प्रसंघ के पूर्व चेयरमैन जीएल शर्मा की राजस्थान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात हुई। राजस्थान के नागौर में एक चुनावी सभा के बाद यह मुलाकात हुई।

जीएल शर्मा ने कहा कि भाजपा विकसित भारत का संकल्प लेकर आगे बढ़ रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सशक्त एवं कुशल नेतृत्व में भाजपा सरकार की अब तक की उपलब्धियां बेमिसाल है। उन्होंने कहा कि आज विकास की जिस डगर पर देश आगे बढ़ रहा है, उसे निरंतर बनाए रखने के लिए मोदी जैसे सशक्त एवं कुशल नेतृत्व की देश को जरूरत है। निश्चित ही देश के मौजूदा परिदृश्य के लिहाज से देश की 140 करोड़ जनता के सामने भाजपा और नरेंद्र मोदी से बेहतर विकल्प कोई नहीं है। नागौर शहरी जिला प्रभारी के नाते जीएल शर्मा ने रैली में पहुंचने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का अपनी पूरी टीम के साथ गर्मजोशी से स्वागत किया। अभिनंदन की औपचारिकता के दौरान ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जीएल शर्मा से सीधा संवाद कर राजनीतिक चर्चा भी की। मोदी से मुलाकात के बाद जीएल शर्मा ने कहा कि वह खुशी से अभीभूत हैं। उनके लिए इससे बड़ा गौरव का कोई पल नहीं हो सकता।

भीम नगर में नवीन गोयल ने चंद घंटे में सफाई कराकर 25 ट्रॉली कूड़ा निकलवाया

एक महीने की स्वच्छता अभियान की मुहिम के तहत की गई सफाई

गुरुग्राम। स्वच्छता रैंकिंग में गुरुग्राम को टॉप-10 शहरों की सूची में लाने के लिए एक महीने का स्वच्छता टास्क लेकर पर्यावरण संरक्षण विभाग भाजपा हरियाणा प्रमुख एवं एक भारत श्रेष्ठ भारत कमेटी के प्रदेश सह-संयोजक नवीन गोयल काम कर रहे हैं। इसी कड़ी में उन्होंने भीम नगर में सफाई अभियान चलाया। इस दौरान वहां पर सफाई करवाकर 25 ट्रॉली कूड़ा एकत्रित किया गया।

भीम नगर की ऑटो मार्केट में अपने साथियों के साथ नवीन गोयल ने स्वयं झाड़ू उठाई और क्षेत्र में सफाई का काम शुरू किया। उन्होंने क्षेत्र के लोगों को भी अपने आसपास सफाई करने का आह्वान किया। इस अवसर पर समाजसेवी लेखराज चावला, कृष्ण मंदिर भीम नगर के महासचिव किशोरी लाल डुडेजा, भारत भूषण दीवान, मार्केट के प्रधान सतीश बदलिया, यशपाल, धर्मेंद्र, संजय, बालाजी मोटर्स ऑनर आदि का सहयोग रहा।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल, केंद्रीय सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) राव इंद्रजीत सिंह, भाजपा केंद्रीय संसदीय बोर्ड व केंद्रीय चुनाव समिति की सदस्या डा. सुधा यादव, भाजपा के राष्ट्रीय सचिव ओमप्रकाश धनखड़, हरियाणा भाजपा प्रदेश अध्यक्ष नायब सिंह सैनी के मार्गदर्शन से यह कार्य किया जा रहा है। नवीन गोयल ने कहा कि स्वच्छता के लिए हमें जागरुक होना चाहिए। गंदगी से पर्यावरण खराब होता है। गंदगी से बीमारी फैलती है। सफाई हर स्तर पर

गुरुग्राम के भीम नगर ऑटो मार्केट में सफाई अभियान के दौरान सफाई करते नवीन गोयल व साथी।

जरूरी है। घर और आसपास स्वच्छता रखेंगे तो वातावरण भी सुरक्षित रहेगा। नवीन गोयल ने कहा कि कोरोना काल के समय में स्वच्छता में महत्वपूर्ण हाथ धोने के कार्य को हम भूलते जा रहे हैं। इसके प्रति हमें जागरुक होना चाहिए। दिन में कई बार हाथ धोने चाहिए हों। आंकड़ों के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों, शहरी मलिन बस्तियों, आपदा-संभावित क्षेत्रों और कम आय वाले देशों में रहने वाले लोग सबसे अधिक असुरक्षित और सबसे अधिक प्रभावित हैं। बच्चों पर असुरक्षित जल, स्वच्छता और स्वच्छता के परिणाम घातक हो सकते हैं। नवीन गोयल ने कहा कि अपने शहर की सफाई के लिए हर व्यक्ति को आगे आना होगा। कूड़े का निस्तारण भी सही ढंग से हो सकता है। कूड़ा इधर-उधर फेंकने की बजाय निर्धारित स्थल पर ही डालें। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा चलाए गए स्वच्छता अभियान के बाद देश में स्वच्छता के प्रति जागृति आई है। इस जागृति से ही हमें काम करना चाहिए।

ताइवान एक्सीलेंस गेमिंग कप 2023 (टीईजीसी) का भव्य समापन

गेमिंग उत्कृष्टता और समावेशिता के 10 साल का जश्न मनाया गया

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

गेमिंग जगत ने शनिवार को वह ऐतिहासिक क्षण देखा जब गुड़गांव के एंबियंस मॉल में ताइवान एक्सीलेंस गेमिंग कप (टीईजीसी) 2023 ने अपनी रोमांचक 10वीं वर्षगांठ का ग्रैंड फिनाले मनाया। भारत की सबसे लंबे समय तक चलने वाली ई-स्पोर्ट्स चैंपियनशिप अब सामान्य समारोहों की सीमाओं को पार कर एक दशक की गेमिंग उत्कृष्टता का विशाल उत्सव बन गया है। समावेशिता पहल में अग्रणी रहते हुए टीईजीसी ने इस यात्रा के दौरान प्रसिद्ध गेमिंग इनफ्लुएंसर्स को एकजुट किया और आज ताइवान के बेहतरीन गेमिंग उत्पादों का प्रदर्शन मंच बन गया है। यात्रा के इस पड़ाव पर टीईजीसी एक ऐसा मंच है जो व्यक्तियों और समुदायों दोनों पर गेमिंग के सकारात्मक प्रभाव को स्वीकार कर उसका स्वागत करता है। गेमिंग और तंदुरुस्ती के लिए एक

व्यापक दृष्टिकोण के बीच संबंध को प्राथमिकता देते हुए यह मंच केवल कौशल और प्रतिस्पर्धा से आगे बढ़ता है और सक्रिय रूप से दुनिया भर के उत्साही लोगों के बीच एक स्वस्थ एवं समावेशी जीवनशैली को प्रोत्साहित करता है।

टीईजीसी 2023 क्वालिफायर जो 28 सितंबर से 22 अक्टूबर तक आयोजित हुआ, उसमें अंतिम चैंपियंस के नियमित खिलाड़ियों को आराम दिया गया था। ग्रैंड फिनाले में, विजेता टीमों के बीच पुरस्कार वितरित किए गए, जिनमें लीगेसी ई-स्पोर्ट्स, काउंटर स्ट्राइक 2 के लिए गॉड्स रेन, कॉल ऑफ ड्यूटी मोबाइल के लिए टीडब्ल्यूओबी और गॉडलाइक ई-स्पोर्ट्स शामिल थे। इस साल की चैंपियनशिप को अग्रणी ताइवानी ब्रांडों से भी पर्याप्त समर्थन मिला, जो गेमिंग और लाइफस्टाइल उत्पादों में अपनी उत्कृष्टता के लिए जाने जाते हैं। इनमें एआईएफए, एनीज वे, एओआरयूएस, एरोमेज, साइबरपावर, डी-लिंक, डीसी मास्क, डर्मा एंजेल, जी. स्किल, इन विन, आईपीईवीओ, एमएसआई, प्रीडेटर, रिपब्लिक ऑफ गेमर्स, थर्मलटेक, टोकुयो, ट्रांसेंड, विक्टर, एक्सपीजी, ज़ोवी, ज़िक्सेल आदि शामिल हैं। प्रतिष्ठित ग्रैंड फिनाले कार्यक्रम में स्नैक्स और क्रुतिका जैसे गेमिंग उद्योग के सर्वाधिक प्रभावशाली लोग मौजूद थे। उपस्थित लोगों को इन प्रमुख हस्तियों के साथ बातचीत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और यह इवेंट उनके लिए अविस्मरणीय बन गया। इस वर्ष एक उल्लेखनीय पहल के तौर पर टीईजीसी ने भारत की शीर्ष महिला गेमर्स के लिए डिजाइन की गई एक अभूतपूर्व प्रतियोगिता शुरू की।

प्रशिक्षण शिविर में विभिन्न महाविद्यालय के प्रतिभागियों ने सीखीं गतिविधियां

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

एसडी कॉलेज में पांच दिवसीय जिला स्तरीय यूथ रेडक्रॉस प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ

हरियाणा राज्य रेडक्रॉस सोसाइटी चंडीगढ़ के महासचिव डॉ. मुकेश अग्रवाल के निर्देशन तथा जिला उपायुक्त एवं जिला रेडक्रॉस की चेयरपर्सन नेहा सिंह के मार्गदर्शन में जिला रेडक्रॉस सोसाइटी पलवल द्वारा 21 से 25 नवंबर तक गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म महाविद्यालय पलवल में पांच दिवसीय जिला स्तरीय यूथ रेडक्रॉस प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण शिविर में जिला के विभिन्न महाविद्यालयों के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया है।

मंगलवार को इस जिला स्तरीय यूथ रेडक्रॉस प्रशिक्षण शिविर का विधिवत शुभारंभ महाविद्यालय के प्रबंधक एवं समिति के प्रधान अधिवक्ता महेंद्र कालरा ने रेडक्रॉस झंडा फहराकर रेडक्रॉस के संस्थापक सर जीन हैनरी ड्यूना की फोटो पर पुष्प अर्पित करते हुए सरस्वती मां की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित करके किया। उन्होंने कहा कि किसी भी देश का भविष्य युवाओं के हाथों में होता है। जिस देश का युवा जागरूक, सुदृढ़ एवं शक्तिशाली होगा, वह देश निश्चित रूप से तरक्की करेगा।

रेडक्रॉस सोसाइटी एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, जो स्वास्थ्य, सेवा, मित्रता के साथ-साथ मानवता, भेदभाव रहित, सार्वभौमिकता, स्वतंत्र, निष्पक्षता, तटस्थता, एकता, स्वेच्छिक सेवाभाव से तत्पर आमजन में जागरूकता के भाव जगाती है। शिविर के शुभारंभ अवसर पर जिला रेडक्रॉस सोसाइटी पलवल के सचिव वाजिद अली ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया तथा दिन प्रतिदिन शिविर में आयोजित होने वाली गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने रेडक्रॉस इतिहास, यूथ रेडक्रॉस इतिहास की विस्तृत जानकारी दी। जिला प्रशिक्षण अधिकारी पलवल नीतू सिंह ने मंच संचालन किया तथा उपस्थित प्रतिभागियों को रेडक्रॉस से जुड़ने तथा सभी की सहायता करने के लिए शपथ दिलाई। जिला प्रशिक्षण अधिकारी ने सभी प्रतिभागियों को रेडक्रॉस के चिन्ह के प्रयोग, दुरुपयोग के बारे में जागरूक किया। उन्होंने बताया कि इस चिन्ह का प्रयोग रेडक्रॉस गतिविधियों से जुड़ा समाज, स्वयं सेवक एवं आर्मी मेडिकल कोर कर सकती है, बाकी अन्य विभाग अपने निर्धारित चिन्ह का प्रयोग करें।

महाविद्यालय की प्रधानाचार्य प्रतिभा सिंगला ने मुख्य अतिथि का धन्यवाद किया। समाजसेवी बिक्रम सिंह यात्री ने सभी को स्वयंसेवक की गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। शिविर के प्रथम दिन के आयोजन में महाविद्यालयों के विभिन्न अध्यापकों सोनिया, रुचि, ओमप्रकाश, जेपी कौशिक, जिला रेडक्रॉस सोसाइटी पलवल की लेखाकार अंजली भयाना, भोजपाल सहरावत, हेमवती, नितिन कुमार, पवन, हरबंश, उषा आदि का अहम योगदान रहा।

लोक नृत्य में श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय की टीम रही प्रथम

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

दो दिवसीय जिला युवा महोत्सव का हुआ समापन, विधायक जगदीश नायर ने विजेताओं को किया सम्मानित

युवा अधिकारिता एवं उद्यमिता विभाग हरियाणा और जिला प्रशासन पलवल द्वारा श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय दूधोला में आयोजित दो दिवसीय जिला युवा महोत्सव मंगलवार को संपन्न हो गया। सोमवार को समारोह का शुभारंभ किया गया था। सबसे पहले मां सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किए। प्रधानाचार्य भगत सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की एवं विधायक जगदीश नायर होडल, जितेंद्र कुमार सीईओ डीआरडीए जिला परिषद पलवल को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

उन्होंने कार्यक्रम में बेटियों की प्रतिभा की सराहना करते हुए कहा कि समारोह में कार्यक्रमों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि आज बेटियों ने 50 प्रतिशत नहीं, बल्कि 100 प्रतिशत पर ही कब्जा कर लिया है। उन्होंने बेटियों द्वारा प्रस्तुत किए गए सभी कार्यक्रमों की जमकर प्रशंसा की। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वह समाज व देश के लिए भी काम करें। उसके बाद उन्होंने विजेता टीम एवं अन्य उत्कृष्ट कार्य करने वालों को सम्मानित किया।

कार्यक्रम में विभिन्न संस्थान/विभाग से आए हुए निर्णायक मंडल के सदस्य, यूथ कोऑर्डिनेटर ऑफिसर सुनीता, आईटीआई पलवल से उदय सिंह वर्ग अनुदेशक, श्याम वर्ग अनुदेशक, आईटीआई हथीन से इंद्राज, आईटीआई कुशक से मनोज वर्ग अनुदेशक, आईटीआई पलवल के समस्त स्टाफ ने अपना सहयोग दिया। लोक नृत्य समूह में श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय की टीम प्रथम रही, ओम स्कूल रसूलपुर की टीम द्वितीय स्थान पर एवं गवर्नमेंट आईटीआई पलवल की टीम तृतीय स्थान पर रही। लोक नृत्य एकल में करिश्मा प्रथम, योग्यता द्वितीय एवं चांदनी तृतीय स्थान पर रही। लोकगीत एकल में हरीश प्रथम, सोहेल द्वितीय एवं कृष्ण तीसरे स्थान पर रहे।

कहानी लेखन में संजय प्रथम, अजीत द्वितीय एवं सौरव डागर तीसरे स्थान पर रहे। पोस्टर मेकिंग में प्रिया प्रथम, सोनिया द्वितीय एवं अंकित तीसरे स्थान पर रहे। भाषण प्रतियोगिता में पूजा रावत प्रथम, नफीस खान द्वितीय एवं इंद्रावती तीसरे स्थान पर रही।

> **सरकार** एवं विभाग के आदेश अनुसार जिला यूथ फेस्टिवल का आयोजन श्री विश्वकर्मा विश्वविद्यालय दूधोला में किया गया। जिसमें छात्र-छात्राओं ने अपने हुनर को प्रदर्शित किया। भविष्य में भी इस प्रकार के आयोजन समयानुसार किए जाते रहेंगे।
>
> **-भगत सिंह, प्रधानाचार्य कम जिला यूथ कोऑर्डिनेटर पलवल**

पलवल के विद्यार्थी 16,500 फीट ऊंची रेनांक हिल को फतह करेंगे

जिला शिक्षा अधिकारी अशोक कुमार बघेल सहित शिक्षकों ने दीं शुभकामनाएं

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

शिक्षा विभाग हरियाणा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए तथा विभिन्न कौशल निर्माण में समय-समय पर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करता रहता है।

पर्वतारोहण साहसिक कार्य और पहाड़ों से संबंधित गतिविधियों में रुचि रखने वाले सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों के लिए प्रदेश सरकार ने विशेष प्रशिक्षण दिलाने के लिए 28 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इसके लिए समग्र शिक्षा के तहत विद्यार्थियों को सिक्कम की 16,500 फीट ऊंची रेनांक हिल पर ट्रैकिंग करते हुए ले जाया जाएगा। इस प्रशिक्षण अभियान में प्रदेशभर से 44 विद्यार्थी हिस्सा लेंगे।

इस अभियान में जिला पलवल के पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पिंगोड की छात्रा शिवानी व पीएम श्री राजकीय बाल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पलवल के छात्र दिपेश का चयन किया गया है। स्पेशल माउंट ट्रेनिंग कोर्स के तहत हिमालय माउंटेनिंग इंस्टीट्यूट के सहयोग से उनको रेनोक हिल पर पर ट्रैकिंग विधि द्वारा जाया जाएगा। प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न गतिविधियों का आयोजन भी किया जाएगा।

रक्षा मंत्रालय भारत सरकार की ओर से संचालित हिमालय माउंटेनिंग ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट के सहयोग से किया जा रहा है। इस दौरान विद्यार्थियों को अधिक ऊंचाई पर प्राकृतिक अध्ययन, साहसिक प्रशिक्षण, ग्लेशियर ट्रैकिंग, रोप क्लाइंबिंग, फ्रंट प्वाइंट क्लाइंबिंग, आईस क्लाइंबिंग, क्रेवानस रेस्क्यू, चोटी पर चढ़ना आदि आपदा प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों के बारे में भी प्रशिक्षण दिया जाएगा।

यह अभियान 21 नवंबर से 18 दिसंबर तक चलेगा। जिला शिक्षा अधिकारी पलवल अशोक बघेल, जिला समन्वयक अधिकारी सुखबीर तंवर, जिला सह समन्वयक अधिकारी उमेश राणा, पीतांबर, प्रधानाचार्य नानक चंद, धर्मवीर रावत, यूथ एंड इको क्लब के कोऑर्डिनेटर योगेश सौरोत, शारदा पाराशर, राम अवतार ने मंगलमय यात्रा के लिए विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दीं।

महिला थाना से पुलिस कर्मचारी की बाइक चोरी

पलवल में खड़ी करके डायल 112 की ड्यूटी पर गया था, लौटा तो गायब मिली

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

वाहन चोरों के हौसले इतने बुलंद हैं कि पुलिस थानों में खड़े वाहनों को भी निशाना बनाने से नहीं चूक रहे हैं। ऐसा ही एक मामला जिले के महिला थाने से सामने आया है। थाने के अंदर खड़ी पुलिसकर्मी की बाइक को चोर चुराकर ले गए। कैंप थाना पुलिस ने पुलिसकर्मी की शिकायत पर वाहन चोर के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर तलाश शुरू कर दी है।

कैंप थाना प्रभारी सत्यनारायण के अनुसार, पलवल के अग्रसेन विहार निवासी हीरालाल शर्मा ने शिकायत में कहा है कि वह डायल 112 इमरजेंसी रिस्पांस व्हीकल पर बतौर एसएस तैनात हैं। शाम करीब चार बजे वह अपनी ड्यूटी जाने के लिए आया तो उसने अपनी बाइक महिला थाना पलवल के अंदर खड़ी कर दी और डायल 112 पर चला गया। जब शाम के करीब सात बजे वह थाने गया तो बाइक थाने में नहीं थी। उसने थाने में तैनात गार्ड से पूछा, लेकिन जब कोई सुराग नहीं लगा तो पता चला कि कोई अज्ञात व्यक्ति उसकी बाइक को चुरा ले गया। कैंप थाना पुलिस ने शिकायत के आधार पर मुकदमा दर्ज कर बाइक की तलाश शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि आरोपी की पहचान के प्रयास किए जा रहे हैं। जल्द ही उसे गिरफ्तार कर पुलिसकर्मी की बाइक को बरामद कर आरोपी को जेल की सलाखों के पीछे भेज दिया जाएगा।

श्री खाटू श्याम जागरण व रथ यात्रा का होगा आयोजन

फरीदाबाद। श्री खाटू श्याम जी का भव्य जागरण एवं भव्य निशान व रथ यात्रा का 23 नवंबर को आयोजन किया जाएगा। यह निशान यात्रा एवं रथ यात्रा सूरदास पंचमुखी बालाजी हनुमान मंदिर तिलपत से प्रारंभ होकर गुरु गोविंद सिंह नगर पर समापन होगी। जो भक्त इस भव्य निशान यात्रा में निशान उठाना चाहते हैं वे अपना निशाना बुक कराएं। श्री खाटू श्याम सेवा मंडल के बांके बिहारी गुप्ता ने बताया कि प्रतिवर्ष हमारा संगठन समाज के सहयोग से श्री खाटू श्याम जी का भव्य जागरण एवं भव्य निशान व रथ यात्रा का आयोजन करते हैं। जिसमें हजारों श्रद्धालु धर्म लाभ उठाते हैं। देश के ख्याति प्राप्त गायक अपनी मधुर आवाज में श्री खाटू श्याम के भजन से भक्ति रस बरसाते हैं। इस्माइलपुर गुरूद्वारे के नजदीक गुरु गोविंद सिंह नगर में 24 नवंबर को श्री खाटू श्याम जी का भव्य जागरण शाम को आठ बजे से प्रारंभ होगा।

पेंटिंग और पोस्टर बनाकर गीता का महत्व बताया

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

शिक्षा विभाग के आदेशानुसार श्रीमद्भगवद्गीता जयंती के अंतर्गत राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सराय ख्वाजा फरीदाबाद की जूनियर रेडक्रॉस, गाइड्स और सेंट जॉन एंबुलेंस ब्रिगेड ने प्राचार्य रविंद्र कुमार मनचंदा की अध्यक्षता में पेंटिंग और पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मनचंदा ने कहा कि विद्यालय की प्राध्यापिका गीता ने छात्राओं और छात्रों की विद्यालय स्तर की श्रीमद्भगवद्गीता आधारित पोस्टर बनाओ और पेंटिंग प्रतियोगिता का संचालन किया।

प्राचार्य ने कहा कि विद्यालय में शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार श्लोकोच्चारण, संवाद, प्रश्नोत्तरी, पोस्टर आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना है। विद्यालय के विद्यार्थी सभी गतिविधियों में प्रतिभागिता कर रहे हैं। सराय ख्वाजा फरीदाबाद विद्यालय के विद्यार्थी एवम समस्त विद्यालय परिवार श्लोकोच्चारण, निबंध लेखन तथा संवाद द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता की शिक्षाओं को जीवन शैली में आत्मसात करने के लिए संकल्पित हैं। प्राचार्य ने कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता में हमें जीवन की सभी समस्याओं का समाधान मिलता है। श्रीमद्भगवद्गीता जीवन दर्शन है तथा हमें आदर्श जीवन जीने के लिए मार्ग प्रशस्त करती है। श्रीमद्भगवद्गीता

वर्तमान में धर्म से अधिक जीवन के प्रति अपने दार्शनिक दृष्टिकोण को लेकर भारत में ही नहीं विदेशों में भी जनमानस का ध्यान अपनी और आकर्षित कर रही है। निष्काम कर्म का गीता का संदेश प्रबंधन गुरुओं को भी लुभा रहा है। गीता विश्व के सभी धर्मों की सबसे प्रसिद्ध पुस्तकों में सम्मिलित है। उन्होंने कहा कि भारत वर्ष के ऋषियों ने गहन विचार के पश्चात जिस ज्ञान को आत्मसात किया, उसे उन्होंने वेदों का नाम दिया। इन्हीं वेदों का यह भाग उपनिषद कहलाता है। मानव जीवन की विशेषता मानव को प्राप्त बौद्धिक शक्ति है और उपनिषदों में निहित ज्ञान मानव की बौद्धिकता की उच्चतम अवस्था तो है ही, अपितु बुद्धि की सीमाओं के परे मनुष्य क्या अनुभव कर सकता है, उसकी एक झलक भी दिखा देता है। हमें दैनिक जीवन में निस्वार्थ भाव में कर्म करते रहना चाहिए।

गो सेवा धाम में बनेगा भारत का पहला बहुमंजिला अस्पताल

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

गोपाष्टमी पर मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने रखी अस्पताल की नींव, गौ चिकित्सा को मिलेगा बढ़ावा

कोटवन करमन बॉर्डर पर गो सेवा धाम में देवी चित्रलेखाजी द्वारा चल रहे सप्तदिवसीय गोपाष्टमी महोत्सव एवं श्रीमद् भागवत कथा के तृती दिवस पर मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने भारत के पहले सर्व सुविधायुक्त बहुमंजिला गौ अस्पताल का भूमि पूजन किया।

भूमि पूजन के अवसर पर मुख्यमंत्री के साथ अन्य संत एवं गणमान्य व्यक्ति चिदानंद सरस्वती, संपूर्णानंद स्वामी आचार्य लोकेश मुनिजी, केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर और स्वामी ज्ञानानंद मौजूद रहे। दिन की शुरुआत भजन एवं गौ पूजन के साथ हुई, दोपहर बाद भूमि पूजन का शुभ कार्य संपन्न हुआ। देवी चित्रलेखाजी ने श्रीमद् भागवत कथा के माध्यम से बताया कि गोपाष्टमी का त्योहार हर घर में बड़ी धूमधाम से मानना चाहिए, क्योंकि ये गौमाताओं का त्योहार है और जहां गायों की सेवा होती है, वहां गोपाल खुश रहते हैं। गोपाष्टमी पर्व का सनातन धर्म में बड़ा ही धार्मिक महत्व है। इसी दिन भगवान कृष्ण ने गौमाता की पूजा की और गौचारण लीला का शुभारंभ किया। गोपाष्टमी के इस पवित्र दिन पर गायों और बछड़ों को सजाया जाता है और उनकी विधि-विधान के साथ पूजा की जाती है। यह पर्व मुख्य रूप से ब्रज में मनाया जाता है। गोपाष्टमी कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाई जाती है। गोपाष्टमी के दिन गौ महा भोज का आयोजन बड़ी धूम धाम से किया गया, जिसमें यहां भर्ती गौवंश के लिए स्वादिष्ट व्यंजन जैसे मीठा दलिया, ताजा गन्ना, रोटी, हरी सब्जियां खिलाई गयीं और यही खाद्य पदार्थ आस पास की गौशालाओं में रह रहे सभी गौवंश हेतु पहुंचाए गए।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि ऐसी गौमाता की सेवा शायद ही कहीं हो रही होगी। देवी चित्रलेखा का यह विचार बहुत अच्छा है। सभी मनुष्यों के लिए अस्पताल बनाते हैं, पर चित्रलेखा ने गौमाता और सभी जीवों के बारे में सोचा, उनकी पीड़ा, दुख दर्द को समझा और बहुमंजिला गौ अस्पताल बनाने का निर्णय लिया। हमें बहुत अच्छा लगा कि देवी चित्रलेखा ने सर्व सुसज्जित गौमाता और जीवों को अपने पास आश्रय देने का फैसला लिया और पिछले 10 वर्षों से गौमाता की सेवा करती आ रही हैं। इस अस्पताल में हजारों बीमार गौवंश और अन्य जीवों के लिए उच्च-स्तरीय चिकित्सा सेवाएं होंगी। यह आयोजन जो सामाजिक सेवाओं और आध्यात्मिक उन्नति को मिलाकर गौ संवर्धन की ओर कदम बढ़ा रहा है। गौ सेवा धाम अस्पातल पिछले 10 वर्षों से गौमाताओं के साथ साथ सभी बेजुबान जीवों की सेवा करता आ रहा है। इस सेवा को और आधुनिक बनाने के लिए इस बहुमंजिला अस्पताल की नींव रखी गयी।

संक्षिप्त समाचार

केसी प्रशांत लैब ने लगाया स्वास्थ्य जांच शिविर

पलवल। हुडा सेक्टर-2 पलवल में केसी प्रशांत लैब की तरफ से मात्र 100 रुपये में सभी प्रकार के टेस्ट का शिविर लगाया गया। जिसमें 17 लोगों ने इसका लाभ उठाया। केसी प्रशांत लैब के संचालक डॉ. प्रशांत गुप्ता ने बताया कि उनका इन शिविर को लगाने का मुख्य उद्देश्य पलवल के लोगों को उनके स्वास्थय के प्रति जागरूक करना है, क्योंकि आजकल कई प्रकार की बीमारियां इंसान को घेर रही है। इसलिए समय रहते अगर इन बीमारियों को पता चल जाए तो इलाज संभव है। इससे पहले रविवार को स्वामी श्रद्धानंद पार्क न्यू कॉलोनी में भी शिविर लगाया गया था। जहां लोगों ने इसका भरपूर लाभ उठाया। डॉ. प्रशांत गुप्ता ने बताया कि हम केवल टेस्ट ही नहीं कर रहे, बल्कि टेस्ट की रिपोर्ट तैयार करके मरीज के घर तक भी पहुंचा रहे हैं। ताकि मरीज को अपने शरीर में होने वाले नुकसान का समय पर पता चल सके।

चालक को बंधक बनाकर लूटी कैब

पलवल। ओला की कार बुकिंग पर लाकर ड्राइवर के हाथ-पैर रस्सी से बांधकर खेतों में फेंककर गाड़ी को लूटकर ले जाने का मामला प्रकाश में आया है। सदर थाना पुलिस ने ड्राइवर की शिकायत पर अज्ञात लुटेरों के खिलाफ केस दर्ज कर तलाश शुरू कर दी है। सदर थाना प्रभारी छत्रपाल के अनुसार, जिला खैरथल राजस्थान के तिजारा निवासी मुश्ताक ने दी शिकायत में कहा है वह गाड़ी पर ड्राइवर की नौकरी करता है। कार ओला कंपनी के साथ लगी हुई है। 19 नवंबर को वह अपनी टैक्सी में मानेसर से बुकिंग लेकर पलवल के बामनीखेड़ा गांव के लिए चला था। गाड़ी में तीन व्यक्ति बैठे हुए थे। केएमपी एक्सप्रेस-वे पर पलवल टोल से पहले ही उसके हाथ-पैर बांध दिये और एक व्यक्ति गाड़ी को चलाने लगा व दो व्यक्ति पीछे उसे नीचे दबाकर बैठ गए। केएमपी का टोल क्रॉस होने के बाद आरोपी गाड़ी को सैलोटी गांव के जंगल में ले गए और वहां पर खेतों में उसे फेंककर गाड़ी को वहां से लेकर चले गए और उसके मोबाइल फोन को भी लूट कर ले गए। उसने जैसे-तैसे बंधन मुक्त होकर इसकी सूचना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने मौका मुआयना किया और उससे लिखित शिकायत मांगी, लेकिन उसने अपने परिजनों के आने पर शिकायत देने की बात कही। इसके बाद 20 नवंबर को उसने अपने परिजनों के आने के बाद पुलिस को शिकायत दी। देर शाम मुकदमा दर्ज कर लूटी हुई कार व मोबाइल एवं आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है। पुलिस कहना है कि आरोपियों की तलाश में पुलिस की टीम गठित कर दी गई है, जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर गाड़ी व मोबाइल को बरामद कर लिया जाएगा।

कल रोजगार कार्यालय में लगेगा मेला

पलवल। जिला रोजगार अधिकारी शक्तिपाल ने बताया कि रोजगार कार्यालय पलवल में 23 नवंबर को सुबह 10 बजे से दोपहर एक बजे तक एक रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा। जिसमें बायोमेड हेल्थ केयर प्राइवेट लिमिटेड पृथला, टोकाई इंपिरियल रबर प्राइवेट लिमिटेड, आकाश पैक टेक प्राइवेट लिमिटेड, महारानी पेंट्स, फियोनिक्स कांटेक्ट प्राइवेट लिमिटेड जैसी विभिन्न कंपनियां भाग लेंगी। उन्होंने बताया कि इस रोजगार मेले में दसवीं, बारहवीं, मैकेनिकल इंजीनियरिंग डिप्लोमा, आईटीआई फिटर, वेल्डर आदि श्रेणी के प्रार्थी अपने रिज्यूम व फोटोग्राफ की दो-दो प्रतियां साथ लेकर सुबह 10 बजे जिला रोजगार कार्यालय पलवल में उपस्थित होवें। उन्होंने प्रार्थियों से अपील करते हुए कहा है कि वे निर्धारित तिथि व समय पर अपने सभी आवश्यक दस्तावेजों को साथ लेकर आएं और इस रोजगार मेले का अधिक से अधिक लाभ उठाएं।

सोने के लिए चादर न देने पर की थी युवक की हत्या

फरीदाबाद। गत 10 नवंबर को तिकोना पार्क में हुई युवक की हत्या का खुलासा करते हुए पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी ने बताया कि वह शराब के नशे में सो रहा था। उसने अपने दोस्त से चादर मांगी और उसने देने से किया इनकार किया तो उसने उसे पीट-पीटकर मारा डाला। पुलिस ने उसे तीन दिन के रिमांड पर लिया है। आरोपी की पहचान अर्जुन के रूप में हुई है। अर्जुन पर आरोप है कि उसने अपने ही एक दोस्त रवि की हत्या और दूसरे दोस्त राजीव को गंभीर रूप से घायल सिर्पु इसलिए कर दिया, क्योंकि उन्होंने इसकी बात नहीं मानी थी। पुलिस के मुताबिक तीनों लोग तिकोना पार्क कार मार्केट में अलग-अलग जगह काम करते हैं। 10 नवंबर की रात उन्होंने साथ बैठकर शराब पी और फिर चादर मांगने को लेकर आपस में झगड़ा हो गया। जिस पर अर्जुन ने वहां पड़े पत्थरों से अपने दोनों साथियों पर हमला कर दिया। अर्जुन ने रवि की गर्दन वहीं पड़े ब्लेड से काट दी और वहां से फरार हो गया। पुलिस रिमांड के दौरान हत्या में इस्तेमाल किए गए सामान की रिकवरी करेगी। वहीं घायल युवक का अभी दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में इलाज चल रहा है। वहां उसकी हालत गंभीर बनी हुई है।

योजनाओं की जानकारी जन-जन तक पहुंचाई जाएगी

पलवल। हरियाणा प्रदेश में विकसित भारत संकल्प यात्रा के सफलता पूर्वक आयोजन के दृष्टिगत हरियाणा के मुख्य सचिव संजीव कौशल ने वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से उपायुक्त व संबंधित अधिकारियों को इस यात्रा के आयोजन को लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मुख्य सचिव ने कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा से केंद्र व हरियाणा सरकार की जनहित में योजनाओं व उपलब्धियों की जानकारी जन-जन तक पहुंचाई जाएगी। उन्होंने कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा को लेकर किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं रहनी चाहिए। लोग उत्साह के साथ इस यात्रा का स्वागत कर इससे जानकारी प्राप्त करें। विकसित भारत संकल्प यात्रा में शामिल प्रचार वाहनों अथवा वैन में प्रचार सामग्री रखी जाए, जोकि लोगों में वितरित की जाए। जिससे आमजन को योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी मिल सके। इसके साथ ही यात्रा का ठहराव जिन-जिन स्थानों/कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना है, वहां पर स्वास्थ्य जांच शिविर लगाए जाएं।

पेंशन अदालत में लोगों ने उठाया लाभ

पलवल। उपायुक्त नेहा सिंह ने बताया कि प्रधान महालेखाकार लेखा व हकदारी हरियाणा चंडीगढ़ व जिला खजाना पलवल द्वारा आगरा चौक के नजदीक स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बाल में पेंशन संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए पेंशन अदालत का आयोजन किया गया। इस पेंशन अदालत में पेंशनर द्वारा दी गई समस्याओं का निपटान सहायक लेखा अधिकारी जसवंत सिंह तथा पलवल के खजाना अधिकारी संजय सिंह छौंकर द्वारा मौके पर ही किया गया। उन्होंने हरियाणा सरकार के पेंशनरों से अपील करते हुए कहा कि वे अपनी समस्याओं को पेंशन अदालत में आकर जरूर निपटाएं।

सुरंग में फंसे श्रमिक

बचाव के प्रयास

सुरंग में फंसे श्रमिकों के बहुआयामी बचाव प्रयास जारी हैं। नौ दिन से 41 निर्माण कर्मी उत्तरकाशी की निर्माणाधीन सुरंग में फंसे हैं और वे सामान्य जीवन की तरह सूरज के प्रकाश तथा हवा से वंचित हैं। 12 नवंबर को सिल्क्यारा-बारकोट निमार्णाधीन सुरंग का एक हिस्सा अचानक धंस गया था जिसमें ये श्रमिक फंस गए थे। अनेक सरकारी एजेंसियों ने उनको बचाने के लिए सर्वोत्तम मशीनरी का प्रयोग किया है, लेकिन उनको अब भी यहां से निकाला नहीं जा सका है। मुख्यत: बिहार, उत्तर प्रदेश व झारखंड के इन श्रमिकों का रास्ता मलबे और पत्थरों से पट गया है। इस दुर्घटना में इन कर्मियों की दृढ़ता की परीक्षा हो रही है और इसके साथ ही यह उनको बचाने के व्यापक व समन्वित प्रयासों की भी परीक्षा है। यह सुरंग प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार की 'चार धाम' तक सभी मौसमों में पहुंचने की परियोजना का हिस्सा है। सुदूर पहाड़ी क्षेत्र में बचाव टीमों को भयानक लाजिस्टिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। अधिकारियों ने फौरन फंसे कर्मियों को बाहर निकालने के लिए अनेक एजेंसियों को काम पर लगाया है। राष्ट्रीय आपदा मोचन बल-एनडीआरएफ की विशेष टीमें, स्थानीय पुलिस तथा विदेशी विशेषज्ञों को दुर्घटना स्थल पर तैनात किया गया है। बचाव कार्य नौ दिन से जारी हैं, पर अभी इनका कोई नतीजा नहीं निकला है। शुरुआती बचाव प्रयासों को 17 नवंबर को रोकना पड़ा था, जब कर्मियों को बाहर निकालने के लिए मलबे में नया पाइप डालने के समय सुरंग से भयानक आवाज सुनाई दी थी। कर्मियों को भोजन, पानी और दवायें पहुंचाने के लिए पाइपों का प्रयोग किया जा रहा है।

विडंबना है कि मिट्टी को हटाने के लिए भारी मशीनों के प्रयोग से समस्या और गंभीर हुई है क्योंकि इसके कारण और मलबा गिरा जिसने उनके बाहर निकलने का संभावित रास्ता बंद कर दिया। हालांकि, यह समय इस मुद्दे

पर विचार करने का नहीं है कि ऐसी विशाल परियोजनाओं को संवेदनशील परिस्थितिकी में अनुमति दी जानी चाहिए थी या उसके लिए समुचित सुरक्षा व संरक्षा उपाय अपनाए गए थे, लेकिन इस विषय पर व्यापक विचार-विमर्श की आवश्यकता जरूर है। दुर्गम क्षेत्र के निवासियों तथा पर्यटकों को आधुनिकतम सुविधायें प्राप्त करने का अधिकार है और इसे यथासंभव उपलब्ध कराया जाना चाहिए। सरकार इस दिशा में निरंतर काम कर रही है। हालांकि, इस घटना में सर्वाधिक सकारात्मक और उत्साहजनक नतीजा लोगों की परस्पर सहायता की प्रवृत्ति है। फंसे कर्मियों की खबर फैलते ही स्थानीय समुदाय ने एकजुट होकर बचावकर्मियों तथा कर्मियों के परिवारों को सहायता दी। स्थानीय स्वयंसेवकों ने वर्तमान कार्रवाइयों तथा बचाव प्रयासों में शामिल लोगों को भोजन, शरणस्थल व नैतिक समर्थन देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। सभी लोग सांस रोक कर असहाय फंसे श्रमिकों के लिए प्रार्थना कर रहे हैं जो किसी अन्य के लालच और लापरवाही का शिकार हुए हैं। हालांकि, बचाव प्रयासों की निगरानी प्रधानमंत्री कार्यालय के स्तर पर हो रही है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगातार उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के निरंतर संपर्क में हैं, सुरंगों में फंसे श्रमिकों को बचाने में विशेषज्ञता वाली कई विदेशी एजेंसियों के विशेषज्ञ मौके पर पहुंच गए हैं तथा कई केन्द्रीय मंत्री घटनास्थल पर जा कर राहत प्रयासों का आंकलन कर चुके हैं। इन मंत्रियों में नितिन गडकरी तथा सेवानिवृत्त जनरल वीके सिंह शामिल हैं। आशा है जल्द ही फंसे श्रमिकों को मुक्ति मिलेगी।

मोदी के करिश्मे पर निर्भर भाजपा

अब यह पूर्णत: स्पष्ट है कि भाजपा आलाकमान व आरएसएस पांच राज्य विधानसभा चुनावों में विजय के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'करिश्मे' पर निर्भर है।

के.एस. तोमर
(लेखक, वरिष्ठ पत्रकार हैं)

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मध्य प्रदेश के मतदाताओं से भाजपा को विजय दिलाने की व्यक्तिगत अपील की है। इसके साथ ही किसी नेता को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार बनाने का निर्णय भी किया गया है। इससे स्पष्ट है कि अब भारतीय जनता पार्टी-भाजपा पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में प्रधानमंत्री मोदी की लोकप्रियता पर अत्यधिक निर्भर है। नवंबर में हो रहे राज्य विधानसभा चुनावों में विजय या पराजय तथा उसके भावी राजनीतिक परिणामों पर विश्लेषकों की राय अलग-अलग है। एक प्रकार के विश्लेषकों का मानना है कि यदि भाजपा इन चुनावों में विजय प्राप्त करती है तो उसका 2024 के लोकसभा चुनाव पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि केन्द्र सरकार के लिए वोट देने के समय मतदाताओं की राय अलग हो सकती है। अतीत पर गौर करें तो स्पष्ट होगा कि भाजपा को 2018 में हिंदी पट्टी के विधानसभा चुनावों में हार का सामना करना पड़ा था, पर वह 2019 के लोकसभा चुनाव में 65 सीटों में से 61 पर विजय पाने में सफल हुई थी। इनमें उसे राजस्थान की 25 सीटों में से 24, मध्य प्रदेश की 29 सीटों में से 28 तथा छत्तीसगढ़ की 11 में से 9 लोकसभा सीटों पर मिली विजय शामिल है। 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को मिली विजय का मुख्य कारण 'मोदी लहर' तथा उसका राष्ट्रवादी एजेंडा था।

वर्तमान समय में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की लोकप्रियता बहुत उच्च स्तर पर है और भारत के मतदाताओं में उनकी स्वीकार्यता अधिकतम है। विशेषज्ञों का मानना है कि भाजपा को उसके 'हिंदुत्व' एजेंडे का लाभ मिलेगा। जनवरी में अयोध्या में भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर का श्रीगणेश होने के बाद उसका यह एजेंडा और शक्तिशाली बन जाएगा। भाजपा इसका पूरी तरह लाभ उठाने का प्रयास करेगी। भाजपा के पास संसाधनों की कोई कमी नहीं है तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ-आरएसएस अपनी व्यापक व सुसंगठित संगठन शक्ति से लोकसभा चुनाव में भाजपा उम्मीदवारों की विजय सुनिश्चित करने में कोई कसर नहीं छोड़ेगा। भाजपा मतदाताओं को राजग सरकार की शानदार उपलब्धियों तथा मोदी के मजबूत नेतृत्व की बात समझाने का प्रयास करेगी। मोदी के सशक्त नेतृत्व के कारण ही जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 370 समाप्त करना तथा संसद में महिलाओं के 33 प्रतिशत आरक्षण का कानून बनाना संभव हुआ है।

इसके उलट आलोचकों का विश्वास है कि यदि भाजपा राज्य विधानसभा चुनावों में पराजित होती है तो संसदीय चुनावों में भी उसे नुकसान उठाना पड़ेगा। आलोचकों की नजर में ऐसे कई महत्वपूर्ण आयाम हैं जिनसे भाजपा की गणित बिगड़ जाएगी। पहला, इस बार कोई पुलवामा या सर्जिकल स्ट्राइक जैसा मामला नहीं है जिसने देशव्यापी राष्ट्रवाद का उभार पैदा किया था। दूसरा, उस समय कांग्रेस तथा विपक्षी पार्टियों की लोकप्रियता सबसे निचले बिंदु पर थी क्योंकि मतदाताओं की नजर में वे भाजपा का विकल्प नहीं थे। तीसरा, इस बार मोदी का 'करिश्मा' राजग सरकार के नौ-वर्षीय शासन के खिलाफ सत्ता-विरोधी लहर को निष्प्रभावी करने के लिए काफी नहीं होगा। चौथा, आम लोग आवश्यक वस्तुओं की आसमान छूती कीमतों का सामना कर रहे हैं जिससे उनका जीवन कठिन हो गया है। पांचवां, नौजवानों ने बड़ी संख्या में भाजपा को वोट दिए थे, पर अब बेरोजगारी की समस्या शिखर पर है जिससे समाज पर प्रभुत्व रखने वाला यह तबका बहुत नाराज है। छठा, मध्य वर्ग प्रभावित है और उसकी प्रतिक्रिया 2019 से उलट हो सकती है। सातवां, कर्नाटक में कांग्रेस की विजय तथा तमिलनाडु में अन्नाद्रमुक द्वारा भाजपा से संबंध तोड़ने से भाजपा को धक्का लगा है। दक्षिण भारत में समुचित संख्या में सीटें जीते बिना भाजपा सत्ता तक नहीं पहुंच सकती है। इन सभी चीजों के साथ ही विपक्षी पार्टियां आई.एन.डी.आई.ए की छतरी तले एकजुट हो गई हैं। इसके साथ ही विपक्ष ने अपने नेताओं के खिलाफ जांच एजेंसियों के कथित दुरुपयोग का मामला उठाया है। हालांकि विपक्ष द्वारा प्रधानमंत्री उम्मीदवार की घोषणा करना बहुत कठिन है, पर वे मोटेतौर से सीटों के साझे के साथ एक दूसरे के खिलाफ उम्मीदवार खड़े न करने का फैसला कर सकती हैं। ऐसी स्थिति में 2024 में पूरे देश में उनके वोटों की गणित प्रभावी हो सकती है।

मुख्यमंत्री शिवराज चौहान पर लगाम लगाने के लिए भाजपा आलाकमान ने अपने केन्द्रीय मंत्रियों, जैसे नरेन्द्र सिंह तोमर, पह्लाद सिंह पटेल व फग्गन सिंह कुलस्ते को मैदान में उतार कर मतदाताओं को आश्चर्यचकित किया। इनको मध्य प्रदेश चुनाव में उम्मीदवारों की पहली सूची में स्थान दिया गया। भाजपा की रणनीति के अनुसार केन्द्रीय मंत्रियों का पूरे राज्य में प्रभाव हो सकता है, हालांकि उनको अभी जनता के बीच अपनी राज्यव्यापी लोकप्रियता सिद्ध करनी है।

विशेषज्ञों का कहना है कि मंत्री या सांसद विरले ही खास निर्वाचन क्षेत्रों में माइक्रो-स्तरीय प्रबंधन करते हैं और यह मध्य प्रदेश में उनके लिए चिन्ता का कारण हो सकता है। शिवराज चौहान की तुलना में उनका राज्य-स्तरीय कद नहीं हो सकता है, जबकि चौहान स्वयं को मुख्यमंत्री उम्मीदवार घोषित न करने से नाराज हैं। शायद भाजपा आलाकमान और आरएसएस के सर्वोच्च नेतृत्व ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पार्टी का चेहरा बना कर और चुनाव वाले राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना व मिजोरम में मुख्यमंत्री उम्मीदवारों की घोषणा न कर गलती की है। लेकिन एक अलग विश्लेषण के आधार पर भाजपा ने नया प्रयोग किया है। उसने एक खास रणनीति के अंतर्गत मध्य प्रदेश, राजस्थान व छत्तीसगढ़ के विधानसभा चुनावों में 24 सांसदों व 4 केन्द्रीय मंत्रियों को मैदान में उतारा है। इससे 2024 के लोकसभा चुनाव में विजय सुनिश्चित करने के लिए भाजपा की 'प्रतिबद्धता' स्पष्ट होती है। भाजपा पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में विजय प्राप्त कर यह विमर्श मजबूत करना चाहती है। राजनीतिक विश्लेषकों की नजर में इसका उद्देश्य मतदाताओं की वर्तमान विधायकों के प्रति पैदा नाराजी दूर करने का प्रयास हो सकता है। मतदाता निर्वाचन क्षेत्रों से उतारे गए सांसदों और मंत्रियों को 'नए चेहरे' मान कर उनको पुन: विजयी बनाने का निर्णय कर सकते हैं।

कुछ राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनावों के नतीजों से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के व्यापक अभियान को धक्का लग सकता है तथा 'हिंदुत्व' भी आशानुकूल प्रभावी नहीं हो सकता है। ऐसे में यदि भाजपा कांग्रेस को राजस्थान तथा छत्तीसगढ़ की सत्ता से हटाने में विफल होती है तथा तेलंगाना में सी. चंद्रशेखर राव की 'भारत राष्ट्र समिति'-बीआरएस सत्ता में बनी रहती है तो इसका असर 2024 में होने वाले संसदीय चुनावों पर पड़ सकता है। लेकिन यदि पांच राज्यों के राज्य विधानसभा चुनावों में भाजपा की अपेक्षानुसार नतीजे आते हैं तो इसका दोगुना असर पड़ सकता है। राज्य विधानसभा चुनावों में भाजपा की विजय से लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विजय पूर्णत: सुनिश्चित हो जाएगी और वे प्रधानमंत्री के रूप में तीसरे कार्यकाल में आसानी से प्रवेश कर जाएंगे।

विशेषज्ञों का अनुमान है कि भाजपा के 'थिंक टैंकों' ने केन्द्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में नौ साल चली सरकार के प्रदर्शन और उसके द्वारा किए जन-कल्याण कार्यों का व्यापक आंकलन किया है। उनका विश्वास है कि इसका लाभ राज्य विधानसभा चुनावों में भी पार्टी के उम्मीदवारों को मिल सकता है। भाजपा ने 'गुजरात माडल' के आधार पर पुरानी पीढ़ी के नेताओं को हटा कर उत्तराखंड, गोवा और त्रिपुरा में सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए, पर यह प्रयोग कर्नाटक में बुरी तरह विफल हुआ। अब यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या चुनाव में केन्द्रीय मंत्रियों व सांसदों को उतारने से पार्टी को लाभ होता है या इसके

ऊर्जा संक्रमण के भू-राजनीतिक परिणाम

ऊर्जा का परिवर्तन तीव्र गति से हो रहा है जो भू-राजनीतिक शक्ति संरचना में आमूल-चूल बदलाव का कारण बनेगा।

ईशू रत्न

साई राम

इतिहास से पता चलता है कि दुनिया में शक्ति का क्रम ऊर्जा समीकरणों में बदलाव से संचालित हुआ है। स्टीम इंजन औद्योगीकरण ने कोयले की आसानी से उपलब्ध आपूर्ति के दम पर ब्रिटेन को एक वैश्विक महाशक्ति के रूप में उभरने में सक्षम बनाया। इसके बाद, द्वितीय विश्व युद्ध में फोर्डवाद चरम पर पहुंच गया और आने वाले दशकों के लिए कार्बन पूंजीवाद के भविष्य की ऊर्जा के रूप में तेल पर ध्यान केंद्रित करते हुए, अमेरिका को वैश्विक शक्ति के केंद्र में ला दिया। वहीं जीवाश्म ईंधन का असमान वितरण भू-राजनीतिक शक्ति समीकरणों का केंद्र रहा है।

जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न व्यवधानों के अचानक, बढ़ते और बेतुके पैमाने ने, वैश्विक शक्ति समीकरणों के लिए अस्तित्व संबंधी खतरे पैदा कर दिए हैं, जिनमें शामिल हैं (1) जीवाश्म ईंधन भंडार के फंसे होने से होने वाली पूंजीगत हानि, (2) जीवाश्म ईंधन के किराए से प्राप्त राजकोष को होने वाली हानि और सबसे महत्वपूर्ण (3) सौर, पवन और जलविद्युत जैसे अधिक व्यापक शून्य-कार्बन ऊर्जा स्रोतों में बदलाव के कारण भू-राजनीतिक शक्ति लाभों का नुकसान।

इसके अलावा, एक पहलू जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता वह यह है कि ऊर्जा परिवर्तन में प्रौद्योगिकी परिवर्तन भी शामिल होता है। जीवाश्म-ईंधन आधारित आंतरिक दहन-आधारित प्रणालियों से अधिकतम शक्ति प्राप्त करने का शाश्वत उत्साह नए तरीकों से विद्युतीकरण की ओर स्थानांतरित हो जाएगा। वैश्विक ऑटोमोटिव उद्योग का मामला लें, जिसकी वैश्विक जीडीपी में लगभग 3.5त्न हिस्सेदारी है; ईवी के प्रति इसके तकनीकी बदलाव का इसकी मूल्य श्रृंखला पर गहरा प्रभाव पड़ना तय है। इसके अलावा, चूंकि पारंपरिक ऊर्जा प्रणालियों में अनुसंधान एवं विकास धीमा हो गया है, लॉक-इन निवेश उन्नयन के लिए

भूखा रहेगा, खासकर प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर निर्भरता वाले देशों में। ये बड़े पैमाने पर उद्योग-व्यापी बदलाव भू-राजनीतिक संतुलन पर दबाव डालेंगे। इसके अलावा, यूरोपीय संघ द्वारा प्रस्तावित वैश्विक व्यापार व्यवस्थाओं में उत्सर्जन से जुड़े टैरिफ पहले से ही इसके व्यापार भागीदारों से संबंधित हैं।

लिथियम, निकल, कोबाल्ट, तांबा और दुर्लभ पृथ्वी तत्वों जैसी ऊर्जा-महत्वपूर्ण सामग्रियों का थिएटर पहले से ही कार्रवाई से भरा हुआ है क्योंकि राष्ट्र दुनिया भर में भंडार सुरक्षित करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। चूँकि ऊर्जा परिवर्तन के लिए आवश्यक संसाधन आवश्यक रूप से विरासत में मिले प्राकृतिक लाभ का परिणाम नहीं हैं, इसलिए नई दोष रेखाएँ उभर रही हैं, जो वैश्विक दिग्गजों को अपने प्रतिस्पर्धी लाभ को फिर से स्थापित करने और युग में अपनी शक्ति की स्थिति बनाए रखने के लिए दूसरों की भू-राजनीतिक ताकत को कमजोर करने के लिए प्रेरित कर रही हैं। हरित औद्योगीकरण का. यूक्रेन में युद्ध, जिसके परिणामस्वरूप गैस आपूर्ति में अनिश्चितता पैदा हुई, ने यूरोप के लिए अपने नवीकरणीय ऊर्जा परिवर्तन में तेजी लाने के लिए एक चेतावनी के रूप में काम किया है। जापान, एक और विकसित और तकनीकी रूप से उन्नत देश, ने अपनी हाइड्रोजन रणनीति की घोषणा करके पावर प्ले का हिस्सा बनने के अपने इरादे की घोषणा की है, जो 2040 तक 12 मिलियन टन की वार्षिक आपूर्ति का लक्ष्य रखता है। भारत भी, एक भूमिका निभाकर वैश्विक सौर प्रयास का नेतृत्व कर रहा है। अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन में नेतृत्व की भूमिका और हाल ही में अनावरण की गई हाइड्रोजन रणनीति के माध्यम से, यह एक वैश्विक इलेक्ट्रोलाइज़र उत्पादन केंद्र बनने की आकांक्षा रखता है।

ऊर्जा सुरक्षा, ऊर्जा गरीबी और जलवायु परिवर्तन के मुद्दे ऊर्जा संक्रमण की अवधारणा के केंद्र में हैं और एक अधिक न्यायसंगत और टिकाऊ दुनिया के निर्माण की दिशा में अवसर प्रदान करते हैं। एक नई भू-राजनीतिक विश्व व्यवस्था में सुचारु परिवर्तन के लिए निम्नलिखित महत्वपूर्ण तत्व हो सकते हैं: न्यायसंगत और निष्पक्ष परिवर्तन: फंसे हुए कार्बन परिसंपत्तियों के मुआवजे के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक अव्यवस्था को कम करना और नौकरी की गतिशीलता के अवसर पैदा करना

बहुपक्षवाद का पुनरुद्धार: वैश्विक संस्थानों को निहित स्वार्थी गठजोड़ को तोड़ने और तेजी से कार्रवाई के लिए प्रोत्साहन बनाने के लिए पहले से कहीं अधिक सहयोग करने की आवश्यकता है

तकनीकी छलांग: ओपन-सोर्स तकनीकी सफलताएं ऊर्जा क्षमताओं के आधार पर बिजली के नए क्षेत्रों के निर्माण को रोक सकती हैं और एक नई विश्व व्यवस्था बना सकती हैं।

उभरते देशों में शक्ति का प्रसार - वैश्विक आर्थिक विकास के भविष्य के केंद्रों को ध्यान में रखते हुए और इसलिए उभरते देशों में ऊर्जा की खपत को ध्यान में रखते हुए, उनकी आवाज़ को वैश्विक शक्ति समीकरणों में एक केंद्रीय स्थान खोजने की आवश्यकता है।

आप की बात

काम और आराम

काम के बीच ब्रेक लेने या आराम का फायदा जापानियों के साथ-साथ अन्य कई देशों में लिया जा रहा है! मगर वहां से भारत की परिस्थितियां अलग है। यहां तो आदमी काम के प्रति कतई ईमानदार नहीं है। यथासंभव हर काम को टालना अधिकांश सरकारी कर्मचारियों की प्रवृत्ति बन गई है। यहां तक कहा जाने लगा है कि हमारे यहां अनेक सरकारी अधिकारी तनख्वाह के बदले आराम करते हैं और रिश्वत के बदले काम करते हैं। इसके अलावा लंच ब्रेक तो होता ही है जिसमें खाना खाने के बाद कुछ लोग ज्यादा आराम करने लगते हैं। 8 घंटे की ड्यूटी में हमारे यहां वैसे ही दो-तीन घंटे काम होता है। उस पर यदि ब्रेक लेने की छूट दे दी जाए तो सारे काम का बंटाधार हो जाएगा। यदि अपने काम के प्रति पूरे समर्पित होकर आनंदपूर्वक कार्य किया जाए तो वैसे भी थकान नहीं होगी और सफेद पोश नौकरियों में ब्रेक के रूप में कुछ व्यायाम का प्रावधान उचित होगा। जब नारायणमूर्ति ने सप्ताह में 70 घंटे काम का सुझाव दिया तो उसे हवा में उड़ा दिया गया और जल्द ही भुला भी दिया गया। वैसे भी-आराम हराम का नारा देने वाले देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू आज ज्यादातर लोगों की स्मृतियों से बाहर हो गए हैं।

- **सुभाष बुड़ावन वाला,** रतलाम

पक्षपात की आशंका

हाल ही में एक बार फिर बलात्कार के मामले में दोषी ठहराए गए डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम सिंह को तीन सप्ताह की बेल प्रदान की गई है। गुरमीत राम रहीम सिंह को अगस्त 2017 में पंचकुला में एक विशेष केंद्रीय जांच ब्यूरो अदालत ने दो महिला अनुयायियों के साथ बलात्कार के लिए दोषी ठहराया था। उन्हें 20 साल की सजा सुनाई गयी है। लगता है सजा पूरी होते-होते उन्हें 20 महीनों का बेल प्रदान कर दिया जायेगा। इसके उलट महाराष्ट्र के भीमा कोरेगांव मामले में कई बुजुर्गों को उनकी विचारधारा एवं सोच के कारण 2008 से ही जेल में रखा गया है। उनका बेल अपील को अदालतों द्वारा बार-बार ठुकरा दिया जाता है। एक बुजुर्ग फादर स्टेन स्वामी को लगातार जेल में रखा गया। इस कारण समुचित इलाज के अभाव में उनकी मौत हो गई। ऐसे प्रकरणों से आम लोगों में शासन सत्ता और न्याय व्यवस्था के प्रति अविश्वास की भावना पैदा होती है। इससे यह आशंका भी पैदा होती है कि वोटबैंक अथवा अन्य कारणों से कुछ खास लोगों के साथ पक्षपात कर उनको ज्यादा रियायत दी जा सकती है। यह लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत नहीं है।

- **जंग बहादुर सिंह,** जमशेदपुर

ई-फार्मेसी

बढ़ते स्मार्टफोन के चलते ई-फार्मेसी बिजनेस के अच्छे दिन आ गए हैं। मोबाइल के एक क्लिक से जरूरी दवाएं तुरंत घर पहुंच जाती हैं। कुछ मामलों में ई-फार्मेसी का उपयोग उन दवाओं के लिए किया जाता है जो बाजार में आसानी से उपलब्ध न हों। साथ ही बुजुर्गों और गर्भवती माताओं के लिए भी ई-फार्मेसी दवाओं का उपयोग किया जाता है। लेकिन इस माध्यम से नकली व संदिग्ध किस्म की दवाइयों के कारण पूरे दवा उद्योग पर सवाल उठने लगे हैं। दिल्ली हाई कोर्ट ने केंद्र सरकार को ई-फार्मेसी नीति बनाने का निर्देश दिया है। पिछले पांच साल से आनलाइन दवाओं की बिक्री पर कोई स्पष्ट नीति नहीं है। ई-फार्मेसी नीति की समय सीमा अगले आठ सप्ताह तय की गई है। न्यायालय ने कहा है कि ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक एक्ट और फार्मेसी एक्ट, 1948 के तहत इसकी अनुमति नहीं है। यदि सरकार ई-फार्मेसी को अनुमति देती है तो उसे आफलाइन दवा विक्रेताओं को भी कठोर एवं अव्यावहारिक नियंत्रणों से मुक्ति की दिशा में कदम उठाने चाहिए। दवा विक्रेता इसकी लंबे समय से मांग करते हुए कई बार हड़ताल भी कर चुके हैं।

- **दत्तप्रसाद शिरोडकर,** मुंबई

प्रकृति का संरक्षण

यमुनोत्री धाम की यात्रा को सुगम बनाने हेतु बनाए जा रहे सुरंगी मार्ग में 41 श्रमिक एक सप्ताह से फंसे हुए हैं। इस प्रकरण से स्पष्ट है कि पर्वतीय क्षेत्र में किए गए और हो रहे निर्माण कार्यों को पूर्ण सुरक्षित नहीं माना जा सकता है। विडंबना है कि कई बार ऐसे प्रकरणों का खामियाजा भुगतने के बाद भी पहाड़ों में निर्माण कार्य, पहाड़ों की खोदाई और वृक्षों की कटाई जारी है। वस्तुत: ऐसे कार्य स्वयं के पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसे हैं। यह स्वयं प्रकृति के साथ ज्यादती है। यदि हम प्रकृति व पर्यावरण का संरक्षण नहीं कर सकते तो अपनी सुविधा या कमाई हेतु उसका क्षरण या उसके साथ ज्यादती तो न करें। ऐसा न करने पर हमें प्रकृति की नाराज़गी सहन करने को तैयार रहना चाहिए। पहाड़ों तथा अन्य संवेदनशील स्थानों पर निजी या सरकारी निर्माण कार्यों में पर्यावरण संरक्षण को वरीयता मिलनी चाहिए। पर्यटकों की संख्या बढ़ा कर अथवा उनको ज्यादा से ज्यादा सुविधायें देने से तीर्थयात्रा के प्रति प्राचीन भावना भी एक प्रकार से आहत होती है, जब तीर्थयात्रा का अर्थ तपस्या और कष्ट-सहन भी होता था।

- **बी एल शर्मा,** उज्जैन

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते है।

राजस्व मामलों के निस्तारण में लापरवाही को सीएम ने गंभीरता से लिया

सात मंडलायुक्तों व सात डीएम से जवाब तलब

● संतोषजनक जवाब न मिलने पर हो सकती है बड़ी कार्रवाई

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक बार फिर राजस्व वादों के निस्तारण में लेटलतीफी, लापरवाही, अनियमितता बरतने वाले अधिकारियों के खिलाफ कड़ा एक्शन लिया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अक्टूबर माह में राजस्व वादों के खराब निस्तारण पर प्रदेश के सात मंडलायुक्त और सात जिलाधिकारियों से जवाब तलब किया है। वहीं माना जा रहा है कि जवाब संतोषजनक जवाब न मिलने पर अधिकारियों के खिलाफ कड़ा एक्शन लिया जा सकता है। अपर मुख्य सचिव राजस्व सुधीर गर्ग ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश के विभिन्न राजस्व न्यायालयों में लम्बित राजस्व वादों के त्वरित और समयबद्ध निस्तारण के लिए 60 दिन का विशेष अभियान चलाने के निर्देश दिए थे। साथ ही विशेष अभियान की हर मंगलवार को शासन स्तर पर समीक्षा करने के निर्देश दिए थे। ऐसे में अक्टूबर माह की समीक्षा बैठक में पाया गया कि प्रदेश के सात मंडलायुक्तों-वाराणसी, सहारनपुर, आजमगढ़, बस्ती, चित्रकूट धाम, अयोध्या, अलीगढ़ और सात जिलाधिकारियों- बागपत, शामली, मुजफ्फरनगर, हापुड़, चित्रकूट, ललितपुर, अमरोहा द्वारा राजस्व के लंबित और नए वादों के निस्तारण में लापरवाही बरती जा रही है। इस पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर शासन ने लापरवाह अधिकारियों से जवाब तलब किया है। साथ ही लम्बित राजस्व वादों का मानक एवं निर्धारित लक्ष्य के अनुसार समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित कराने के सख्त निर्देश दिए हैं। वहीं माना जा रहा है कि जवाब संतोषजनक न मिलने पर बड़ी कार्रवाई की जा सकती है।

अपर मुख्य सचिव राजस्व ने बताया कि प्रदेश के पांच मंडलों में लंबित मामलों के निस्तारण में लापरवाही बरती जा रही है। उन्होंने बताया कि वाराणसी मंडल में चार राजस्व न्यायालय हैं, जहां पर 440 लंबित राजस्व वादों के सापेक्ष 82 वादों का ही निस्तारण किया गया। इसी तरह सहारनपुर मंडल में चार राजस्व न्यायालय हैं, जहां पर 280 लंबित राजस्व वादों के सापेक्ष 54 वादों का ही निस्तारण किया गया जबकि आजमगढ़ मंडल में पांच राजस्व न्यायालय हैं, जहां पर 481 लंबित राजस्व वादों के सापेक्ष 126 वादों का ही निस्तारण किया गया। वहीं अलीगढ़ मंडल में तीन राजस्व न्यायालय हैं, जहां पर 280 लंबित राजस्व वादों के सापेक्ष 114 वादों का ही निस्तारण किया गया। इसके अलावा नए दायर वादों के निस्तारण में खराब प्रदर्शन करने वाले पांच बॉटम मंडलों में चित्रकूट धाम, आजमगढ़, अयोध्या, सहारनपुर और अलीगढ़ शामिल हैं। इसी तरह राजस्व मामलों के निस्तारण में लारवाही पर सात जिलाधिकारियों को नोटिस थमायी गयी है।

कर्नाटक से आए प्रतिनिधिमंडल ने देखी यूपी विधानसभा की कार्यप्रणाली

● विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने अपने समकक्ष यूटी कादर फरीद को ई-विधान व डिजिटल प्रणाली के विषय में विस्तार से बताया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

कर्नाटक विधान सभा के अध्यक्ष यूटी कादर फरीद एवं सचिव तथा कर्नाटक विधान परिषद् के सचिव एवं अन्य अधिकारियों ने मंगलवार को उत्तर प्रदेश विधान सभा में ई-विधान योजना की स्थापना एवं उसके कार्यान्वयन को देखा व समझा। कर्नाटक विधान परिषद् के सभापति को भी इस शिष्ट मण्डल के साथ आना था परन्तु कतिपय अपरिहार्य कारणवश वह नहीं आ सके। उत्तर प्रदेश विधान सभा में ई-विधान की योजना के सफ ल संचालन एवं पेपरलेस तकनीक के क्रियान्वयन की सफलता के दृष्टिगत कर्नाटक जैसी विधानसभा का उच्च स्तरीय शिष्टमण्डल आया जबकि बेंगलुरू आईटी का केंद्र माना जाता है।

अध्यक्ष विधानसभा उत्तर प्रदेश सतीश महाना द्वारा कर्नाटक विधान सभा के अध्यक्ष एवं अन्य प्रतिनिधिगण को उत्तर प्रदेश विधान सभा में ई-विधान तथा डिजिटल प्रणाली के विषय में विस्तार से बताया गया। कर्नाटक विधान सभा के उक्त शिष्ट मण्डल को यह अवगत कराया गया कि उत्तर प्रदेश विधान सभा की समस्त कार्यवाही इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली से संचालित होती है तथा यहां पर सभी विधायकगण इस विधा का प्रयोग करते हैं। उत्तर प्रदेश विधान सभा की पूर्ण कार्यसूची, प्रश्न प्रहर से अंत तक इलेक्ट्रॉनिक विधान की प्रणाली से संचालित किए जाने के लिए पूर्ण रूप से सुसज्जित है। उत्तर प्रदेश विधान सभा में कार्यरत इस प्रणाली के विशेषज्ञों द्वारा भी कर्नाटक के शिष्ट मण्डल के समक्ष विस्तार से प्रस्तुतीकरण किया गया। कर्नाटक विधान सभा के अध्यक्ष एवं अधिकारियों ने उत्तर प्रदेश विधान सभा की अत्याधुनिक इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली की सराहना की एवं पुन: यहां पर आकर इसको विस्तार से समझने के लिए समय भी मांगा है। उक्त शिष्ट मण्डल द्वारा विधानसभा में स्थापित डिजिटल गैलरी, जिसमें विधान सभा का सम्पूर्ण डिजिटल इतिहास है एवं डिजिटल कॉरिडोर, जिसमें समस्त सदस्यों की तस्वीरें एवं उत्तर प्रदेश सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं को दर्शाया गया हैए का अवलोकन भी किया गया। इसके अतिरिक्त विधान सभा में किए गए अन्य पुनरोद्धार कार्यों का भी उक्त शिष्ट मण्डल द्वारा निरीक्षण किया गया। कर्नाटक विधान सभा के अध्यक्ष द्वारा यह स्पष्ट रूप से अवधारणा व्यक्त की गई कि वर्तमान में उत्तर प्रदेश की विधान सभा देश की सर्वश्रेष्ठ विधान सभा है। उन्होंने यह भी कहा कि उत्तर प्रदेश की विधान सभा सर्वश्रेष्ठ अत्याधुनिक प्रणाली से भी युक्त है। कर्नाटक विधान सभा के अध्यक्ष द्वारा यह भी कहा गया कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष के नेतृत्व एवं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन में जो मॉडल उत्तर प्रदेश विधान सभा में प्रस्तुत किया गया है वह अनुकरणीय है और वह इसका अनुसरण भी करेंगे। बैंगलुरू जैसे अत्याधुनिक एवं तकनीकी केंद्र की विधान सभा के अध्यक्ष द्वारा यह अवधारणा व्यक्त किया जाना उत्तर प्रदेश विधान सभा के लिए एक गौरव की बात है।

कर्नाटक विधान सभा के शिष्ट मण्डल को यह भी बताया गया कि अगले चरण में उत्तर प्रदेश विधान सभा मीडिया एवं सदस्यों के संसदीय क्षेत्रों से भी डिजिटल तरीके से सम्बद्ध होने का कार्य करेगी।

शिष्ट मण्डल में मुख्य रूप से केआर महालक्ष्मी, सचिव, कर्नाटक विधान परिषद, एमके विशालाक्षी, सचिव, कर्नाटक विधान सभा, जेई शशिधर, निदेशक (आईटी), कर्नाटक विधान सभा, एस. निर्मला, अपर सचिव, कर्नाटक विधान परिषद, ओम प्रकाश, सलाहकार, अध्यक्ष, कर्नाटक विधान सभा व केडी स्याला, ओएसडी सभापति, कर्नाटक विधान परिषद के साथ-साथ महेश करजगी, एम. साक्षीनाथ, मोहम्मद लिब्जत भी उपस्थित रहे।

शिष्ट मण्डल के भ्रमण के दौरान उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य, शशांक त्रिवेदी, प्रमुख सचिव, विधान सभा प्रदीप दुबे, सचिव (कृषि) राजशेखर व ई-विधान से संबंधित अन्य अधिकारी भी उपस्थित रहे।

जनप्रतिनिधियों के सुझाए मार्गों पर होगा बसों का संचालनः दयाशंकर

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने कहा कि निगम सड़क परिवहन सेवा देने वाला जनोपयोगी सेवा संस्थान है। अर्थव्यवस्था में सुधार तेजी से होता विकासए नवीन सड़कों का निर्माण व बदलते परिदृश्य में नागरिकों की गतिशीलता में वृद्धि हो रही है। उन्होंने कहा कि इसी के दृष्टिगत निगम के सम्मुख नवीन क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने सहित सेवा विस्तार करने के प्रचुर अवसर उत्पन्न हो रहे हैं। निगम के व्यवसाय का अपेक्षित विस्तार दिया जाना है। उन्होंने परिवहन निगम के अधिकारियों को निर्देशित किया कि नवीन अवसरों का लाभ उठाते हुए निगम की स्थिति व हित सुदृढ़ करें।

परिवहन मंत्री ने कहा कि जन प्रतिनिधियों से प्राप्त पत्रों का संज्ञान लें। उन्होंने कहा कि जन प्रतिनिधियों के स्तर से मुख्यालय में बस सेवाओं के संचालन विषयक प्राप्त होने वाले सर्वाधिक मांग पत्र सहारनपुर, मेरठ गाजियाबाद, झांसी, चित्रकूटधाम, देवीपाटन, आजमगढ़ व हरदोई क्षेत्रों से आये हैं। उन्होंने कहा कि उन क्षेत्रों में यदि बस का संचालन नहीं है तो संचालन प्रारम्भ कराएं अथवा संचालन विगत कुछ वर्षों से किसी कारणवश बन्द हो गया है तो उसे पुन: जांचोपरान्त शुरू कराएं। उन्होंने यह भी निर्देश दिये कि प्रत्येक नगर, उपनगर, गांव से विभिन्न नगरों को परिवहन सेवा से जोड़ने हेतु कदम उठाएं, जिससे कि अधिक से अधिक लोगों तक परिवहन सेवा पहुंचाया जा सके। परिवहन सेवा बहाल करने से निगम द्वारा संचित यात्रियों की संख्या में अपेक्षित वृद्धि होगी। उन्होंने कहा कि विभिन्न नागरिकों व जनप्रतिनिधियों द्वारा बस सेवा उपलब्ध कराने के अनुरोध पर तत्काल विचार करें, यह स्वागत योग्य अवसर व कार्य है।

परिवहन मंत्री के निर्देशों के अनुपालन में प्रबंध निदेशक ने सभी क्षेत्रीय प्रबंधकों को निर्देशित किया है कि संचालित सेवाओं को प्रधान प्रबन्धक संचालन की पूर्व अनुमति के बिना बन्द न किया जाय। उन्होंने नवसंचालित सेवा के प्रतिफलों की दैनिक समीक्षा प्रथम एक माह तक सहायक क्षेत्रीय प्रबन्धक द्वारा किये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि मार्ग की चेकिंग, ट्रैफिक सर्वे कर बस सेवा को सफल तथा लाभकारी बनाने हेतु प्रत्येक सम्भव उपाय पर कार्य किया जाय।

महिला सशक्तिकरण पर जागरूकता कार्यशाला आज

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के नेतृत्व व निर्देशन में दीनदयाल उपाध्याय राज्य ग्राम्य विकास संस्थान बख्शी का तालाब लखनऊ द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण देकर सरकारी व गैर सरकारी लोगों की कार्यक्षमता बढ़ाने व दक्षता संवर्धन का कार्य अनवरत रूप से किया जा रहा है।

इसी कड़ी में दीनदयाल उपाध्याय राज्य ग्राम्य विकास संस्थान बख्शी का तालाब द्वारा राष्ट्रीय महिला आयोग भारत सरकार के सहयोग से बुधवार 22 नवम्बर को विधिक साक्षरता द्वारा लिंग संवेदनशीलता एवं महिला सशक्तिकरण पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम विषयक राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन ग्राम्य विकास संस्थान में किया जा रहा है। इस कार्यशाला द्वारा सम्बन्धित हितग्राही महिलाओं को विधिक साक्षरता के अन्तर्गत ज्ञानवर्धन व जागरूकता से सम्बंधित विभिन्न विषयों, भारतीय समाज में लिंग भेदभाव एवं पितृसत्तात्मकता, पारिवारिक कानून में महिलाओं के दाम्पत्यिक अधिकार, गरीबों व अक्षम लोगों को मुफ्त कानूनी सहायता प्रदान करना, राष्ट्रीय महिला आयोग उद्देश्य एवं संस्थागत ढांचा, कार्य एवं शक्तियां, शिकायत निवारण तन्त्र, महिला स्वयं सहायता समूह की भूमिका एवं इसके लाभ तथा महिला सशक्तिकरण के लिए राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाएं एवं कार्यक्रम, पर राष्ट्रीय, राज्य स्तरीय विषय विशेषज्ञों के माध्यम से महिलाओं को विधिक साक्षरता द्वारा जागरूक करने हेतु, पैनल डिस्कशन के रूप में भी, सकारात्मक एवं उपयोगी विषयगत वार्ता प्रदान की जायेगी। यह जानकारी राज्य ग्राम्य विकास संस्थान के प्र. अपर निदेशक बीडी चौधरी द्वारा दी गयी है।

यीडा ने ई-ऑक्शन से जुटाए 11.71 करोड़

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ ग्रेटर नोएडा

उत्तर प्रदेश में निवेश को सुलभ बनाने के योगी सरकार के प्रयास अपना असर दिखा रहे हैं। देश भर के निवेशक उत्तर प्रदेश में निवेश के लिए आतुर हैं। इसी क्रम में यमुना एक्सप्रेसवेज औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यीडा) ने मंगलवार को मात्र एक भूखंड के ई ऑक्शन के माध्यम से 11.71 करोड़ की आय की है। इससे यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण के विकास में गतिशीलता आएगी। प्राधिकरण ने 8 मई 2023 को पेट्रोल पम्प के भूखंड के आवंटन की योजना सीएफएस-04-2023 को ई ऑक्शन के माध्यम से आवंटित किए जाने की सूचना प्रकाशित की थी जिसमें कुल 4 भूखंड को सम्मिलित किया गया था। कुल 4 भूखंड के सापेक्ष भूखंड संख्या-एफएस-04, क्षेत्रफल-1600 वर्ग मीटर, सेक्टर-28 में उपलब्ध 1 भूखंड के सापेक्ष आवेदन प्राप्त होने पर मंगलवार को भूखण्ड का यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण में ई ऑक्शन पारदर्शी तरीके से सम्पन्न हुआ, जिसमें कुल बिड प्राइज लगभग 8.65 करोड़ था। बिड प्राइज 08.65 करोड़ के सापेक्ष प्राधिकरण को 11.71 करोड़ की आय हुई है। यह बिड प्राइज से 3.06 करोड़ अधिक है। परियोजनाओं के क्रियाशील होने पर लगभग 50 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त होगा।

दुष्कर्मी को 10 वर्ष की सजा

विधि संवाददाता। लखनऊ

एक नाबालिग युवती से दुष्कर्म करने के मामले में पॉक्सो की विशेष अदालत ने आरोपी विशाल कुमार यादव को दोषी करार दिया है। विशेष जज श्याम मोहन जायसवाल ने इसे 10 वर्ष कैद की सजा सुनाई है। साथ ही इस पर 55 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। कहा है कि जुर्माने की धनराशि का 50 प्रतिशत बतौर प्रतिकर पीड़िता को दी जाएगी।

आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने घर-घर बांटे पर्चे

● संजय सिंह की गिरफ्तारी का बताया सच

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

आम आदमी पार्टी ने मंगलवार को प्रदेश के हर जनपद में घर-घर दस्तक देकर पर्चे बांटे। इन पर्चों में संजय सिंह की गिरफ्तारी क्यों और गिरफ्तारी का सच बताया गया है। गौरतलब है कि पूरे प्रदेश में आज से आम आदमी पार्टी प्रदेश के सभी जिलों में अभियान चलाकर प्रथम चरण में 25 लाख घरों में दस्तक देगी। राजधानी लखनऊ में जिला अध्यक्ष शहर दीक्षित के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने पूर्वी विधानसभा के अंतर्गत पेपर मिल निशातगंज में पर्चा अभियान चलाया। अभियान के तहत कार्यकता हर घर पहुंच कर अपने सांसद व उप्र प्रभारी संजय सिंह की ईडी द्वारा की गयी अवैध गिरफ्तारी का काला सच उजागर किया। इस मौके पर पत्र के अनुसार जिलाध्यक्ष शेखर दीक्षित ने बताया कि संजय सिंह आम आदमी की आवाज, पटरी-रेहड़ी, दुकानदारों, पिछड़ों-दलितों की आवाज को संसद में उठा रहे थे तो उन्हें संसद से निलंबित किया गया। जब उन्होंने किसानों के संघर्ष की आवाज उठाई तो उन्हें ईडी का डर दिखाया गया लेकिन संजय सिंह तब और हमलावर हो गये और उन्होने प्रधानमंत्री और अडानी के भ्रष्टाचार का सच उजागर करना शुरू कर दिया। कहा गया कि संजय सिंह ने जब केंद्र सरकार और उप्र सरकार के भ्रष्टाचार को उजागर करना शुरू किया तो संजय सिंह को जेल भेजने की साजिश रची गयी। जिलाध्यक्ष ने कहा कि संजय सिंह ने राजनीति का स्वच्छ चेहरा बनने की कोशिश की और काले कारनामों से दूर रहे। कोरोना काल में आम आदमी के लिए संघर्ष करना हो चाहे सबके लिए आगे आकर लड़ना हो, सबमें संजय सिंह सबसे आगे खड़े रहे। उन्होंने कहा कि संजय सिंह ने किसान बिल पर मोदी सरकार को घेरा । अडानी की लूट का पर्दाफाश किया। केंद्र सकरार के भ्रष्ट व संगीन अपराधों का खुलासा करते हुए मोदी-अडानी गठजोड़ के जरिये देश को लूटने की साजिशों का बुलंद आवाज में विरोध किया। जिलाध्यक्ष शेखर दीक्षित ने कहा कि संजय सिंह की इन्हीं सब नीतियों और केजरीवाल सरकार के माडल के प्रति लोगों का रुझान बढ़ते देख मोदी सरकार ने अपने दोनों नुमाइंदों ईडी और सीबीआई के जरिए पहले सत्येंद्र जैन और मनीष सिसोदिया को जेल में डाला और शराब नीति के झूठे बवंडर में सबको घेरने की कोशिश कर आम आदमी पार्टी को खत्म करने की साजिश रची।

सरकारी संरक्षण में बढ़ रहे अपराधः अजय राय

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष्ज्ञ अजय राय ने कहा है कि आए दिन प्रदेश हो रहे अपराधों को देखकर यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार में महा जंगलराज कायम है। उन्होंने कौशाम्बी में बलात्कार पीड़िता की आरोतिपों द्वारा कुल्हाड़ी से काटकर दिन दहाड़े की गई निर्मम हत्या पर आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि योगीराज में न्याय मांगना अपनी जान जोखिम में डालने के बराबर है।

प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता डॉ. उमा शंकर पाण्डेय ने बताया कि प्रदेश की ध्वस्त कानून व्यवस्था पर चिंता व्यक्त करते हुए अजय राय ने कहा कि अपराधियों में कानून का भय पूरी तरह से समाप्त हो चुका है। प्रतिदिन बेखौफ अपराधी नए-नए अपराधों को अंजाम दे रहे हैं जिससे प्रदेश की जनता स्वयं को असुरक्षित महसूस कर रही है। कौशाम्बी की घटना की निंदा करते हुए उन्होंने कहा कि बीस वर्षीय युवती ने आरोपियों पर तीन साल पहले बलात्कार का मुकदमा दर्ज कराया थाए आरोपित का भाई हत्या के मामले में लचर पैरवी के कारण जमानत पर छूट कर आया था। आरोपितों द्वारा युवती पर समझौते को लेकर दबाव बनाते हुए उसे लगातार डराया व धमकाया जा रहा था, युवती के दबाव में ना आने पर आरोपितों द्वारा उसकी दिन दहाड़े भीड़ वाले स्थान पर कुल्हाड़ी से काटकर नृशंस हत्या कर दी गई। यह घटना प्रदेश में पुलिस तंत्र असफलता एवं व्याप्त व्याप्त जंगलराज और अपराधियों के बुलंद हौंसलों को दिखाता है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2017 से 2021 के बीच बलात्कार या सामूहिक बलात्कार के बाद हत्या के मामलों में उप्र में सबसे ज्यादा घटनाएं दर्ज की गई हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा राजस्थान में एक चुनावी सभा के दौरान वहां की कानून व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह लगाने को हास्यास्पद बताते हुए कहा कि उप्र में अपराध और अपराधी दोनों बेलगाम हैं, अपराधों में बेतहाशा वृद्धि हो रही है, जिसे रोक पाने में असफल मुख्यमंत्री अपने भाषणों से स्वयं का मजाक बना रहे हैं। अजय राय ने कहा कि योगी सरकार में बढ़ते अपराध का सबसे बड़ा कारण अपराधियों को सत्ता का संरक्षण प्राप्त होना है। हाथरस, उन्नाव, लखीमपुर खीरी, लखनऊ, कानपुर आदि की तमाम घटनाओं में अपराधियों एवं आरोपितों को सरकार के इशारे पर सत्ता का संरक्षण हासिल रहा है। हाथरस की बेटी के आरोपितों को बचाने का शासन-प्रशासन ने लगातार प्रयास किया था। उन्नाव की घटना में भाजपा और उसकी सरकार अंतिम दम तक अपराधियों को बचाने का प्रयासरत रही।

24 को बहराइच जाएगा सपा का प्रतिनिधिमंडल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा अखिलेश यादव के निर्देशानुसार समाजवादी पार्टी का प्रतिनिधि मंडल 24 नवंबर को जनपद बहराइच जाएगा। जनपद बहराइच के ग्राम फतेहपुर निवासी निषाद समाज की 20 वर्षीय युवती अपनी ननिहाल ग्राम हुजूरपुर से 16 नवम्बर को अपने गांव जा रही थी जिसका दिन दहाड़े बहराइच-लखनऊ हाइवे पर कैसरगंज कस्बे से अपहरण कर उसके साथ सामूहिक बलात्कार किया गया घटना की सही जानकारी एवं पीड़ित परिवार से मिलने के लिए प्रतिनिधि मंडल ग्राम फ तेहपुर जनपद बहराइच पहुंचेगा। प्रतिनिधि मंडल में डॉ. राजपाल कश्यप प्रदेश अध्यक्ष समाजवादी पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ उप्र, आनंद यादव विधायक, मुकेश श्रीवास्तव पूर्व विधायक, रामहर्ष यादव जिलाध्यक्ष समाजवादी पार्टी बहराइच, अनिल यादव जिला उपाध्यक्ष समाजवादी पार्टी बहराइच एवं हाजी शफ ीउल्ला अंसारी विधान सभा अध्यक्ष कैसरगंज शामिल रहेंगे।

'स्मार्ट मुखबिर' ने तोड़ी अपराध की कमर

● अपराध पर नकेल कसने में यूपी पुलिस के सारथी बने लाखों सीसीटीवी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

वर्ष 2017 से पहले आपराधिक घटनाओं का खुलासा करने के लिए यूपी पुलिस पारंपरिक रूप से मुखबिरों पर ही निर्भर रहा करती थी। इससे पुलिस को घटनाओं का पर्दाफाश करने में ना सिर्फ काफ ी परेशानी होती थी, बल्कि कई बार तो वास्तविक मुजरिम तक पहुंचने में वर्षों लग जाया करते थे। उस दौर में घटित तमाम वारदातों का खुलासा पुलिस के लिए टेढ़ी खीर हुआ करता था। यही नहीं न जाने कितने मामले तो ऐसे भी हुए जिनमें बिना खुलासा हुए ही केस ठंडे बस्ते में डाल दिये जाते थे। वहीं अपराध और अपराधियों पर लगाम लगाने के लिए जीरो टॉलरेंस नीति के तहत कार्य कर रही योगी सरकार ने यूपी पुलिस को स्मार्ट पुलिसिंग से जोड़ा। इसके लिए योगी सरकार ने यूपी पुलिस को सीसीटीवी से कनेक्ट करने पर जोर दिया। योगी सरकार की इस पहल के बाद यूपी पुलिस ने स्मार्ट पुलिसिंग के तहत प्रदेश के 321635 स्थानों पर 722161 सीसीटीवी लगवाए। यूपी के शहरों को सुविधायुक्त बनाने के साथ ही सुरक्षा के स्मार्ट प्रबंध भी योगी सरकार की प्राथमिकता में हैं। प्रदेश के शहरों को सुरक्षित बनाने के लिए जहां एक तरफ इंटीग्रेटेड कंट्रोल कमांड सेंटर (आईसीसीसी) के माध्यम से बहुस्तरीय निगरानी की जा रही है, वहीं अपराध पर लगाम लगाने के लिए यूपी पुलिस को स्मार्ट पुलिसिंग से जोड़ा गया। इसके तहत प्रदेश भर में यूपी पुलिस के माध्यम से सीसीटीवी लगाने के साथ इनकी लगातार मॉनिटरिंग की जा रही है। इसके अलावा प्रदेश के थानों को भी सीसीटीवी से जोड़ा गया ताकि प्रदेश की जनता को पारदर्शी न्याय मिल सके। सीएम योगी की पहल पर यूपी पुलिस ने सीसीटीवी से खुद को कनेक्ट किया तो जघन्य अपराधों के खुलासे और अपरधियों की धरपकड़ में सीसीटीवी सारथी बन गये। यूपी पुलिस ने पायलट प्रोजेक्ट के तहत गोरखुपर जोन से इसकी शुरुआत की। यहां पर विभिन्न स्थानों पर जनसहयोग से पुलिस ने 46478 सीसीटीवी लगाए। इसके जरिये गोरखुपर जोन से करीब सौ घटनाओं का खुलासा सीसीटीवी के जरिये हुआ। इनमें 16 डकैती/लूट, 5 हत्या, 4 अपहरण/फिरौती के लिए अपहरण, 3 बलात्कार/छेड़खानी, 34 चोरी/नकबजनी समेत 37 अन्य मामले शामिल हैं। इसके बाद यूपी पुलिस ने अभियान चलाकर मात्र पांच माह में प्रदेशभर में 248116 स्थानों पर 628283 सीसीटीवी लगाए गए। अभियान के दौरान प्रदेश के सात कमिश्नरेट के 79135 स्थानों पर 183561 सीसीटीवी लगाए गए। इनमें सबसे ज्यादा प्रयागराज कमिश्नरेट के 29188 स्थानों पर 56920 सीसीटीवी लगाए गए जबकि दूसरे नंबर पर गौतमबुद्धनगर कमिश्नरेट के 11523 स्थानों पर 31244 सीसीटीवी लगाए गए। वहीं तीसरे नंबर पर कानपुर नगर कमिश्नरेट के 11275 स्थानों पर 30746 सीसीटीवी लगाए गए। इसी तरह प्रदेश के आठ जोन के 168981 स्थानों पर 444722 सीसीटीवी लगाए गए। इन सीसीटीवी के जरिये यूपी पुलिस ने स्मार्ट पुलिसिंग को अपनाते हुए प्रदेश में जघन्य अपराधों के साथ अन्य 1355 मामलों का खुलासा किया है। इनमें 209 डकैती/ लूट/ 82 हत्या, 46 अपहरण/ फिरौती के लिए अपहरण, 32 बलात्कार/ छेड़खानी, 574 चोरी/नकबजनी समेत 412 अन्य मामले शामिल हैं। इनमें गाजियाबाद कमिश्नरेट ने सबसे अधिक डकैती/लूट की 15, गौतमबुद्धनगर ने हत्या के 4 और चोरी/ नकबजनी के 39 मामलों को खुलासा किया। इसी तरह आगरा जोन ने सबसे अधिक डकैती/लूट की 50, मेरठ ने हत्या के 18, आगरा ने अपहरण/ फिरौती के 18, वाराणसी ने बलात्कार/ छेड़खानी के 12, चोरी/ नकबजनी के 179 और 70 अन्य मामलों को खुलासा किया।

शैक्षिक संस्थानों में भी तीसरी आंख से हो रही बेटियों की सुरक्षा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

योगी सरकार महिलाओं, बच्चों और सीनियर सिटीजन की सुरक्षा को लेकर काफी सजग है। इसको लेकर लगातार सख्त कदम उठाए जा रहे हैं। स्कूल जाने वाली बेटियों की सुरक्षा योगी सरकार की प्राथमिकताओं में से एक है, जिसको देखते हुए योगी सरकार ने सेफ सिटी परियोजना के तहत प्रदेश के 17 नगर निगमों और गौतमबुद्धनगर के सरकारीए गैर सरकारी विद्यायलों, कॉलेज, मदरसों, विश्वविद्यालयों के एंट्री और एग्जिट प्वॉइंट को सीसीटीवी से लैस किया है। इसके अलावाए इन शहरों के निजी कोचिंग संस्थानों की भी तीसरी आंख से मॉनिटरिंग की जा रही है। योगी सरकार ने यह निर्णय इन संस्थानों के बाहर लगने वाले अराजकतत्वों के जमावड़े और छेड़खानी की घटनाओं पर लगाम लगाने के लिए लिया है। इतना ही नहीं, योगी सरकार की ओर से निजी कोचिंग संस्थानों में बेटियों की सुरक्षा को लेकर एक गाइड लाइन भी जारी की गयी है। योगी सरकार द्वारा सेफ सिटी परियोजना के तहत 17 नगर निगम और गौतमबुद्धनगर के 2500 विद्यालयों को सीसीटीवी से लैस करने के लिए चिन्हित किया गया। इनमें से 1692 विद्यालयों में सीसीटीवी लगाए जा रहे हैं जबकि शेष में लगाने का काम युद्धस्तर पर चल रहा है। इन संस्थानों में 26568 सीसीटीवी लगाए जा चुके हैं। इनमें 68 मान्यता प्राप्त राजकीय विद्यालय, 646 सहायता प्राप्त विद्यालय और 1786 वित्त विहीन विद्यालय शामिल हैं। इन विद्यालयों के क्लासरूम, कॉरिडोर, प्रवेश एवं निकास द्वार पर सीसीटीवी लगाए गए हैं। वहीं परियोजना के तहत 162 उच्च शैक्षणिक संस्थानों में 5505 कैमरे लगाए गए। इनमें 21 राजकीय डिग्री/पीजी कॉलेज, 85 सहायता प्राप्त डिग्री/पीजी कॉलेज, 49 वित्त विहीन डिग्री/पीजी कॉलेज और 7 राज्य विश्वविद्यालय शामिल हैं। इसमें क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ एवं लखनऊ विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले महाविद्यालय शामिल नहीं हैं। परियोजना के तहत 17 नगर निगम और गौतमबुद्धनगर के 606 कोचिंग संस्थानों को सीसीटीवी लगाने के लिए चिन्हित किया गया है। इनमें 448 कोचिंग संस्थान 17 नगर निगम और 158 कोचिंग संस्थान गौतमबुद्धनगर के शामिल हैं। वहीं 418 कोचिंग संस्थानों में 866 कैमरे लगाए जा चुके हैं जबकि शेष 188 कोचिंग संस्थानों में कैमरे लगाने की प्रक्रिया जारी है। इन सीसीटीवी कैमरों को नगर विकास विभाग द्वारा स्मार्ट सिटी के कंट्रोल रूम से इंटीग्रेट किया जा रहा है। इसके अलावा योगी सरकार की ओर से बालिकाओं की सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम को लेकर गाइड लाइन जारी की गयी, जिसमें कोचिंग संस्थानों को बालिकाओं के आने-जाने के समय से लेकर उनकी सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदारी तय की गयी है। गाइड लाइन में कोचिंग संस्थानों को शाम को एक निश्चित समय के बाद बालिकाओं की क्लास संचालित न किए जाने को लेकर निर्देश दिये गये हैं ताकि बालिकाएं समय से अपने घर पहुंच सकें।

डीएम ने की कर करेत्तर की बैठक

लखीमपुर खीरी। मंगलवार शाम डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने कलेक्ट्रेट में राजस्व कार्यों एवं कर करेत्तर के तहत प्राप्तियो की विभागवार, बिंदुवार मासिक समीक्षा बैठक की, संबंधित को जरूरी निर्देश दिए। डीएम ने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया कि प्रवर्तन की प्रभावी कार्यवाही करते हुए निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष शत.प्रतिशत राजस्व वसूली सुनिश्चित की जाय। डीएम ने कहा कि सभी अधिकारियों को अपने लक्ष्य की कार्ययोजना बनाकर मूर्त रूप देने का निर्देश दिया। जिन विभागों की प्रगति खराब हैए लक्ष्य पूरा नहीं किया है, वह उन्हें लिखित रूप में स्पष्ट करें कि वह लक्ष्य को कैसे पूरा कराएंगे। खराब प्रगति वाले विभाग विशेष अभियान चलाकर अपने लक्ष्यों की पूर्ति सुनिश्चित कराए।

डीएम ने परिवहन, राज्यकर, स्टांप की लक्ष्य के सापेक्ष प्रगति बेहतर ना होने पर नाराजगी जताईए कारण जाना। निर्देश दिए कि विशेष अभियान चलाकर लक्ष्यों की पूर्ति सुनिश्चित करें। नपाप मोहम्मदी की ईओ से लक्ष्य के सापेक्ष राजस्व प्राप्ति कम होने का कारण जानाए निर्देश दिए कि संबंधित को नोटिस जारी करते हुए राजस्व प्राप्ति करना सुनिश्चित कराएं, इसमें किसी प्रकार की शिथिलता बर्दाश्त नहीं होगी।

डीएम ने संबंधित अधिकारियों का आह्वान करते हुए कहा कि यह बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही एवं शिथिलता क्षम्य में नहीं होगी। जिन विभागीय अधिकारियों के द्वारा अपने राजस्व लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं की जाएगीए उनके विरुद्ध कार्रवाई प्रस्तावित की जाएगी। डीएम ने वाणिज्य करए स्टांप एवं रजिस्ट्रेशन, आबकारी, परिवहन, विद्युत देयए नगर विकास, खनन, मंडी, वन, सिंचाई, सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक लखीमपुर व गोला, विधिक माप विज्ञान के अफसरों से मासिक लक्ष्य की प्रगति, क्रमिक लक्ष्य की प्रगति गत वर्ष की उपलब्धि के सापेक्ष वृद्धि प्रतिशत की गहन समीक्षा कर जरूरी निर्देश दिए। बैठक में एडीएम संजय कुमार सिंह, सभी एसडीएम व तहसीलदार सहित सभी संबंधित विभागों के अफसर मौजूद रहे। डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने शनिवार को कलेक्ट्रेट सभागार में राजस्व विभाग के गत माह की समीक्षा की। राजस्व न्यायालयों में लंबित वादों के त्वरित एवं गुणवत्तायुक्त निस्तारण को लेकर निर्देश दिए। डीएम ने कहा कि राजस्व न्यायालयों में लंबित वादों का त्वरित निस्तारण किया जाए।

ओबीसी बेटियों की शादी अनुदान योजना में मिलेगा अनुदान, करें आवेदन

लखीमपुर खीरी। जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग द्वारा अन्य पिछड़े वर्ग (अल्पसंख्यक पिछड़े वर्ग को छोड़कर) गरीब व्यक्तियों की बेटियों की शादी के लिए अनुदान योजना संचालित है। शादी के लिए आवेदन करने को विभागीय वेबसाइट में आधार पर आधारित प्रमाणीकरण की नई व्यवस्था ;ई.केवाईसीद्ध में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गए हैं। उक्त जानकारी जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी अभय कुमार सागर ने दी।

इस प्रक्रिया के तहत आवेदक द्वारा ऑनलाइन आवेदन भरने से पूर्व अपने आधार कार्डए पुत्री का आधार कार्डए आधार कार्ड से लिंक मोबाइल नम्बर तथा जाति प्रमाण पत्र, आय प्रमाण पत्र, बैंक खाते की पासबुक एवं शादी का कार्ड आदि अभिलेख होना जरूरी है। आवेदक (माता-पिता) अभिभावक शादी अनुदान पोर्टल पर अपने रजिस्ट्रेशन हेतु अपना आधार नंबर अंकित कर आधार अभिप्रमाणन की प्रक्रिया शुरू करेगा। शादी अनुदान पोर्टल पर आवेदक तथा पुत्री दोनों का आधार आधारित ई.केवाईसी सुनिश्चित किया जायेगा। आधार का अभिप्रमाणन पूर्ण होने के उपरान्त प्राप्त रजिस्ट्रेशन नम्बर एवं मोबाइल पर प्राप्त: ओटीपी के माध्यम से लागिन कर आवेदन भरने की प्रक्रिया शुरू की जायेगी।

वित्तीय वर्ष 2023.24 में पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग द्वारा संचालित अन्य पिछड़े वर्ग (अल्पसंख्यक पिछड़े वर्ग को छोड़कर) के गरीब व्यक्तियों की पुत्रियों की शादी हेतु अनुदान योजनान्तर्गत 592 व्यक्तियो को लाभान्वित कराया जा चुका है। अन्य पिछड़े वर्गों के इच्छुक एवं पात्र व्यक्तियो के पुत्री की शादी 90 दिवस की अवधि में हुयी है अथवा आगामी 90 दिवस में होनी सुनिश्चित है, वह उक्त बेवसाईटी पर योजनान्तर्गत ऑनलाइन आवेदन कर योजना का लाभ प्राप्त कर सकते है।

किसानों का शोषण बर्दाश्त नहीं किया जाएगा, 47 करोड़ 94 लाख रुपए भुगतान अभी बकाया

शाहजहांपुर। नवीन कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह के साथ चीनी मिलों एवं विभागीय अधिकारियों की समीक्षा बैठक संपन्न हुई। जिलाधिकारी महोदय ने पराई सत्र प्रारंभ होने तथा बकाया भुगतान के विषय में जानकारी ली द्य उन्हें बताया गया कि तिलहर चीनी मिल का पेराई सत्र 24 नवंबर से प्रारंभ होना है द्य मकसूदापुर चीनी मिल का पिछले वर्ष का 47 करोड़ 94 लख रुपए भुगतान अभी बकाया है। मकसूदापुर चीनी मिल के प्रतिनिधि ने अवगत कराया की 20 से 25 दिसंबर के बीच पिछले वर्ष के बकाया भुगतान को किसानों के खाते में प्रेषित कर दिया जाएगा। निगोही, रोजा, तिलहर तथा पुवाया चीनी मिलो का लगभग संपूर्ण भुगतान किया जा चुका है।

जिलाधिकारी ने उपस्थित अधिकारियों तथा कर्मचारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि किसानों का शोषण बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं किया जाएगा द्य उन्होंने सुरक्षा की व्यवस्था को चाक चौबंद रखने के निर्देश दिए, इस हेतु उन्होंने प्रत्येक चीनी मिल को एक सुरक्षा अधिकारी नियुक्त करने के निर्देश दिए द्य उन्होंने कहा कि सुरक्षा मॉकड्रिल भी समय-समय पर करते रहे। उन्होंने निर्देश दिए कि गन्ना ढुलाई करने वाले समस्त वाहनों पर रिफ्लेक्टर लगे होना अनिवार्य हैं। इस कार्य को युद्ध स्तर पर करना सुनिश्चित करें। डीएम ने कहा कि बिचौलिए तथा दलालों के वर्चस्व को खत्म करना अनिवार्य है, इनकी वजह से किसानों का वृहद स्तर पर शोषण होता है। इस तरह के लोगों पर कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। बैठक में जिलाधिकारी, जिला गन्ना अधिकारी तथा समस्त चीनी मिलों के प्रतिनिधि तथा अधिकारी मौजूद रहे ।

शिक्षकों की मासिक बैठक में कार्यों को पूर्ण करने पर बल दिया

सकल की बैठक को संबोधित करते प्रेरणा सारथी अनुपम सिंह गौर।

गुरसहायगंज (कन्नौज)। न्याय पंचायत समधन देहात की मासिक संकुल स्तरीय बैठक प्राथमिक विद्यालय इस्माइलपुर में संपन्न हुई। जिसमें मुख्य अतिथि प्रेरणा सारथी अनुपम सिंह गौर और सम्राट सिंह वैश्य रहे। बैठक का संचालन नोडल संकुल शिक्षक संजीव राजपूत ने किया। मुख्य अतिथि अनुपम सिंह गौर ने बताया कि निपुण ऐप से नियमित बच्चों का आंकलन करते रहें। सभी शिक्षक जल्द से जल्द निपुण विद्यालय बनाएं। जिससे हमारा जनपद निपुण जनपद हो सके। समस्त शिक्षक संकुल दिसंबर तक अपने विद्यालयों को निपुण बनाने हेतु फाइव प्वाइंट टूलकिट का प्रयोग करें। इसके साथ साथ निपुण लक्ष्य एप के महत्व को विस्तार से बताया। नोडल शिक्षक संकुल संजीव राजपूत ने कहा निपुण लक्ष्य एप से बच्चों का स्पॉट असेसमेंट प्रतिदिन करते रहे। बच्चों को अभिभावकों की उपस्थिति में सम्मानित किया जाए। प्रिंट रिच वातावरण, मैथ किट, पुस्तकालय/ लर्निंग कार्नर, एक्टीविटी वाल, निपुण तालिका, शिक्षण योजना, शिक्षक डायरी और दीक्षा ऐप पर प्रतिदिन आंकलन करें।

गाजे बाजे के साथ सौनहा व ध्यानपुर पहुंची विकसित भारत संकल्प यात्रा, जोरदार स्वागत

- **जनजातीय क्षेत्र में वंचित, जरूरतमंदो को योजनाओं का लाभ दिलाना यात्रा का मकसद**
- **22 को बीएसए की अगुवाई में सूरमा एवं पुरैना पहुंचेगी यात्रा**

लखीमपुर खीरी। विकसित भारत संकल्प यात्रा सातवें दिन मंगलवार को नोडल अफसर डीएसओ अंजनी कुमार सिंह की अगुवाई में बाजे गाजे के साथ पलिया ब्लॉक के जनजातीय क्षेत्र सौनहा व ध्यानपुर पहुंचीए जहा आईईसी रथ का पारंपरिक रूप से स्वागतएअभिनंदन हुआ। सौनहा व ध्यानपुर गांव में आयोजित कार्यक्रम में डीएसओ अंजनी कुमार सिंह व पीओ यूके सिंह ने ष्जनजातीय गौरव और संघर्ष के प्रतीक भगवान बिरसा मुंडा के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए आजादी के आंदोलन में जनजातीय समाज के संघर्ष को याद किया। डीएसओ ने उपस्थित जनसमूहों को विकसित राष्ट्र बनाने में योगदान देने की शपथ दिलाई।

डीएसओ ने बताया कि सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सीधे लाभार्थी तक पहुंचाने और देश के विकास में सक्रिय हितधारक बनने के लिए नागरिकों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से रोस्टर के मुताबिक जनजाति क्षेत्र में यात्रा निकाली जा रही। यह संकल्प यात्रा, सैचुरेशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने का माध्यम बनेगी। यात्रा के माध्यम से केंद्र व राज्य सरकार के लोक कल्याणकारी योजनाओं का लाभ सभी पात्रों को दिलाना है। यात्रा के दौरान आम आदमी के जीवन में बदलाव लाने वाले केंद्र व राज्य सरकार के नवाचारी प्रयासों की भी जानकारी दी। परियोजना अधिकारी यूके सिंह ने कहा कि विकसित भारत के संकल्प का एक प्रमुख आधार है।

डीएम ने बेटियों, महिलाओं से हक की बात की

शाहजहांपुर। मंगलवार को कलेक्ट्रेट में डीएम कार्यालय में महिला कल्याण विभाग द्वारा कार्ययोजना के अंतर्गत हक की बात कार्यक्रम सुबह दस बजे से ग्यारह बजे तक कराई गई। हक की बात कार्यक्रम में डीएम के आफिस टेलीफोन नंबर 05842-281540 पर दस शिकायतें स्कूल की छात्राओ, पीडित महिलाओं की आई। एक शिकायत परिवारिक लाभ योजना, वृद्धावस्था पेंशन योजना, बाल सेवा योजना सहित टोल फ्री नंबर 1098, 112, 1090, 181 की जानकारी ली गई। डीएम ने कार्यक्रम में यौन हिंसा, लैंगिक असमानता, घरेलू हिंसा, कन्या भ्रूण हत्या कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न तथा दहेज हिंसा से पीड़ित महिलाओ व किशोरियो के संरक्षण प्रश्न उत्तर, सुरक्षा, सुझाव पर चर्चा की। इस दौरान कार्यक्रम में जिला प्रोबेशन अधिकारी गौरव मिश्रा सहित आफिस स्टाफ मौजूद रहा।

क्विक न्यूज

पत्नी के मायके से न लौटने पर पति ने की आत्महत्या

बरेली। भाई दूज पर मायके गई पत्नी ने ससुराल वापस लौटने से इनकार कर दिया पति रोजाना कॉल पर पत्नी से बात करने का प्रयास करता रहा लेकिन ससुराल वाले पत्नी से उसकी बात नहीं कराते तनाव में आकर उसने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा मृतक के परिजनों ने थाने में तहरीर देखकर ससुराल पक्ष के लोगों पर कार्रवाई की मांग की। कैंट के कांधरपुर निवासी 22 वर्षीय सनी पुत्र हेमराज का विवाह दो साल पहले खनपुरा निवासी पूजा के साथ हुआ था उनका एक बेटा है पोस्टमार्टम हाउस पर मौजूद मृतक की मां सीता ने बताया कि भाई दूज पर उनका बेटा सनी पत्नी को लेकर अपनी ससुराल गया था मायके पहुंचने के बाद पूजा ने साथ आने से इनकार कर दिया घर आकर सनी रोज कॉल पर पत्नी से बात करने का प्रयास कर रहा था, लेकिन ससुराली उसकी पूजा से बात नहीं करा रहे थे ।तनाव में आकर उसने घर में ही फांसी लगाकर जान दे दी शव लटका देख परिवार वालों की चीख निकल गई आसपास के तमाम लोगों की भीड़ जमा हो गई पति की मौत की सूचना पर पूजा अपनी ससुराल पहुंची सूचना पर पहुंची पुलिस ने जांच पड़ताल के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया सीता ने बेटे के ससुराल वालों के खिलाफआत्महत्या के लिए उकसाने की तहरीर दी है।

तांत्रिक पर लगाया पुत्र की बलि देने का आरोप

बरेली। पिता ने आरोप लगाया कि गांव में एक तांत्रिक ने अपने दो साथियों के साथ मिलकर चाकू से गला काटकर उसके बेटे की बलि चढ़ा दी। पुलिस ने अज्ञात में हत्या का मुकदमा दर्ज करने के बाद 13 दिन बाद भी पुलिस घटना का खुलासा नहीं किया तब आज ग्रामीणों के साथ पिता ने एसएसपी ऑफिस में शिकायती पत्र देकर हत्या का जल्द खुलासा करने की मांग की। हाफिजगंज थाना क्षेत्र के कुंवरपुर बंजरिया निवासी राकेश कुमार ने बताया कि आठ नवंबर को घर से गांव के ही तीन लड़के 06.33 बजे उनके 14 साल के बेटे आशीष उर्फटिंकू को घर से बुलाकर ले गए थे उनका बेटा घर नहीं पहुंचा तो उन्होंने उसकी तलाश शुरू कर दी अगली रात एक बजे आशीष का शव गांव के बाहर खून से सना हुआ पड़ा मिला पास में तंत्र मंत्र का सामान भी मिला था। तीनों आरोपियों ने अंध विश्वास के में उनके बेटे की हत्या चाकू से गला काटकर बलि दी थी। पुलिस अज्ञात में हत्या का मुकदमा दर्ज करने के बाद जांच पड़ताल कर रही है लेकिन 13 दिन बीत जाने के बाद भी वह किसी नतीजे पर नहीं पहुंची।

खस्ताहाल मकान का छज्जा गिरा, युवक की मौत

बरेली। रात मे खाना खाकर टहलने निकले एक युवक पर पास स्थित खस्ताहाल मकान का छज्जा गिर पड़ा जिससे उसकी मौत हो गई पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा ।सिरौली थाना क्षेत्र के वार्ड 11 निवासी रिजवान पुत्र इकबाल की बीती रात इलाज के लिए जिला अस्पताल लाते समय रास्ते में मौत हो गई मृतक के घर वालों ने बताया कि रिजवान कल रात खाना खाने के बाद टहलने के लिए घर से बाहर गया था कुछ दूर चलने के बाद रामाशंकर के खस्ताहाल मकान का छज्जा नीचे गिर पड़ा और रिजवान उसके मालवे की चपेट में आकर गंभीर रूप से घायल हो गया सूचना मिलते ही घर वाले मौके पर पहुंचे और उसे इलाज के लिए जिला अस्पताल लाये लेकिन उसकी रास्ते में मौत हो चुकी थी और जिला अस्पताल पहुंचते ही डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया घर वालों ने बताया कि रमाशंकर से गांव के लोग कई बार खस्ताहाल मकान का छज्जा गिरवाने की बात रमाशंकर से कह चुके थे लेकिन उसने छज्जा नहीं गिरवाया जिसके चलते रिजवान की जान चली गई ।

छत से गिरकर घायल महिला ने दम तोड़ा

बरेली। छत पर सफाई करते समय नीचे गिरकर घायल हुई एक महिला की इलाज के दौरान मौत हो गई लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। बिथरी चौनपुर थाना क्षेत्र में नरियावल स्थित एक फैक्ट्री में काम करने वाले असम के चिरगी जिले के कुरसाघाटी थाने के गांव कोकराझार निवासी गोकुल बर्मन की 40 वर्षीय पत्नी विशाखा बर्मन की बीती रात इलाज के दौरान जिला अस्पताल में मौत हो गई मृतका के घर वालों ने बताया कि दो बच्चों की मां विशाखा दीपावली से पहले 10 नवंबर को अपने घर में सफाई कर रही थी इसी दौरान में छत से नीचे गिर गई और गंभीर रूप से घायल हो गई उसे इलाज के लिए एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां से बीती रात उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां उसकी कुछ देर बाद ही मौत हो गई।

विकसित भारत संकल्प यात्रा का आयोजन 22 से 27 नवंबर तक

संडीला (हरदोई)। विकसित भारत संकल्प यात्रा का आयोजन 22 नवंबर से 27 नवंबर तक किया जाएगा। विकसित भारत संकल्प यात्रा के अंतर्गत 22 नवंबर को प्रातः 10 बजे से 12.30 बजे से ग्राम पंचायत मलेहरा में और 2 बजे से सांय 4.30 बजे तक ग्राम लूमामऊ में इसका आयोजन किया जाएगा जिसमें सांसद अशोक कुमार रावत, विधायक अलका अर्कवंशी, सदस्या विधान परिषद अशोक अग्रवाल, ब्लाक प्रमुख आर्ती गुप्ता के अलावा जिलाधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी एवं ब्लाक स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहेंगे। एक प्रेस वक्तव्य में यह जानकारी दी गयी है।

क्राकरी की दुकान में लगी आग से लाखों का नुकसान

बरेली। रात के समय क्राकरी की एक दुकान में लगी आग से दुकान में रखा लाखों का सामान नष्ट हो गया सूचना मिलने पर पहुंची फायर ब्रिगेड की टीम ने आग पर काबू पाया ।कोतवाली थाना क्षेत्र में शास्त्री मार्केट स्थित क्वालिटी क्राकरी की दुकान में बीती रात लगी आग से लाखों का सामान जल गया दुकान के मालिक रफत अली ने बताया कि वह सोमवार की रात रोजाना की तरह दुकान बंद करके अपने घर गया था लेकिन देर रात सोते समय उसे बाजार के चौकीदार रामशरण मिश्रा ने फोन करके जानकारी दी थी उसकी दुकान के पास स्थित बिजली के एक ट्रांसफार्मर में लगी आग से उसकी दुकान में भी आग लग गई है और उसमें से धुआं निकल रहा है चौकीदार ने दुकानदार को सूचना दी और खुद सूचना देने के लिए पास स्थित पुलिस चौकी पहुंचा और पुलिस को सूचना दे दी कुछ देर बाद फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंच गई वहीं दुकानदार की मदद से दुकान में लगी आग को बुझा दिया लेकिन तब तक लाखों का सामान नष्ट हो चुका था ।

डीएपी को लेकर किसानों में मची है तौबा, यह कैसा

बरेली। आंवला तहसील क्षेत्र की सहकारी समितियां पर खाद को लेकर हाय तौबा मची हुई है। अल सुबह से ही लाइन में लगने के बाद किसान मायूस होकर वापस लौट रहे हैं। संबंधित कर्मचारी मैन पावर की कमी बताकर किसने की समस्याओं से अपना पल्ला झाड़ रहे हैं। हालांकि एसडीएम आंवला ने दो टूक निर्देश दिए हैं, कि अतिरिक्त स्टाफ लगाकर खाद का वितरण किया जाए, जिससे रवि की बुवाई में किसानों को परेशानी का सामना न करना पड़े। आंवला की पश्चिमी व पूर्वी सहकारी समितियां पर दिन निकलते ही किसान लाइन में लग जाते हैं । घंटों खड़े रहने के बाद भी खाद न मिलने पर किसानों ने इसकी जानकारी एसडीएम गोविंद मौर्य को दी। उन्होंने मौके पर जाकर किसानों को समझने के साथ ही समिति के सचिवों को व्यवस्था सुधारने का निर्देश दिया। पश्चिम सहकारी समिति के सचिव महिपाल सिंह ने स्टाफ कम होने की बात कही तो उन्होंने इसकी व्यवस्था अतिरिक्त करने को कहा। व्यवस्था संभालने के लिए उन्होंने स्थानीय पुलिस को भी निर्देश दिया।

दो मोटरसाइकिलें टकराईं, युवक की मौत

बरेली। दो मोटरसाइकिलों के बीच हुई टक्कर में घायल हुए मजदूर की इलाज के लिए जिला अस्पताल लाते समय मौत हो गई देवरनिया थाना क्षेत्र के गांव बकेनिया में बीती शाम हुई सड़क दुर्घटना में पीलीभीत के जहानाबाद थाने के गांव जैतपुर निवासी 35 वर्षीय अफसर अली पुत्र शाह अली की मौत हो गई मृतक के घर वालों ने बताया कि अफसर अली कल शाम को अपने छोटे बेटे के साथ रिछा जाने के लिए मोटरसाइकिल पर घर से निकला था लेकिन बकेनिया गांव के पास सामने से आ रही दूसरी मोटरसाइकिल ने उसकी बाइक को टक्कर मार दी जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया और बाइक पर उसके साथ बैठे बच्चे को मामूली चोट आई दुर्घटना के बाद स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना दी जिसने उसे इलाज के लिए अस्पताल ले जाने की कोशिश की लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी, उसके घर वालों को दी जो मौके पर पहुंचे और लाश की पहचान कर ली पुलिस ने लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेजा ।

स्वामी प्रसाद मौर्य द्वारा की गई अशोभनीय टिप्पणी के विरोध में किया प्रदर्शन

बरेली। हिंदू धर्म के देवी देवी देवताओं पर अशोभनीय टिप्पणी करने वाले स्वामी प्रसाद मौर्य के खिलाफ प्रदर्शन करते हुए हिंदू वाहिनी संघ की महिला प्रकोष्ट की राष्ट्रीय अध्यक्ष राखी शुक्ला के नेतृत्व में महामहिम राज्यपाल को संबोधित डीएम कार्यालय में एसडीएम को ज्ञापन सोंपा। हिंदू वाहिनी संघ की महिला प्रकोष्ट की राष्ट्रीय अध्यक्ष राखी शुक्ला ने बताया उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य के द्वारा समय-समय पर भिन्न-भिन्न मंचो से हिन्दू धर्म के देवी देवताओं पर गलत व अशोभनीय टिप्पणी करते रहते हैं एवं पूर्व में कई बार हमारे पवित्र धार्मिक ग्रहन्थ श्री रामचरितमानस को भी अपशब्द कहते हुए उसकी प्रतियां भी फाड़ चुके है। जिससे हिन्दू धर्म को मानने वाले लोगों की आस्था को ठेस पहुंचती है जिससे समाज में काफी रोष व्यक्त है। सनातन धर्म मानने वाले लोगों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए स्वामी प्रसाद मौर्य के विरूद्ध ठोस कार्यवाही करने की मांग की है। ज्ञापन देने वालों में हरिओम शर्मा, पूजा दुवे, डॉ नीतू सिंह, अभय उदय प्रताप सिंह, मंजू चौहान, पुष्पा शर्मा, कुशल अग्रवाल, अक्षय सिंह, भूपन्द्र सिंह, अजीत शर्मा, अमन कुमार, आशू श्रीवास्तव, सोनू, रीतू सिंह, रुद्र सिंह आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सभासदों ने सांसद को सौंपा शिकायती पत्र

सांसद को शिकायती पत्र सौंपते सभासदों का प्रतिनिधि मण्डल।

- **कोटेदार पर लगाया झूठा मुकदमा दर्ज कराने का आरोप**

कन्नौज। नागरिकों की शिकायत पर सभासद प्रतिनिधि द्वारा महिला कोटेदार की मनमानी की शिकायत मुख्यमंत्री पोर्टल पर दर्ज करवाना उस समय महंगा पड़ गया जब महिला कोटेदार ने सभासद प्रतिनिधि के विरुद्ध छेड़छाड़ का मुकदमा दर्ज करवा दिया। सभासद प्रतिनिधि के उत्पीड़न के विरोध में सभासदों के प्रतिनिधिमंडल ने सांसद से मुलाकात कर शिकायत पत्र सौंपा।

मंगलवार को वार्ड नंबर 21 हमीद नगर सभासद प्रतिनिधि धर्मेंद्र कुमार गुप्ता पुत्र रामऔतार गुप्ता ने सभासदों के साथ सांसद सुब्रत पाठक से मुलाकात कर शिकायती पत्र सौंपने के उपरांत बताया कि बार्ड में सरकारी राशन वितरण में कोटेदार द्वारा की जा रही मनमानी की शिकायत पर उसने महिला कोटेदार को मानक अनुसार कार्य करने की बात कही। जिस पर महिला कोटेदार अभद्रता पर आमादा हो गई। जिसपर वह वहां से चला आया और मुख्यमंत्री पोर्टल पर मामले की शिकायत कर दी। इसी बात से नाराज होकर महिला कोटेदार ने स्थानीय कोतवाली में उसके विरुद्ध छेड़छाड़ का मुकदमा दर्ज करवा दिया। बताया कि बीते दिन उन्होंने जिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र देकर अवगत कराया था। सांसद सुब्रत पाठक ने दूरभाष पर कोतवाल से वार्ता कर बगैर जांच किये मुकदमा दर्ज करने पर नाराजगी जताई।

दो लोग हुए अकाल मृत्यु का शिकार

संडीला (हरदोई)। दो अलग अलग हुए हादसों में दो लोगों की अकाल मृत्यु को गयी। पहला हादसा कोतवाली संडीला के अंतर्गम सरांय मरुखपुर में हुआ। यहां एक व्यक्ति की तालाब में डूब कर मौत हो गयी। बताया जाता है कि ग्राम निवासी ओम प्रकाश राजगीर था और वह घर से काम करने की बीत कहकर निकला था। जब वह देर रात तक वापस नहीं लौटा तो घरवालों ने उसकी तलाश शुरू की। दूसरे दिन उसका शव गांव के बाहर रास्ते में पड़ने वाले तालाब में उतराता हुआ मिला, तो हड़कंप मच गया। समझा जाता है कि राजगीर ओमप्रकाश काम करके वापस लौटा होगा और घर जाने से पहले उसने संभवता तालाब के किनारे हाथ पैर इत्यादि धोने के दौरान उसका पैर फिसल गया और वह गहरे पानी में चला गया। शाम का समय होने के कारण किसी ने हादसे होते हुए नहीं देखा और इस कारण उसकी जान चली गयी। मृतक के परिजन के अनुसार उनकी किसी से कोई विवाद इत्यादि भी नहीं है। इस घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा। इस संबंध में प्रभारीनिरीक्षक का कहना है कि पोस्टमॉर्टम की रिपोर्ट आने के बाद ही आगे की कोई कार्रवाई की जाएगी। दूसरा हादसे में एक युवक काम करते हुए निर्माणाधीन टावर से गिरकर अपनी जान गवां बैठा। बताया जाता है कि ग्राम बेंहटा मुजावर के पास हाई टेंशन लाइन के टावर निर्माण का कार्य चल रहा है। यहां पश्चिम बंगाल प्रांत के जनपद गाजोल के ग्राम राय खलदगी निवासी 30 वर्षीय तैमूर शेख एक प्राईवेट कंपनी के माध्यम से हार्ट टेंशन लाइन के टावर निर्माण के कार्य में लगा था। बताते हैं कि अचानक कार्य के दौरान तैमूर शेख का पैर टावर से फिसल गया और वह नीचे आ गिरा। लगभग 40 फीट से गिरने के कारण वह गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे उठाकर सीएचसी संडीला लाया गया जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गयी। मृतक के भाई आलम शेख जो कि भाई के साथ ही काम करते हैं उन्होंनें बताया कि मृतक आलम शेख के परिवार में उसकी पत्नी और चार माह का एक बच्चा है।

जल निगम लैब में स्कूली बच्चों ने खुद से जांची पानी की गुणवत्ता

बरेली। जैसा कि कहा गया है कि ष्जल बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है और जल है तो ही जीवन है। इसी को साकार बनाते हुए स्कूली बच्चों ने सोमवार को अनूठे अंदाज में पेंटिग्स बनाईं और जल संचयन व संरक्षण का संदेश दिया। छात्रों ने जल पर आधारित ढेर सारी खूबसूरत रंगोली भी बनाईं। जल जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बच्चों ने गांव में रैली निकाली और ष्जल है तो कल है के नारे भी लगाए। मौका था बरेली में नमामि गंगे एवं ग्रामीण जलापूर्ति विभाग की अनूठी पहल जल ज्ञान यात्रा के आयोजन का। जहां सैकड़ों स्कूली बच्चों ने हिस्सा लेते हुए जल जीवन मिशन की नथपुर पेयजल परियोजना का भ्रमण किया। घर घर तक शुद्ध पेयजल की उपयोगिता समझने के साथ ही छात्रों ने अपने हाथों से पानी की गुणवत्ता भी जांची। बरेली जल निगम (ग्रामीण) की अधिशासी अभियंता कुमकुम गंगवार ने हरी झंडी दिखाकर जल ज्ञान यात्रा को रवाना किया। स्कूली बच्चों को सबसे पहले नथपुर पेयजल परियोजना ले जाया गया और हर घर जल योजना की जानकारी दी गई। छात्रों ने ग्रामीणों तक पहुंचाई जा रही शुद्ध पेयजल सप्लाई की प्रक्रिया को देखा। इसके साथ ही स्कूली बच्चों ने पम्प हाउस व क्लोरिनेशन रूम देखा और उसके फायदे भी जाने। जल निगम की लैब में स्कूली बच्चों को पेयजल जांच की प्रक्रिया दिखाने के साथ ही भूजल, ग्रे वाटर का उपचार और अन्य संबंधित मुद्दों की जानकारी दी गई। स्कूली बच्चों ने यहां अपने हाथों से पेयजल की गुणवत्ता भी जांची। स्कूली बच्चों ने नथपुरा गांव में जल जागरूकता रैली भी निकाली। बच्चों को नुक्कड़-नाटक से जल जीवन मिशन की हर घर जल योजना को समझाया गया और ग्रामीणों को मिल रहे लाभ की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गई।

बस और बोलेरो की भिड़ंत में एक बच्चे समेत पांच की दर्दनाक मौत

- एनएच-35 में रैपुरा थाना क्षेत्र के बगरेही गांव के पास भीषण सड़क हादसा
- छह लोग गंभीर रूप से घायल, अस्पताल में भर्ती
- मृतकों व घायलों में अधिकांश मध्य प्रदेश के

संवाददाता। चित्रकूट

उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग में रैपुरा थाना क्षेत्र के बगरेही गांव के पास कर्वी से प्रयागराज की ओर जा रहीं उत्तर प्रदेश परिवहन निगम की जनरथ बस और विपरीत दिशा से आ रही बोलेरो के बीच आमने-सामने की हुई जोरदार भिड़ंत में बच्चे समेत पांच यात्रियों की दर्दनाक मौत हो गई है, जबकि 6 लोग गंभीर रूप से घायल हो गये। घटना की जानकारी मिलते ही डीएम-एसपी ने मौके पर पहुंच एंबुलेंस से घायलों को इलाज के लिए रामनगर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र और जिला अस्पताल भेजवाया। इसके अलावा पुलिस मृतकों और घायलों की शिनाख्त में जुटी हुई है। अधिकांश घायल और मृतक मध्य प्रदेश के निवासी बताए जा रहे हैं।

जानकारी के मुताबिक उत्तर प्रदेश परिवहन निगम की जनरथ बस यूपी -78 /एफ्टी 7912 चित्रकूट जिला मुख्यालय कर्वी से प्रयागराज के लिए जा रहीं थी। वहीं यात्रियों से भरी बोलेरो एमपी-35/ सीए 3856 प्रयागराज से चित्रकूट की ओर आ रहीं थी। इसी दौरान राष्ट्रीय राजमार्ग-35 में जिले के रैपुरा थाना क्षेत्र के बगरेही गांव के पास रोडवेज बस और बोलेरो के बीच आमने-सामने की जोरदार टक्कर हो गई।

घटना की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंचे डीएम अभिषेक आनंद और एसपी वृंदा शुक्ला ने एम्बुलेंस बुलाकर घायलों को इलाज के लिए जिला अस्पताल और रामनगर अस्पताल में भर्ती कराया। जबकि गंभीर रूप से घायल तीन लोगों को प्रयागराज मेडिकल कालेज के लिए रेफर किया गया।

जिलाधिकारी ने किया पर्यटन विकास के कार्यों का निरीक्षण

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनंद ने मंगलवार को यूपीटी, रामघाट, बरहा के हनुमान, यात्री सुविधा स्थल पर हो रहे निर्माण कार्यों का औचक निरीक्षण किया।

जिलाधिकारी ने यूपीटी चौराहे पर बन रहे फाउंटेन के संबंध में उन्होंने क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी को निर्देशित किया कि आर्किटेक्ट से कहे की इसे बढ़िया बनाएं। उन्होंने यह भी निर्देशित किया कि फाउंटेन पर जालीदार स्टोन लगवाएं। बोरिंग का कार्य व बिजली का कनेक्शन भी कराएं। उन्होंने क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी को निर्देशित किया कि म्यूरल वॉल को भी जल्द से जल्द पूर्ण कराएं। उन्होंने अधिशासी अधिकारी कर्वी को निर्देशित किया कि चौराहे पर जो अतिक्रमण है उसे हटाए जिससे कि इसका सौंदरीकरण हो सके। उन्होंने कहा कि चौराहों का सुंदरीकरण व सेल्फी प्वाइंट भी अच्छी होनी चाहिए। उन्होंने अधिशासी अधिकारी को निर्देशित किये कि जो होर्डिंग लगाई गई है उसे हटाए एवं कहा कि टेंडर के माध्यम से होर्डिग लगेगी, जिससे सरकार की आई में वृद्धि होगी। रामघाट पर बना रहे 11.50 मी की ऊंचाई गेट बन रहे गेट के संबंध में उन्होंने कहा कि जो आर्किटेक्ट के द्वारा दिया गया है उसी के अनुसार स्टोन भी लगवाएं।

आयुक्त की अधिसूचना के साथ सख्त हुआ खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन

- नगर के बड़े मार्ट सहित कई जगह छापामारी हुई तेज
- खाद्य पदार्थों की जांच के लिए सचल दल सक्रिय

संवाददाता। कालपी, जालौन

हाल ही में आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन लखनऊ द्वारा जारी अधिसूचना के जरिए हलाल प्रमाणन युक्त खाद्य पदार्थों के उत्पादन बिक्री आदि पर लगी रोक के चलते स्थानीय खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग सख्त हो गया है इसी क्रम में मंगलवार को जिलाधिकारी के निर्देशन पर विभागीय सचल दलों ने मुख्यालय सहित जनपद के कई स्थानों पर बड़े मार्ट और अन्य प्रतिष्ठानों में छापेमारी कर जांच पड़ताल की सूत्रों की माने तो उन्हें इस छापेमारी में किसी भी तरह के हलाल प्रमाणन युक्त खाद्य पदार्थ नहीं मिले हालांकि अधिकारियों का कहना है कि उनका छापामारी अभियान आगे जारी रहेगा।

बताते चलें कि पिछले दिनों युक्त खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन लखनऊ उत्तर प्रदेश में 18 नवंबर 2023 को अधिसूचना जारी की थी जिसके तहत प्रदेश में हल प्रमाण युक्त खाद्य पदार्थों के उत्पादन भंडारण और बिक्री पर पूरी तरह से रोक लगा दी थी इसी क्रम में सहायक आयुक्त खाद्य एवं सुरक्षा औषधि प्रशासन डॉ. जतिन कुमार के निर्देशन में मंगलवार को व्यापक स्तर पर छापेमारी के लिए अलग-अलग टीम में भेजी गई जिन्होंने नगर मुख्यालय के डी मार्ट रिलायंस शॉप रिलायंस स्मार्ट प्वाइंट हिंदुस्तान लीवर फैक्ट्री सहित जनपद के अन्य स्थानों पर संचालित प्रतिष्ठानों में छापेमारी कर प्रतिबंधित खाद्य पदार्थ को लेकर बारीकी से जांच पड़ताल की जालौन नगर स्थित संतोष सब्जी मंडी मोहम्मद मुखराम दिनेश चंद्र राठौर जितेंद्र त्रिपाठी कालपी अंकित गुप्ता आता आशीष कुमार कालपी आदि के प्रतिष्ठानों में जांच पड़ताल की।

ढाई आखर प्रेम सांस्कृतिक यात्रा ने बहाई प्रेम और भाईचारे की लहर

उरई, जालौन। वीरों और वीरांगनाओं की धरती बुंदेलखंड के जनपद जालौन में इप्टा द्वारा निकाली जा रही राष्ट्रीय सांस्कृतिक यात्रा के चौथे दिन आज मंगलवार को ग्राम हरदोई गूजर में यात्रा का जत्था उस स्थान पर पहुंचा जहां कभी अंग्रेजों ने एक साथ 18 लोगों को फांसी के फंदे पर लटका दिया था इस ऐतिहासिक स्थल पर पहुंचने से पूर्व ग्रामीणों के साथ विचार साझा हुए तो वहीं कलाकारों द्वारा प्रस्तुत नुक्कड़ नाटक और लोक गायन ने ग्राम वासियों को जनपद के इतिहास की जानकारी के साथ-साथ प्रेम और सौहार्द के रंगों में डुबो दिया इस दौरान जगह-जगह यात्रा के जत्थे को ग्रामीणों द्वारा खुले दिल से स्वागत सत्कार कर अपनत्व का एहसास कराया। ग्राम मिनौरा स्थित घनाराम महाविद्यालय से प्रारंभ हुई चौथे दिन की यात्रा का अगला पड़ाव ग्राम हरदोई गुर्जर रहा जहां कामरेड विजय सिंह ने यात्रा का स्वागत किया सर्वप्रथम यात्रा जत्था मुख्य मार्ग स्थित डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा स्थल पर पहुंचा।
बड़ी संख्या में स्कूली बच्चों ने कलाकारों द्वारा प्रस्तुत की गई लोकगीत नुक्कड़ नाटक आदि प्रस्तुतियों को देखा तत्पश्चात यात्रा का जत्था गांव के भ्रमण के लिए निकला जहां गांव के चौराहों के अलावा कन्या प्राथमिक विद्यालय में नुक्कड़ नाटक और लोक गायन प्रस्तुतियां की गईं।

बौद्धिक काउंसिल ग्रुप ने मंत्री को ज्ञापने देकर की गृहकर निरस्तीकरण की मांग

जालौन, उरई। नगर पालिका द्वारा लगाए गए स्वकर निर्धारण को असंवैधानिक बताते हुए बौद्धिक काउंसिल ग्रुप ने नगर विकस राज्यमंत्री को ज्ञापन सौंपकर संशोधित गृहकर निरस्त किए जाने की मांग की है। ग्रुप के अध्यक्ष वाचस्पित मिश्रा, सचिव केसी पाटकार के नेतृत्व में श्रवण कुमार श्रीवास्तव, योगेंद्र राठौर, ओंकार, राहुल यादव, शशिकांत वर्मा, सुशील कुमारआदि ने नगर विकास राज्यमंत्री राकेश कुमार गुरू को ज्ञापन सौंपकर बताया कि नगर की गरीब जनता पर पालिका द्वारा स्व कर निर्धारण थोपा गया है, वह काफी अधिक है। लोगों को पूर्व निर्धारित गृहकर के स्थान पर दस से बीस गुना अधिक तक कर देना पड़ रहा है। यह कर कानूनी तौर पर ही गलत है। क्योंकि 27 अक्टूबर 2017 को निकाय चुनावों की अधिसूचना जारी कर दी गई थी। आदर्श चुनाव आचार संहिता लागू होने पर कोई नया कर लागू नहीं किया जा सकता है। ऐसे में चुनाव आचार संहिता के बीच ही नगर पालिका के तत्कालीन अधिशाषी अधिकारी महेश उपाध्याय ने 15 नवंबर 2017 को गजट लागू कर गृहकर की वसूली प्रारंभ करा दी जो कि कानूनन गलत है।

कुठौंद पुलिस के हत्थे चढ़े दो शातिर एटीएम कार्ड टप्पेबाज, कार व असलहे भी बरामद

संवाददाता। कुठौंद, जालौन

थाना अध्यक्ष टीम के साथ क्षेत्र का भ्रमण करने में लगे हुए थे। तभी उन्होंने मुखबिर की सूचना के आधार पर दविश डालते हुए एटीएम कार्ड बदलकर लोगों के अकाउंट से कैश उड़ाने वाले दो शातिर टप्पेबाजों को गिरफ्तार कर लिया। जबकि उनके अन्य साथी पुलिस को चकमा देकर मौके से भागने में सफल हो गए। इस दौरान पुलिस ने दोनों लोगों के पास से एटीएम कार्ड लग्जरी कार व अवैध असलहा बरामद किए। वहीं पुलिस ने मौके से फरार हुए अन्य लोगों की तलाश शुरू कर दी।

पुलिस अधीक्षक डॉ. ईरज राजा के निर्देशन में थानाध्यक्ष कमलेश कुमार मंगलवार को अपने अधीनस्थों के साथ क्षेत्र में चोर, लुटेरे, टप्पेबाज, वंछित व वारंटियों के अलावा नशीले पदार्थों की बिक्री करने वाले लोगों की तलाश में भ्रमण करने में लगे हुए थे। इस दौरान उन्हें मुखबिर द्वारा भोले भाले लोगों के एटीएम कार्ड बदलकर उनके अकाउंट से रुपए उड़ाने वाली गैंग की क्षेत्र में घूमने की भनक लगी। भनक लगते ही थानाध्यक्ष ने मुखबिर के बचाए ठिकाने पर दविश डालते हुए ग्राम गोरा राठौर के पास एक खंडहर की घेराबंदी कर दो लोगों को गिरफ्तार कर लिया। जबकि उसके अन्य साथी मौके से भागने में सफल हो गए।

पुलिस के पूछे जाने पर पकड़े गए शातिर टप्पेबाजों ने अपना नाम समोद सिंह निवासी ग्राम मढ़ा थाना अछल्दा जिला औरैया और दूसरे ने अंश कुमार निवासी ग्राम टिकरी मुस्तकिल थाना सिरसा कलार बताया। पुलिस ने बदमाशों के पास से 70 एटीएम कार्ड, एक लग्जरी कार व अवैध असलहे बरामद किये।

क्विक न्यूज

बुन्देलखंड का विशाल कम्हरिया मेला प्रारंभ

मौदहा, हमीरपुर। बुंदेलखंड के सूफी संत हजरत बाबा निजामी कम्हरिया का सालाना उर्स मंगलवार से शुरु हो गया जिसमें हजारों की संख्या में रात दिन श्रद्धालु की भारी संख्या में मेले में पहुंचकर बाबा निजामी के दर्शन कर रहे हैं। लंबे समय से चला आ रहा बुंदेलखंड का यह है विशाल मेला चार दिवसीय है जो लगातार चलता रहता है। मौदहा विकासखंड के कम्हरिया गांव में हजरत अब्दुल्लाह शाह बाबा निजामी का 61वां उर्स मुबारक मेला 4 दिन तक चलेगा जिसमें देश-विदेश के श्रद्धालु वहां पहुंच कर अपनी मुरादों को पूरा करने के लिए माथा टेक बाबा से दुआ मांगेंगे। इतना ही नहीं क्षेत्र भर से अलग-अलग स्थानों में लंगर का प्रबंध भी किया जा रहा है। मंगलवार को इस कार्यक्रम का आगाज सुबह फजर की नमाज अता किये जाने के बाद कुरान खानी के साथ हो गया दोपहर की नमाज जौहर ,फातिया के बाद आधा दर्जन से अधिक स्थानों पर लंगर का कार्यक्रम शुरू हो गया नगर के बड़े चौराहा में तीन दिनों तक लंगर का कार्यक्रम जारी रहेगा और उर्स के अंतिम दिन रागौल रेलवे स्टेशन परिसर में हजारों श्रद्धालुओं को लंगर प्रसाद का वितरण किया जाएगा।

सड़क हादसे में बाइक सवार भाई-बहन की मौत

फतेहपुर। राधानगर थाना क्षेत्र के जम्मू मोड़ के समीप सोमवार की शाम विक्रम की टक्कर से भाई-बहन बगल से आ रहे ट्रक के नीचे घुस गये जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। वहीं अनियंत्रित होकर विक्रम रोड किनारे खंती में पलट गया। जिससे उसमें सवार दो लोग बुरी तरह घायल हो गये। जानकारी के अनुसार गाजीपुर थाना क्षेत्र के बड़गांव मछरिया निवासी मातादीन भुर्जी का 25 वर्षीय पुत्र रामहित अपनी 21 वर्षीय बहन गायत्री का इलाज कराने के लिए बाइक से शहर आया था। देर शाम वापस लौटते समय जब यह लोग राधानगर थाने के जम्मू मोड़ के समीप पहुंचे तभी पीछे से आ रहे विक्रम ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दिया जिससे बाइक अनियंत्रित होकर बगल से निकल कर जा रहे ट्रक के नीचे चली गई। ट्रक से कुचलकर भाई-बहन की दर्दनाक मौत हो गई। वहीं विक्रम अनियंत्रित होकर रोड किनारे खंती में पलट गया। जिससे विक्रम में बैठे देशराज 65 व 12 वर्षीय आयुष घायल हो गये। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों शवों को कब्जे में लेकर विच्छेदन गृह भेज दिया।

आदित्य हत्याकांड का पर्दाफ़ाश, दो गिरफ्तार

संवाददाता। फतेहपुर

ललौली थाना क्षेत्र के ग्राम दरियाबाद में ट्रैक्टर में लदा पुवाल नलकूप की कोठरी में उतारने गये एक युवक की गोली लगने से हुई मौत के मामले में पुलिस ने खुलासा करते हुए आला कत्ल के साथ दो नामजद अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया है।

पुलिस की जांच में रायफल से छेड़छाड़ करते समय गोली चलने से मौत होने का मामला सामने आया है। एएसपी विजय शंकर मिश्र ने बताया कि 18 नवंबर को ललौली थाना क्षेत्र के ग्राम चित्तापुर निवासी आदित्य उर्फ बब्लू यादव पुत्र जीवन प्रसाद यादव गांव से अपने ट्रैक्टर ट्राली से दरियाबाद निवासी रामस्वरूप पासवान का पुआल लोडकर उतारने के लिए ग्राम दरियाबाद के संतोष सिंह गौतम की ट्यूबवेल कोठरी में गया था। जहां गोली लगने से उसकी मौत हो गई थी। अंकित कुमार की तहरीर पर पुलिस ने संतोष सिंह गौतम, शुभम सिंह, अजय प्रताप, अतुल शुक्ला के अलावा दो अन्य अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत किया था।

विवेचना के दौरान पुलिस ने ग्राम दरियाबाद स्थित अतुल शुक्ला की कोयला भट्ठी के समीप सोमवार की शाम अभियुक्त अजय प्रताप पुत्र मनोज व शुभम सिंह पुत्र रामराज सिंह गौतम निवासीगण ग्राम कीर्तिखेड़ा मजरे रेंय थाना ललौली को गिरफ्तार कर लिया।

गुरु नानक देव के प्रकाश पर्व पर लगा रक्तदान शिविर

फतेहपुर। गुरुनानक देव जी के 554 वें प्रकाश पर्व पर जिला अस्पताल में सर्व फार ह्यूमैनिटी संस्था की ओर से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग एक दर्जन लोगों ने रक्तदान किया। सभी रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। वक्ताओं ने रक्तदान के महत्व पर विस्तार से प्रकाश भी डाला। रक्तदान शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में रेलवे पेंशनर एशोसिएशन के सचिव जेपी सिंह, विशिष्ट अतिथि हरिहरगंज सभासद अतीश पासवान व चिकित्सा अधिकारी गामिनी ने शिरकत की।

रैली निकाल कर जल संरक्षण के प्रति लोगों को किया जागरूक

फतेहपुर। इंडियन रेडक्रास सोसाइटी, आरोग्य भारती व डॉ सत्यनारायण सेवा फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में जल संरक्षण जागरूकता अभियान चलाया गया। जिसके तहत सोसाइटी के चेयरमैन डा. अनुराग श्रीवास्तव के नेतृत्व में रैली का आयोजन किया गया। रैली में आरजी चिल्ड्रेंस अकादमी के बच्चों ने प्रतिभाग किया। सभी बच्चे पानी बचाओ जीवन बचाओ, जल है तो कल है के नारे लगाते हुए चल रहे थे। रैली पटेलनगर चौराहे के समीप बने सेल्फी प्वाइंट से प्रारंभ की गई। डॉ अनुराग ने सभी व्यापारियों, दुकानदारों व गृहस्वामियों से निवेदन किया कि धूल से बचने के लिए पीने के पानी से सड़कों को न सींचे क्योंकि पीने का पानी बहुमूल्य है और 2040 तक समाप्त होने की कगार पर है। दक्षिण अफ्रीका ने हाल ही में अपने को जीरो डे घोषित किया है। वाटर बेल व आरओ से निकलने वाले वेस्टेड पानी को एकत्र कर बर्तन धुलने में उपयोग करने हेतु जागरूक किया।

धर्म संस्कार महोत्सव में श्रीकृष्ण ने कंस का किया वध, लगे जयकारे

अमौल, फतेहपुर। बुढ़वा गांव में चल रहे धर्म संस्कार महोत्सव में श्री राधा कृष्ण मेला के दूसरे दिन श्री कृष्ण ने कंस के भेजे हुए सभी राक्षसों का वध किया। अंत में राज दरबार पहुंच कर मल्ल युद्ध करके कंस का वध कर दिया। मेला प्रांगण में भक्तों ने जयकारे लगाए। मेला के दूसरे दिन श्री कृष्ण बलदाऊ के स्वरूपों को घोड़े में बिठाकर बैंड बाजा के साथ नाचते गाते भक्त गांव के विभिन्न रास्तों से होते हुए सरोवर पहुंचे जहां पर काली नाम के नाग वेश धारी राक्षस को अपने वश में करके उसके आतंक से बृजवासियों को मुक्त कराया। नाग नाथन लीला को देख कर भक्त भाव विभोर हो गए। इसके बाद शोभा यात्रा मेला प्रांगण पहुंची जहां पर कंस द्वारा भेजे हुए केशी नामके आकाश गामी राक्षस का वध किया। धोबी लीला के मंचन के बाद मतवाले शक्ति शाली कुबल्या पीड़ हाथी का वध किया। बारी बारी से सभी राक्षसों का वध करने के बाद कृष्ण और बलदाऊ राज दरबार पहुंच कर मामा कंस को ललकारा, जमकर दोनों के बीच मल्ल युद्ध हुआ। अन्त में श्री कृष्ण ने कंस का वध कर दिया। दर्शकों के जयकारे से मेला प्रांगण गूंज उठा।

पेज एक का शेष

ईडी ने...

माना और इसे 50 लाख रुपये में एक नई निगमित कंपनी यंग को बेच दिया। आय के किसी भी स्रोत के बिना यंग इंडिया को 50 लाख रुपये का भी भुगतान करना होगा। एजेंसी ने दावा किया कि उनके कृत्य से एजेएल के शेयरधारकों के साथ-साथ कांग्रेस पार्टी के दानदाताओं को एजेएल और कांग्रेस पार्टी के पदाधिकारियों द्वारा धोखा दिया गया। ईडी ने कहा कि एआईसीसी से 90.21 करोड़ रुपये का ऋण खरीदने के बाद, वाईआई ने या तो ऋण का पुनर्भुगतान करने या एजेएल के इक्विटी शेयर आवंटित करने की मांग की। इसमें कहा गया है कि एजेएल ने एक असाधारण आम बैठक (ईजीएम) आयोजित की और शेयर पूंजी बढ़ाने और वाईआई को 90.21 करोड़ रुपये के नए शेयर जारी करने का प्रस्ताव पारित किया। एजेंसी ने कहा कि शेयरों के इस नए आवंटन के साथ, 1,000 से अधिक शेयरधारकों की शेयरधारिता घटकर मात्र एक प्रतिशत रह गई और एजेएल वाईआई की सहायक कंपनी बन गई। वाईआई ने एजेएल की संपत्तियों पर भी नियंत्रण ले लिया।

सुरंग में...

मोबाइल फोन और चार्जर भी भेजे जा सकेंगे। बचाव प्रयास की प्रगति के बारे में जानकारी लेने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लगातार दूसरे दिन मंगलवार को सीएम धामी से बात की। धामी ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया, 'प्रधानमंत्री ने कहा कि सभी श्रमिकों को सुरक्षित निकालना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। दिल्ली में एनडीएमए सदस्य लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) हसनैन ने कहा कि श्रमिकों को बचाने के लिए पांच मोर्चों पर एक साथ प्रयास किए जा रहे हैं। लेकिन उन्होंने कहा कि 'ध्यान क्षैतिज ड्रिलिंग पर है' क्योंकि साइट पर चट्टानों का निर्माण ऊर्ध्वाधर ड्रिलिंग के लिए चुनौतियां पैदा करता है। सड़क परिवहन और राजमार्ग सचिव जैन ने कहा कि मौजूदा परिस्थितियों में 'ऊर्ध्वाधर ड्रिलिंग दूसरा सबसे अच्छा विकल्प है।' उत्तराखंड में सीएम धामी ने भी कहा कि फिलहाल फोकस सुरंग के अंदर मलबे के जरिए अमेरिकी ऑगर मशीन से ड्रिलिंग के काम को आगे बढ़ाने पर है। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) के अतिरिक्त महानिदेशक पद से सेवानिवृत्त त्रिभुवन सिंह पांगती ने बताया कि क्षैतिज ड्रिलिंग अधिक सुरक्षित है। उन्होंने दावा किया कि सिल्कयारी सुरंग के निर्माण के दौरान सुरक्षा मानदंडों की अनदेखी की गई। साइट पर मौजूद अंतरराष्ट्रीय सुरंग विशेषज्ञ अर्नोल्ड डिक्स ने कहा कि ऊर्ध्वाधर ड्रिलिंग के लिए सटीकता की आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा, क्षैतिज ड्रिलिंग विकल्प में मशीन द्वारा ड्रिल किए जाने पर स्टील पाइप के अनुभागों को सम्मिलित करना शामिल होता है। इसके बाद कर्मचारी पाइपलाइन से बाहर निकल सकते हैं। लेकिन लगभग 24 मीटर तक ड्रिलिंग के बाद ही इस ऑपरेशन को रोक दिया गया था, जब एक कठिन बाधा को भेदने के प्रयास से कंपन शुरू हो गया, जिससे सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई। 'दूसरे सबसे अच्छे' विकल्प में सुरंग के ऊपर से दो किलोमीटर तक निर्मित खंड तक पहुंचने के लिए 80 मीटर से अधिक लंबवत ड्रिलिंग शामिल है जहां श्रमिक अब सीमित हैं। सुरंग के बालकोट छोर से ड्रिलिंग एक अन्य विकल्प है जिस पर बचाव एजेंसियां काम कर रही हैं। समानांतर सुरंगें खोदने पर भी विचार किया जा रहा है। इन नए दृष्टिकोणों के लिए कुछ भारी मशीनरी आपदा स्थल पर पहुंच गई है। 75 टन की मशीन को पहाड़ी तक ले जाने के लिए एक सड़क भी बनाई गई है। नई पाइपलाइन में फंसे श्रमिकों से बात करने वाले एक डॉक्टर ने कहा कि उनमें से कुछ ने पेशाब करते समय जलन की शिकायत की। जनरल फिजिशियन पीएस पोखरियाल ने कहा कि इलेक्ट्रोलाइट पाउडर के पैकेट, मल्टीविटामिन टैबलेट और अवसाद रोधी दवाएं उन्हें भेजी जा रही हैं। दिल्ली में, सरकार ने निजी टेलीविजन चैनलों को एक सलाह जारी की, जिसमें उनसे बचाव कार्यों के कवरेज में संवेदनशील रहने को कहा गया।

इजराइल ने...

दूतावास ने आज एक बयान जारी कर कहा था, मुंबई आतंकी हमलों की 15वीं बरसी पर इजराइल ने लश्कर-ए-तैयबा को आतंकवादी संगठन के रूप में सूचीबद्ध किया है। कुछ सप्ताह पहले ही इजराइल ने कहा था कि समय आ गया है जब भारत को हमास को आतंकी संगठन घोषित कर देना चाहिए। हमास ने सात अक्टूबर को इजराइली क्षेत्रों पर जमीनी, समुद्री और हवाई मार्गों से हमले कर दिए थे जिनमें 1200 से अधिक लोग मारे गए थे। कुछ इसी तरह दक्षिण मुंबई में 26 नवंबर, 2008 को पाकिस्तान से समुद्री मार्ग से आए 10 आतंकवादियों ने यहूदियों के केंद्र चाबाड हाउस समेत कई जगहों पर हमला कर दिया था और अंधाधुंध गोलीबारी कर 18 सुरक्षाकर्मियों समेत 166 लोगों की जान ले ली थी। इन हमलों में चाबाड हाउस के नाम से मशहूर नरीमन हाउस में छह यहूदी मारे गए थे। बयान में कहा गया, भारत सरकार ने हमसे ऐसा करने का अनुरोध नहीं किया था, लेकिन इजराइल ने सभी जरूरी प्रक्रियाएं पूरी कर ली हैं और लश्कर-ए-तैयबा को आतंकी संगठनों की इजराइल की सूची में शामिल करने के लिए सभी जरूरी नियमों का पालन किया है। विज्ञप्ति के अनुसार, इजराइल केवल उन आतंकी संगठनों को सूचीबद्ध करता है जो उसकी सीमाओं के भीतर या उसके आसपास या उसी तरह सक्रियता से गतिविधियां चला रहे हैं जिस तरह भारत में चलाते हैं जिन्हें संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद या अमेरिकी विदेश विभाग द्वारा वैश्विक रूप से सूचीबद्ध किया गया है। वहीं, इजरायल के रक्षा और विदेश मंत्रालयों ने संयुक्त रूप से पिछले कुछ महीनों में इस तिथि पर लश्कर-ए-तैयबा संगठन को त्वरित और असाधारण तरीके से सूचीबद्ध करने की दिशा में काम किया है। ताकि आतंकवाद से लड़ने में एक एकीकृत वैश्विक मोर्चे के महत्व को रेखांकित किया जा सके। बयान में कहा गया है, लश्कर-ए-तैयबा एक घातक और निंदनीय आतंकवादी संगठन है जो सैकड़ों भारतीयों एवं अन्य लोगों की हत्या के लिए जिम्मेदार है। 26 नवंबर, 2008 को किए गए उसके जघन्य कृत्य आज भी शांति चाहने वाले सभी देशों और समाजों को पीड़ा पहुंचा रहे हैं। उसने कहा, मुंबई हमलों में आतंकवाद के शिकार इजराइली समेत सभी लोगों, जीवित बचे लोगों और शोक संतप्त परिवारों के प्रति गहन संवेदनाएं। बयान के अनुसार, हम एक बेहतर शांतिपूर्ण भविष्य की उम्मीद में आपके साथ एकजुट खड़े हैं। इजराइल के नेता और अधिकारी बार-बार इस जघन्य हमले को अंजाम देने वालों को न्याय के कठघरे में लाए जाने की बात करते रहे हैं।

आर्थिक, सुरक्षा...

आज की बातचीत में सुरक्षा मुद्दों पर व्यापक चर्चा हुई। जयशंकर ने कहा, हमने ऑस्ट्रेलिया के साथ बढ़ते तालमेल को साझा किया है। इसके मूल में समुद्र के कानून पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के आधार पर एक स्वतंत्र, खुले, समावेशी, समृद्ध और नियम-आधारित हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए एक साझा प्रतिबद्धता शामिल है। उन्होंने कहा कि दोनों नेताओं ने आतंकवाद, कट्टरवाद और चरमपंथ के मुद्दे पर भी चर्चा की। जयशंकर ने कहा, एक उदार लोकतंत्र, क्वाड सहयोगी होने के नाते हम नियम आधारित अंतरराष्ट्रीय आधार पर काम करते रहेंगे। हम सभी राष्ट्रों की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का सम्मान करते हुए अंतरराष्ट्रीय समुद्री क्षेत्र में नौवहन की स्वतंत्रता का समर्थन करेंगे, सभी के लिए संपर्क, विकास और सुरक्षा को बढ़ावा देंगे। भारत और ऑस्ट्रेलिया ने सोमवार को रक्षा सहयोग पर विशेष ध्यान देने के साथ हिंद-प्रशांत क्षेत्र और दुनिया भर में असाधारण चुनौतियों से निपटने के लिए अपनी रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने का फैसला किया। दूसरे भारत और ऑस्ट्रेलिया टू प्लस टू मंत्रिस्तरीय संवाद में दोनों देशों ने सूचना के आदान-प्रदान और समुद्री क्षेत्र में जागरूकता को लेकर सहयोग और बढ़ाने के महत्व को भी रेखांकित किया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और विदेश मंत्री एस जयशंकर ने टू प्लस टू मंत्रिस्तरीय वार्ता के तहत यहां ऑस्ट्रेलियाई उप प्रधानमंत्री और रक्षा मंत्री रिचर्ड मार्ल्स और विदेश मंत्री पेनी वोंग से मुलाकात की।

दिवाली और...

वस्तुओं और सेवाओं को मिलाकर देश में लगभग 4.74 लाख करोड़ रुपए का कारोबार होगा। इस सीजन में उपभोक्ताओं द्वारा शादी की खरीदारी और विभिन्न सेवाओं की खरीद से संबंधित खर्च पिछले साल की तुलना में लगभग एक लाख करोड़ रुपए अधिक है। यह अनुमान विभिन्न राज्यों के 30 शहरों में व्यापार निकायों और वस्तुओं और सेवाओं के हितधारकों से मिले आंकड़ों पर आधारित हैं। कैट के महासचिव प्रवीन खंडेलवाल ने कहा, यह अनुमान लगाया गया है कि इस अवधि (23 नवंबर-15 दिसंबर) के दौरान लगभग 38 लाख शादियां होंगी और कुल खर्च लगभग 4.7 लाख करोड़ रुपए होगा। पिछले साल लगभग 32 लाख शादियां हुईं और कुल खर्च 3.75 लाख करोड़ रुपए हुआ। तो, इस वर्ष (खर्च में) लगभग एक लाख करोड़ रुपए की वृद्धि की उम्मीद है जो भारतीय अर्थव्यवस्था और खुदरा व्यापार के लिए एक अच्छा संकेत है। नवंबर में विवाह की तारीखें 23, 24, 27, 28, 29 हैं, जबकि दिसंबर में विवाह की तारीखें 3, 4, 7, 8, 9 और 15 हैं। खंडेलवाल ने कहा कि सिर्फ दिल्ली में इस सीजन में चार लाख शादियां होने की उम्मीद है, जिससे लगभग 1.25 लाख करोड़ रुपए का कारोबार होने की उम्मीद है। इस शादियों में करीब 6 लाख शादियों में प्रति शादी 3 लाख रुपये खर्च का अनुमान है। 10 लाख शादियों में प्रति शादी करीब 6 लाख रुपये, 12 लाख शादियों में प्रति शादी लगभग 10 लाख रुपये, 6 लाख शादियों में प्रति शादी 25 लाख खर्च होंगे, 50 हजार शादियों में प्रति शादी 50 लाख खर्च होंगे और 50 हजार शादियाँ ऐसी होंगी जिनमें 1 करोड़ या उससे अधिक पैसे खर्च होंगे। ऐसे में एक महीने तक चलने वाले शादियों के सीजन में शादियों से जुड़ी चीजों के खरीदारी और सर्विसेज के जरिए 4.78 लाख करोड़ रुपये नगदी का फ्लो देखने को मिलेगा। खंडेलवाल के मुताबिक शादी के सीजन से पहले लोगों घरों की मरम्मत और घरों की रंगाई-पुताई कराई हैं। इसके अलावा शादियों में आभूषण, कपड़े, जूते, ग्रीटिंग कार्ड, सूखे मेवे, मिठाइयाँ, फल, पूजा सामग्री, किराना, खाद्यान्न, सजावट का सामान, घर की सजावट का सामान, इलेक्ट्रिक आईटम्स , इलेक्ट्रॉनिक्स और कई उपहार आइटम आदि की आमतौर पर मांग रहती है और इस साल इन सेक्टर के अलावा अन्य व्यापार में भी अच्छा कारोबार होने की उम्मीद है।

ओडिशा के...

कि इसी को सपना साकार होना बोलते हैं हम। जो कोई नहीं कर पाया, आज हमारे घर की बेटी ने कर दिया।' बादामपहाड़/रायरंगपुर क्षेत्र के छात्रों और नौकरी के इच्छुक उम्मीदवारों के लिए रेल नेटवर्क एक वरदान के रूप में आया है, जिनकी पश्चिम बंगाल के प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों और कॉर्पोरेट घरानों तक आसान पहुंच होगी और वे पुणे, मुंबई, दिल्ली आदि जैसे अन्य अवसरों वाले शहरों से भी आसानी से जुड़ेंगे। रेलवे के एक प्रवक्ता ने कहा कि ये ट्रेन ओडिशा के खनिज समृद्ध क्षेत्रों, झारखंड के औद्योगिक क्षेत्रों से होकर गुजरेगी और पश्चिम बंगाल राज्य के साथ तेजी से कनेक्टिविटी की सुविधा प्रदान करेगी। आस-पास के क्षेत्रों के लोग भी विभिन्न उद्देश्यों के लिए कोलकाता और हावड़ा जाने के लिए इस ट्रेन सेवा का लाभ उठा सकेंगे। रेलवे ने एक बयान में कहा, 'बेहतर कनेक्टिविटी ओडिशा के मयूरभंज जिले की वृद्धि और विकास को बढ़ावा देगी। यह नई ट्रेन पश्चिम बंगाल और झारखंड के पर्यटकों को सुरम्य परिदृश्य और घने जंगलों का पता लगाने और उनका आनंद लेने के लिए प्रोत्साहित करेगी। परंपरा से हटकर मुर्मू देश की पहली राष्ट्रपति बनीं जिन्होंने स्पेशल प्रेसिडेंट सुइट ट्रेन नहीं ली बल्कि सामान्य यात्री ट्रेन में यात्रा की। इस अवसर पर उन्होंने बादामपहाड़ रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास की आधारशिला भी रखी। ऐतिहासिक रूप से टाटा द्वारा 1922 में बादामपहाड़ अयस्क क्षेत्र से जमशेदपुर में इस्पात उत्पादन इकाई तक लौह अयस्क के परिवहन के लिए एक रेल लाइन का निर्माण किया गया था। अब उन्हीं ट्रैकों को यात्री सेवाओं के उपयोग के लिए उन्नत कर दिया गया है। अन्य अलग-अलग कार्यक्रमों में, मुर्मू ने नए रायरंगपुर डाक प्रभाग का भी उद्घाटन किया। राष्ट्रपति ने कहा कि सेल फोन और कूरियर सेवाओं के बढ़ते चलन के बावजूद, भारतीय डाक ने अपनी प्रासंगिकता नहीं खोई है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार आदिवासी समुदायों के विकास के लिए विभिन्न पहल कर रही है।

उत्तरी गाजा में इजराइल का हमास के खिलाफ अभियान तेज हुआ

● बिजली-पानी से वंचित हैं लोग

भाषा। दीर ए-बलाह (गाजा पट्टी)

इजराइली सेना ने उत्तरी गाजा में अपना अभियान तेज कर दिया है और मंगलवार को सैनिकों ने घनी आबादी वाले शरणार्थी शिविर क्षेत्र में फलस्तीन चरमपंथी समूह को निशाना बना हमले किए। हमास के खिलाफ सात सप्ताह से जारी इजराइली सेना के अभियान की वजह से इस क्षेत्र में लोग कई से हफ्तों से बिजली, पानी या मानवीय सहायता से वंचित हैं। इजराइली सैनिकों का अभियान इन दिनों जबालिया शिविर में संघर्ष चल रहा है। गाजा शहर के पास स्थित घनी आबादी वाले इस क्षेत्र में 1948 के युद्ध के शरणार्थियों के परिवार रहते हैं। इजराइल पिछले कई हफ्तों से यहां बमबारी कर रहा है और सेना का दावा है कि गाजा शहर के अधिकतर हिस्सों से खदेड़े जाने के बाद हमास के लड़ाके यहां और अन्य पूर्वी जिलों में छिपे हुए हैं। सेना ने कहा कि सुरक्षा बल जबालिया क्षेत्र में जंग की तैयारी कर रहे हैं। इजराइली सेना के अनुसार, उन तीन सुरंगों को तबाह कर दिया गया जहां हमास के लड़ाके छिपे हुए थे। साथ ही रॉकेट प्रक्षेपक को भी नष्ट कर दिया गया। इजराइली सेना ने हाल के दिनों में 12 से अधिक चरमपंथियों के मारे जाने का दावा भी किया है।हमास की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। वहीं, सोमवार को एक अस्पताल के पास इजराइली सैनिकों और टैंक के हमले में 12 लोगों की मौत हो गई है। इस जगह पर इजराइली सेना ने हमास के चरमपंथियों के खिलाफ अभियान चलाने का दावा किया है। सेना द्वारा जारी वीडियो में इजराइली सैनिक जबालिया में गश्त करते हुए दिख रहे हैं और उनके चारों ओर गोलीबारी की आवाज सुनाई दे रही है।

दक्षिणी लेबनान में इजराइली हवाई हमले में दो पत्रकारों की मौत :अधिकारी

बेरूत। दक्षिणी लेबनान में मंगलवार को एक इजराइली हवाई हमले में दो पत्रकार मारे गए, जो बेरूत के अल मयादीन टेलीविजन के लिए हिसा की रिपोर्टिंग कर रहे थे। लेबनानी सूचना मंत्री ने यह जानकारी दी। लेबनान के टीवी स्टेशन से प्रसारित खबर के अनुसार, हमले मे एक लेबनानी नागरिक की भी मौत हुई है। पैन-अरब अल-मयादीन टीवी राजनीतिक रूप से लेबनानी चरमपंथी समूह हिजबुल्ला से संबद्ध है। इसने हमले मे मारे गए पत्रकारो की पहचान फराह उमर और कैमरामैन रबीह मामरी के रूप मे की है। खबर के अनुसार, वे दोनो इजराइली हवाई हमले मे मारे गए। टीवी चैनल के निदेशक घासन बिन जिद्दो ने कहा, उन्हे सीधे तौर पर निशाना बनाया गया। यह संयोग नही था। लेबनानी सूचना मंत्री जैद माकरी ने पत्रकारो पर हमले को बर्बर करार दिया। इजराइली सेना ने कहा कि वह इस पर गौर कर रही है। स्थानीय मीडिया ने मंगलवार को दक्षिणी लेबनान मे कई इजराइली हमले होने की खबर प्रसारित की है। लेबनान-इजराइल सीमा पर हिजबुल्ला और इजराइली सैनिको के बीच दोनो ओर से प्रतिदिन गोलाबारी हो रही है।

पुतिन, शी व गुतारेस इज़राइल-हमास युद्ध पर ऑनलाइन बैठक में शामिल होंगे

केपटाउन। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन उनके चीनी समकक्ष शी चिनफिंग और विकासशील देशो के संगठन ब्रिक्स के अन्य नेता इज़राइल-हमास युद्ध पर मंगलवार को एक ऑनलाइन बैठक करेंगे जिसमे संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंतोनियो गुतारेस भी भाग लेगे। दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा के कार्यालय के मुताबिक, ब्रिक्स के सदस्य ब्राजील, भारत और दक्षिण अफ्रीका के साथ-साथ अगले साल जनवरी में संगठन में शामिल होने वाले सऊदी अरब, अर्जेंटीना, मिस्र,इथियोपिया , ईरान और संयुक्त अरब अमीरात के नेता भी डिजिटल तरीके से होने वाली बैठक मे हिस्सा लेगे। दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति कार्यालय के मुताबिक, रामफोसा ब्रिक्स के मौजूदा अध्यक्ष की हैसियत से असाधारण बैठक की अध्यक्षता करेंगे। इसमे कहा गया है कि नेता गाज़ा मेँ मानवीय संकटै पर बयान दे सकते है और वे एक संयुक्त बयान को अंगीकार कर सकते है।

इजराइल ने दक्षिण अफ्रीका से अपने राजदूत को चर्चा के लिए वापस बुलाया

जोहानिसबर्ग। दक्षिण अफ्रीका मे इजराइल के दूतावास के भविष्य को लेकर मंगलवार को संसद मे मतदान होना है, इससे पहले इजराइल ने इस अफ्रीकी देश मे अपने राजदूत इलियाव बेलोतसरकोव्स्की को चर्चा के लिए यरूशलम बुलाया है।गाजा पर इजराइल के हमलो को लेकर दक्षिण अफ्रीका और इजराइल के राजनयिक संबंधो मे तनाव बढ़ता देखा गया है। दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा ने इससे पहले कहा था कि उनके देश को लगता है कि इजराइल गाजा मे युद्ध अपराध और नरसंहार कर रहा है, जहां हजारो फलस्तीनियो की मौत हो चुकी है। इजराइल के विदेश मंत्रालय ने सोमवार को एक्स पर लिखा, दक्षिण अफ्रीका के ताजा बयान के बाद प्रीटोरिया मे इजराइल के राजदूत को चर्चा के लिए यरूशलम बुलाया गया है। गाजा मे युद्धविराम लागू होने तक इजराइली दूतावास को बंद करने और इजराइल से सभी संबंध खत्म करने को लेकर दक्षिण अफ्रीका की संसद मे मतदान से पहले इजराइल ने यह कदम उठाया है।

क्विक न्यूज

भारत जा रहे जहाज पर लाल सागर में हूथियों के कब्जे की खबरों से संरा महासचिव बहुत चिंतित: प्रवक्ता

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र महासचिव लाल सागर मे हूथियो द्वारा एक जहाज पर कब्जा करने की खबरो पर गहन चिता के साथ नजर रख रहे है। खबरो के अनुसार, यह जहाज तुर्किए और भारत के मध्य मार्ग मे कही था। एक प्रवक्ता ने यह जानकारी दी। जहाज की संचालक कंपनी एनवाईके लाइन ने कहा कि ब्रिटिश स्वामित्व वाले और जापान द्वारा संचालित जहाज गैलेक्सी लीडर को यमन मे होदीदा के पास उस समय रोक लिया गया था, जब यह भारत के रास्ते मे था। इस पोत मे चालक दल के 25 सदस्य भी सवार थे जिन्हे यमन के हूथी विद्रोहियो ने बंधक बना लिया था। एनवाईके ने एक प्रेस विज्ञप्ति मे कहा कि उसने इस घटना की जानकारी जुटाने और प्रबंधन करने के लिए अपने मुख्यालय मे एक संकट प्रबंधन केंद्र बनाया है। उसने कहा, हम चालक दल के 25 सदस्यो की सुरक्षा को प्राथमिकता दे रहे है।

पाकिस्तान: भ्रष्टाचार के दो मामलों में नवाज शरीफ की याचिका पर सुनवाई 27 नवंबर तक स्थगित

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के एक उच्च न्यायालय ने एवेनफील्ड और अल-अजीजिया भ्रष्टाचार मामलो मे पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की दोषसिद्धि के खिलाफ उनकी अपील पर सुनवाई मंगलवार को 27 नवंबर तक के लिए स्थगित कर दी। इस्लामाबाद उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश आमिर फारूक और न्यायमूर्ति मियांगुल हसन औरंगजेब की पीठ ने शरीफ के वकील आजम तरार तथा राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो (एनएबी) की कानूनी टीम की दलीले सुनी। पीठ ने इसके बाद सुनवाई सोमवार तक के लिए टाल दी और अगली सुनवाई पर तरार से अपनी दलीले पेश करने को कहा। शरीफ (73) लंदन मे करीब चार साल के स्व-निर्वासन के बाद 21 अक्टूबर को पाकिस्तान लौटे थे। वह सुनवाई के दौरान अदालत मे उपस्थित थे।

सिंगापुर में मादक पदार्थ की तस्करी के जुर्म में भारतीय मूल के मलेशियाई को 10 साल की कैद

सिंगापुर। सिंगापुर मे मादक पदार्थ की तस्करी करने के जुर्म मे भारतीय मूल के एक मलेशियाई को 10 साल की कैद और दस बेत मारे जाने की सजा सुनाई गई है। चैनल न्यूज एशिया द्वारा मंगलवार को प्रसारित खबर के अनुसार सिंगापुर के एक सामुदायिक केंद्र के सफाईकर्मी देवेंद्रन षणुगम ने तस्करी की साझी मंशा से मादक पदार्थ रखने की कोशिश से संबंधित दो आरोपो मे अपना गुनाह कबूल कर लिया। सोमवार को उसे 10 साल की कैद तथा दस बेत मारे जाने की सजा सुनाई गई। उसे अपने सुपरवाइजर भारतीय मूल के मलेशियाई तिबेन राज अंबालगन से मादक पदार्थ तस्करी के मौके का पता चला था। तिबेन राज पर एक अज्ञात व्यक्ति का कर्जा था जिसे वह बॉस कहता था। उस कर्जे को उतारने के वास्ते पैसा कमाने के लिए वह डायमॉर्फिन , भांग और मेथामफेटामाइन की तस्करी करने पर राजी हो गया।जब देवेंद्रन को इसके बारे मे पता चला तो उसने तिबेन राज से कहा कि वह पहले भी मादक पदार्थ पहुंचा चुका है और वह पैसे के वास्ते ऐसा करने को तैयार है।

पापुआ न्यू गिनी में फटा ज्वालामुखी कमजोर पड़ा, तीन मील ऊंचाई तक अब भी फैली है राख

कैनबरा। पापुआ न्यू गिनी में फटा, वहां का सबसे लंबा ज्वालामुखी मंगलवार को कमजोर पड़ गया है, लेकिन इसकी घनी राख अब भी आसमान में छाई है और आस-पास की छतों व ताड़ के पेड़ों पर जमी हुई है।दक्षिण प्रशांत क्षेत्र में स्थित पापुआ न्यू गिनी का सबसे सक्रिय ज्वालामुखी माउंट उलावुन सोमवार को दोपहर में फट गया था और इसका लावा तथा राख 15 किलोमीटर तक ऊपर तक फैल गई थी।पापुआ न्यू गिनी के भू-आपदा प्रबंधन प्रमुख ने कहा कि न्यू ब्रिटेन द्वीप में स्थित ज्वालामुखी से संबंधित खतरे का स्तर घटकर स्टेज-3 से नीचे आ गया है, जिसका मतलब ज्वालामुखी से तेज विस्फोट होता है। मंगलवार को यह स्टेज-4 में था, जो अत्यंत भीषण विस्फोट का संकेत देता है।प्रशासन ने कहा कि समुद्र तल से 2,334 मीटर ऊपर स्थित ज्वालामुखी सक्रिय बना हुआ है और विस्फोट अनिश्चित काल तक जारी रह सकता है।ऑस्ट्रेलिया के डार्विन में ज्वालामुखी राख सलाहकार केंद्र ने बताया कि सोमवार को ज्वालामुखी का धुआं 15,000 मीटर तक ऊंचा उठ रहा था। पापुआ न्यू गिनी के प्रशासन ने बताया कि वायुमंडलीय बादल में खो जाने से पहले मंगलवार को राख का गुबार कम से कम 5,000 मीटर तक बढ़ गया था।

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के खिलाफ मामले की जेल में सुनवाई पर फैसला सुरक्षित

इस्लामाबाद। इस्लामाबाद उच्च न्यायालय की दो सदस्यीय पीठ ने पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के खिलाफ कथित तौर पर गोपनीय राजनयिक दस्तावेज लीक करने से जुड़े मामले की सुनवाई जेल मे करने के विरुद्ध उनकी अपील पर फैसला मंगलवार को सुरक्षित रख लिया। उच्च न्यायालय की एकल पीठ ने पूर्व मे, रावलपिंडी स्थित अडियाला जेल मे सुनवाई के खिलाफ पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी के अध्यक्ष इमरान खान (71) की अपील को खारिज कर दिया था।खान 26 सितंबर से अडियाला जेल मे बंद है। उन्हे अटक की जिला जेल से वहां स्थानांतरित किया गया है।

अमेरिकी नौसेना का विमान हवाई पट्टी से फिसल कर सागर में गिरा

होनोलूलू(अमेरिका)। बारिश के दौरान नौसेना का एक विमान सोमवार को हवाई में रनवे से फिसल गया और केनियोहे खाड़ी में चला गया, लेकिन उसमें सवार सभी नौ कर्मियों को कोई चोट नहीं आई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। तटरक्षक के प्रवक्ता स्थान पिशर ने बताया, विमान में सवार सभी लोगों को बचा लिया गया। मरीन कोर के प्रवक्ता गुनेरी सार्जेंट ओरलांडो पेरेज ने कहा कि उन्हें इस बारे में कोई जानकारी नहीं है कि मरीन कोर बेस हवाई में किस कारण पी-8ए विमान हवाई पट्टी से फिसला।

सिंगापुर जेल में रिश्वत मांगने के आरोप में भारतीय मूल का जेल वार्डन दोषी करार

सिंगापुर। सिंगापुर में भारतीय मूल के वरिष्ठ जेल वार्डन को एक कैदी को जेल से बाहर स्थानांतरित करने के बदले 133,000 सिंगापुरी डॉलर की रिश्वत मांगने के आरोप में सोमवार को दोषी ठहराया गया। चैनल न्यूज एशिया की खबर के मुताबिक, कोबी कृष्ण अयाबू (56) नामक व्यक्ति को अपने सहयोगियों को कैदी के बारे में जानकारी हासिल करने के लिए प्रेरित करने का भी दोषी पाया गया। खबर के मुताबिक, अयाबू को अगले साल जनवरी में अदालत सजा सुनाएगी। अभियोजन पक्ष ने दलील दी कि अयाबू ने सितंबर 2015 और मार्च 2016 के बीच चोंग नामक व्यक्ति से रिश्वत मांगी थी।

महासागर के सबसे गहरे बिंदु तक पहुंचने वाले पहले व्यक्ति वॉल्श का निधन

सालेम (अमेरिका)। महासागर के सबसे गहरे बिंदु तक पहुंचने वाले सबसे पहले समुद्री खोजकर्ता एवं नौसेना के सेवानिवृत्त कैप्टन डॉन वॉल्श का 92 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। उनकी बेटी एलिजाबेथ वॉल्श ने सोमवार को कहा कि वॉल्श का निधन 12 नवंबर को मर्टल पॉइंट, ओरेगॉन स्थित उनके घर पर हुआ।जनवरी 1960 में अमेरिकी नौसेना के तत्कालीन लेफ्टिनेंट वॉल्श और स्विस इंजीनियर जैक्स पिकार्ड को 150 टन वजनी पनडुब्बी बाथिसकैफ के जरिए सतह से लगभग 7 मील (11 किलोमीटर) नीचे समुद्र में भेजा गया था।

मेक्सिको में गोलीबारी, दो पुलिसकर्मी सहित नौ लोगों की मौत : अधिकारी

मेक्सिको सिटी,। मेक्सिको के कुएर्नवाका शहर मे सोमवार को पुलिस और हथियारबंद लोगों के बीच गोलीबारी में दो पुलिस अधिकारियो सहित नौ लोगो की मौत हो गई। अधिकारियो ने यह जानकारी दी।कुएर्नवाका सुरक्षा एजेंसी ने एक बयान में कहा कि बंदूकधारी लोगो के एक काफिले द्वारा सड़क पर शराब पी रहे लोगो पर गोलीबारी करने और एक व्यक्ति का अपहरण करने की कोशिश करने के बाद शुरू हुई गोलीबारी मे दो अन्य पुलिस अधिकारी घायल हो गए।

भारत ने फलस्तीनी शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र को 25 लाख अमेरिकी डॉलर दान किए

यरूशलम। भारत ने फलस्तीनी शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी (यूएनआरडब्ल्यूए) को 25 लाख अमेरिकी डॉलर दान किए हैं। गाजा के लिए इस मुश्किल भरे वक्त में योगदान देने के एजेंसी ने मंगलवार को भारत के कदम का स्वागत किया है। यूएनआरडब्ल्यूए 1950 से काम कर रही है और पंजीकृत फलस्तीनी शरणार्थियों के लिए प्रत्यक्ष राहत एवं बचाव कार्यों का जिम्मा संभालती है। संयुक्त राष्ट्र के लगभग सभी सदस्य देश स्वेच्छा से इसे दान देते हैं। रामल्ला में भारत के प्रतिनिधि कार्यालय के मुताबिक, भारत ने 2023-24 के लिए यूएनआरडब्ल्यूए के कार्यक्रमों और सेवाओं के समर्थन के लिए अपने वार्षिक योगदान के हिस्से के रूप में सोमवार को 25 लाख अमेरिकी डॉलर दिए हैं। एजेंसी के कार्यों में फलस्तीनी शरणार्थियों को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, राहत और सामाजिक सेवाएं मुहैया कराना शामिल है।फलस्तीन के लिए भारतीय प्रतिनिधि रेणु यादव ने यूएनआरडब्ल्यूए के विदेश मामलों के विभाग के भागीदारी निदेशक करीम आमिर को यह दानराशि सौंपी।

भारत के साथ मजबूत संबंध चाहता है आसियान समूह: काओ

भाषा। जकार्ता

दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संघ (आसियान) के महासचिव डॉ काओ किम होर्न ने कहा कि यह 10 सदस्यीय समूह भारत के साथ मजबूत रिश्ते चाहता है और दोनों पक्षों के बीच मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) की समीक्षा की जा रही है। डॉ काओ ने सोमवार सुबह यहां कुछ भारतीय पत्रकारों से बातचीत में कहा कि दोनों पक्षों की आबादी के आकार को देखते हुए उनके बीच बड़ी व्यापार और निवेश क्षमता है। उन्होंने कहा, हम भारत के साथ मजबूत रिश्ते चाहते हैं। सकारात्मक पहलू को देखिए। महासचिव ने एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि मौजूदा भारत-आसियान मुक्त व्यापार समझौते की समीक्षा की जा रही है और दोनों पक्षों की 2025 तक इसे पूरा करने की योजना है। जकार्ता में सितंबर में 20वें आसियान-भारत शिखर सम्मेलन में भाग लेते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आसियान-भारत एफटीए की समीक्षा समयबद्ध तरीके से पूरा करने की जरूरत बताई थी। एफटीए पर 2009 में हस्ताक्षर किए गए थे और इसे जनवरी 2010 में लागू किया गया था।

वाणिज्य मंत्रालय के अनुसार भारतीय कारोबारियों की लंबे समय से मांग रही है कि आसियान-भारत एफटीए की समीक्षा की जाए। उसने कहा कि समीक्षा जल्द शुरू होने से एफटीए को व्यापार के लिहाज से सुगम और परस्पर लाभकारी बनाने में मदद मिलेगी।

भारत ने इजराइल–हमास संघर्ष में मानवीय आधार पर युद्ध विराम के प्रयासों का सराहा

संयुक्त राष्ट्र। भारत ने जारी इजराइल-हमास संघर्ष के बीच मानवीय आधार पर युद्ध विराम के प्रयासों के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय समुदाय के उन प्रयासों की भी सराहना की है जिनका उद्देश्य तनाव कम करना और फलस्तीन के लोगों को तत्काल मानवीय सहायता प्रदान करना है। गाजा पट्टी में मानवीय दशा को लेकर संयुक्त राष्ट्र महासभा में पूर्ण सत्र की अनौपचारिक बैठक में संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थाई प्रतिनिधि राजदूत रुचिरा कंबोज ने सोमवार को जोर देकर कहा कि भारतीय नेतृत्व ने संदेश साफ और सुसंगत रखा है। भारत अंतरराष्ट्रीय समुदाय के उन सभी प्रयासों का स्वागत करता है जो संघर्ष को कम करने और फलस्तीन के लोगों को तत्काल मानवीय सहायता प्रदान करने को सक्षम बनाते है।

भारत ने सुरक्षा परिषद में पाकिस्तान के कश्मीर संबंधी अनुचित और आदतन संदर्भ को खारिज किया

संयुक्त राष्ट्र। भारत ने यहां संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक के दौरान पाकिस्तान द्वारा दिए गए कश्मीर के अनुचित और आदतन संदर्भ को खारिज किया है। भारत का जवाब सुरक्षा परिषद में अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखना: सामान्य विकास के माध्यम से स्थाई शांति को बढ़ावा देना विषय पर खुली बहस में आया। पाकिस्तान के संयुक्त राष्ट्र दूत मुनीर अक्रम ने अपनी टिप्पणी में कश्मीर का संदर्भ दिया जिसके बाद चीन की अध्यक्षता में बहस आयोजित की गई। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थाई मिशन में दूत आर. मधुसूदन ने सोमवार को कहा, मेरे देश के खिलाफ एक स्थाई प्रतिनिधि द्वारा पहले की गई अनुचित और आदतन टिप्पणियो को खारिज करने मे मुझे कुछ सेकंड से ज्यादा समय नही लगेगा और मै यहां प्रतिक्रिया देकर उन्हे सम्मानित नही करूंगा। बैठको मे चर्चा के एजेंडे और विषय की परवाह किए बिना, पाकिस्तान लगातार संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न मंचो पर जम्मू-कश्मीर का मुद्दा उठाता रहा है लेकिन कोई भी ध्यानाकर्षण हासिल करने मे विफल रहता है। भारत अंतरराष्ट्रीय समुदाय को स्पष्ट रूप से कह चुका है कि जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाना उसका आंतरिक मामला है।

अमेरिका में भारतवंशी प्रवासियों के पैनल ने पन्नू और एसएफजे को नो-फ्लाई सूची में शामिल करने की मांग की

वाशिंगटन। अमेरिका में भारतवंशी प्रवासियों के पैनल ने एयर इंडिया से उड़ान भरने वाले लोगों को धमकी देने वाले वीडियो संदेश जारी करने के लिए आतंकवादी गुरपतवंत सिंह पन्नू और उसके प्रतिबंधित संगठन सिख फॉर जस्टिस (एसएफजे) को नो-फ्लाई सूची में शामिल करने की मांग की है। भारतीय-अमेरिकी और भारतीय-कनाडाई लोगों के एक संगठन फाउंडेशन फॉर इंडिया एंड इंडियन डायस्पोरा स्टडीज (एफआईआईडीएस) द्वारा आयोजित पैनल चर्चा में शामिल प्रतिभागियों ने कहा कि अब समय आ गया है कि सरकारें एसएफजे के अलगववादी सिख नेता के खिलाफ कड़ी कार्वाई करें। एसएफजे एक अमेरिका स्थित संगठन है जिसे भारत सरकार ने भारत विरोधी गतिविधियों में लिप्त रहने पर गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) के तहत प्रतिबंधित किया हुआ है। जुलाई, 2020 में पन्नू को अलगाववाद को बढ़ावा देने और कथित तौर पर पंजाबी सिख युवाओं को हथियार उठाने के लिए उकसाने के लिए यूएपीए के तहत एक आतंकवादी घोषित किया गया था। एफआईआईडीएस के खंडेराव कांड ने कहा, कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने आतंक की स्वतंत्रता के लिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को गलत तरीके से प्रस्तुत किया और चरमपंथी निज्जर की हत्या को लेकर भारत के खिलाफ उनके आरोपों ने कनाडा में भारत विरोधी और हिंदू विरोधी अपराधों को बढ़ावा दिया है। उन्होंने कहा कि ऐसा लगता है कि ट्रूडो की नीतियां चरमपंथ के खतरों की अनदेखी करती हैं जिनका कनाडा पर भी अंततः प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। पैनल में शामिल लोगों ने वर्ष 1985 में एयर इंडिया के विमान कनिष्क में बम विस्फोट की ओर इशारा करते हुए सवाल किया कि गुरपतवंत पन्नू और एसएफजे के सदस्यों को एयर इंडिया से यात्रा करने पर धमकियों के लिए नो-फ्लाई सूची में क्यों नहीं रखा गया है।

चीन के प्रधानमंत्री ली भारत के न्योते पर जी20 नेताओं के वर्चुअल शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे

बीजिंग। चीन के प्रधानमंत्री ली कियांग भारत के न्योते पर बुधवार को जी20 नेताओं के वर्चुअल शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे। चीन के विदेश मंत्रालय ने मंगलवार को यहां यह जानकारी दी। नई दिल्ली में विदेश मंत्रालय (एमईए) ने एक बयान में कहा कि यह जी20 वर्चुअल शिखर सम्मेलन भारत की अध्यक्षता में सितंबर में हुए वार्षिक शिखर सम्मेलन के दौरान प्रमुख विषयों पर बनी सहमति व निष्कर्षों को आगे ले जाएगा। ऑनलाइन माध्यम से आयोजित किए जा रहे इस शिखर सम्मेलन में रूस-यूक्रेन युद्ध और इजराइल-हमास संघर्ष के प्रभाव पर भी चर्चा की जाएगी। बयान के अनुसार, दो महीने पहले नई दिल्ली में वार्षिक शिखर सम्मेलन के दौरान लिए गए विभिन्न निर्णयों के प्रभावी कार्यान्वयन पर बैठक में जोर दिए जाने की उम्मीद है।

यूक्रेन छोड़कर इजराइल आए शरणार्थी फिर से युद्ध में जी रहे

भाषा। अश्कलोन (इज़राइल)

यूक्रेन में रूस के हमले होने के बाद अपना देश छोड़ कर इजराइल में शरण लेने वाले यूक्रेनी नागरिक एक बार फिर युद्ध के माहौल में जीने को मजबूर है। उन्हें वही सब दोबारा झेलना पड़ रहा है जो वह अपने देश में पीछे छोड़कर आए थे। केंद्रीय सांख्यिकी ब्यूरो और सहायता समूहों के अनुसार, फरवरी 2022 में रूस द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण करने के बाद से 45,000 से अधिक यूक्रेनी नागरिकों ने इजराइल में शरण ली। रूस द्वारा मारियुपोल शहर में मचाई गई तबाही के बाद, करीब डेढ़ वर्ष पहले यूक्रेन से इजराइल आईं तात्याना प्राइमा ने सोचा था कि उन्होंने अपने जीवन में बम धमाकों की आवाजों को पीछे छोड़ दिया है, लेकिन एक बार फिर उन्हें वैसे ही माहौल में रहना पड़ रहा है। वह अपने घायल पति और छोटी बेटी के साथ यूक्रेन से सुरक्षित निकलने में कामयाब रहीं और परिवार के साथ दक्षिणी इजराइल में उन्होंने शरण ले ली। उन्हें लगा कि धीरे-धीरे उनके जीवन में शांति आ रही है, लेकिन सात अक्टूबर को हमास के चरमपंथी समूह द्वारा इजराइल पर हमला करने के साथ ही यह शांति फिर से समाप्त हो गई। उन्होंने कहा, बम धमाकों की ए आवाजें उन जख्मों को हरा कर देती हैं जो कि मारियुपोल में रूसी हमले के दौरान मिले। मारियुपोल रूसी हमलों से यूक्रेन के सबसे ज्यादा प्रभावित शहरों में से एक रहा है, जहां लोग कई हफ्तों तक बमबारी के बीच, भोजन, पानी के लिए भटकते रहे। दूरसंचार की सुविधा नहीं होने से यह लोग पूरी दुनिया से कट गए। प्राइमा ने कहा कि युद्ध के शुरुआती हफ्तों के दौरान उन्होंने घर के बाहर खाना पकाया, पीने के पानी के लिए बर्फ का इस्तेमाल किय।

खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में तीन आतंकवादी ढेर, एक सैनिक की भी मौत

पेशावर (पाकिस्तान)। पाकिस्तान के सुरक्षा बलो ने उत्तर पश्चिम पाकिस्तान के अशांत खैबर पख्तूनख्वा प्रांत मे खुफिया सूचना के आधार पर चलाए गए दो अभियान के दौरान कम से कम तीन आतंकवादियो को मार गिराया जबकि आईईडी विस्फोट मे एक सैनिक की भी मौत हो गई। सेना ने यह जानकारी दी। डेरा इस्माइल खान जिले के कुलाची इलाके मे सोमवार को आतंकवादियो और सुरक्षा बलो के बीच हुई जबरदस्त गोलीबारी मे दो आतंकवादियो को मार गिराया गया। पाकिस्तान सेना की सूचना शाखा ने एक बयान मे कहा कि दक्षिण वजीरिस्तान जिले के कोट आजम क्षेत्र मे चलाए गए एक अलग अभियान मे गोली लगने से एक आतंकवादी मारा गया। विभाग ने कहा कि सुरक्षा बलो ने मारे गए तीनो आतंकवादियो के पास से हथियार एवं गोलाबारूद बरामद किए।

उत्तर कोरिया आने वाले दिनों में सैन्य जासूसी उपग्रह का प्रक्षेपण करने की फिर कोशिश करेगा

तोक्यो। उत्तर कोरिया ने मंगलवार को जापान को अवगत कराया कि वह संयुक्त राष्ट्र प्रस्तावों का उल्लंघन करते हुए आने वाले दिनो मे एक उपग्रह का प्रक्षेपण करेगा। यह सैन्य जासूसी उपग्रह प्रक्षेपित करने का उत्तर कोरिया तीसरा प्रयास होगा और उसने पड़ोसी देश को इस बारे में अवगत करा दिया है। अमेरिका की तरफ से बढ़ते सैन्य खतरों के जवाब में उत्तर कोरिया जासूसी उपग्रह के प्रक्षेपण को लेकर काफी उत्सुक है। लेकिन जासूसी उपग्रह को कक्षा में स्थापित करने के इसके पिछले दो प्रयास तकनीकी समस्याओं के कारण विफल हो गए थे।

जलवायु परिवर्तन हो रहा है, पर ऐसा लगता है जैसे नहीं हो रहा?

भाषा। मेलबर्न

जलवायु-जनित आपदा अब पहले पन्ने की खबर है, क्योंकि रिकॉर्ड तोड़ बाढ़, आग, सूखा और तूफान आते रहते हैं। जलवायु परिवर्तन से होने वाली क्षति प्रणालीगत और व्यापक है, जिसकी गूंज हमारे समुदायों, अर्थव्यवस्थाओं और पर्यावरण में सुनाई देती है। यह कई तरीकों से प्रकट होता है, सुपरमार्केट की अलमारियों में खाली जगह से लेकर बाढ़ के बाद रहने लायक नहीं रह गए घरों तक, चिंतित समुदाय, ढहते पारिस्थितिकी तंत्र और क्षमता से अधिक आपातकालीन सेवाओं तक। जलवायु शोधकर्ताओं ने शुरू में यह मान लिया था कि यदि आप लोगों को सही जानकारी देंगे, तो वह उस पर कार्वाई करेंगे। जीवाश्म ईंधन को जलाने से गंभीर परिणाम सामने आते हैं – तो आइए चरणबद्ध तरीके से जीवाश्म ईंधन को खत्म करें। लेकिन

उन्हें जल्द ही पता चल गया कि मामला ऐसा नहीं है। कई लोगों के लिए, इसने संज्ञानात्मक असंगति को जन्म दिया, जहां उन्हें पता था कि जलवायु परिवर्तन हो रहा था, लेकिन उन्होंने ऐसा व्यवहार किया जैसे कि यह नहीं हो रहा था। बहरहाल, बहुत से लोग अभी भी धूम्रपान करते हैं, भले ही वे जानते हों कि यह उनके स्वास्थ्य के लिए बुरा है। और हम में से कई लोग अभी भी इटली के लिए उड़ान भरते हैं – भले ही हम जानते हैं कि हम ऐसा करके वायुमंडल में कितने अतिरिक्त टन कार्बन डाइऑक्साइड डाल रहे हैं। लेकिन इसे समझना इतना आसान लेकिन अमल में लाना इतना मुश्किल क्यों? परिवर्तन कठिन लगता है, कुछ भी नहीं करना आसान है। यह सार्वजनिक और निजी आख्यानों के कारण है जिनके साथ हम बड़े हुए हैं। जीवन से हमारी अपेक्षाएँ आराम और स्थिरता चाहने पर आधारित हैं। इसका मतलब यह है कि हम जिन प्रभावों (जैसे प्राकृतिक खतरों) का सामना कर रहे हैं, उनसे निपटने के लिए हर किसी ने सोचने के आवश्यक तरीके विकसित नहीं किए हैं। इनके कारण होने वाले अचानक परिवर्तन – जैसे घर का खो जाना – लगभग हमेशा चौंकाने वाले होते हैं और अविश्वास की भावना पैदा कर सकते हैं। यह कैसे हो सकता है? हम कब सामान्य स्थिति में आएँगे? निश्चित रूप से ऐसा दोबारा नहीं होगा? जलवायु परिवर्तन अनुकूलन जैसे प्रणालीगत जोखिमों पर हमारा शोध बताता है कि यह अलगाव आम है। क्योंकि हम स्थिर सामान्यता की आशा करते हैं और उसी की उम्मीद लगाते हैं, इसलिए हमारे लिए वास्तव में यह विश्वास करना कठिन है कि जो परिवर्तन हम देख रहे हैं वे जारी रहेंगे। किसे लाभ होता है और कौन भरपाई करता है, इसके बीच भी विभाजन है। आइसलैंड की आपकी पारिवारिक यात्रा आपको साझा यादों और अच्छे समय का लाभ देती है। उत्सर्जन के मामले में नुकसान दुनिया भर में फैला हुआ है।

ईवी से पर्यावरण को होगा लाभ

प्योर ईवी के रोहित वडेरा सह-संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने कहा इकोड्रिफ्ट 350 हमारे समर्पण का परिणाम है उपभोक्ताओं को गुणवत्ता वाले उत्पाद दे रहे हैं। हमारा यह मानना है की यह निकट भविष्य मे भारत के सड़क यातायात को पुनः परिभाषित करेगा जिसका लाभ पर्यावरण को भी होगा। उन्होंने कहा है कि हम भारत में जनता को व्यावहारिक और टिकाऊ गतिशीलता समाधान प्रदान करने के लिए समर्पित हैं। हम उस सकारात्मक प्रभाव की आशा करते हैं जो यह इलेक्ट्रिक वाहन परिदृश्य पर डालेगा। यह लॉन्च प्योर के व्यापक दृष्टिकोण से जुड़ता है जो लंबी दूरी वाले वाहनों को पूरी तरह से नई विशेषताओं के साथ लाने की मुख्य दिशा में है। 110 सीसी सेगमेंट के माध्यम से जोकि एक विश्वसनीय और पर्यावरण-सहयोगी विकल्प है। प्योर ईवी नई मोटरसाइकिल इकोड्रिफ्ट 350 लॉन्च हुआ है, जिसकी रेंज 171 किलोमीटर है। इकोड्रिफ्ट 350 को कम्यूटर सेगमेंट में (110 सीसी के आसपास) सबसे लंबी रेंज वाली ई-मोटरसाइकिल के रूप में पेश किया गया है, जो भारतीय सड़कों के लिए राइडर अनुभव को बेहतर बनाने के लिए तैयार की गई विशेषताओं की एक श्रृंखला की शोभा बढ़ाती है। पारंपरिक उत्पाद लॉन्च की तरह, प्योर ने पहले ही इकोड्रिफ्ट 350 को प्रमुख आउटलेट्स पर स्थापित कर दिया है जिससे उपभोक्ता बुकिंग करवाने के साथ टेस्ट ड्राइव ले सकते हैं।

THE PIONEER CLASSIFIEDS

CHANGE OF NAME

I, Ishbiliya Handoo D/o Sh. Bihari Lal Handoo & W/o Sh. Rakesh Bhat R/o E-1/14, DLF Phase -1, Gurugram, Haryana Have changed Name after Marriage Ishbiliya Handoo Bhat.
PD(199)A

सार्वजनिक सूचना

जन साधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती कुसम लता, सम्पति House No. 112 & 113, EWS-Category, Phase-1, Housing Board Colony, Palwal, Sector-2, Faridabad, Haryana 121102, को श्री सौरभ सिंह को बेचना चाह रही है जो मेरे मुवक्किल आईआईएफएल होम फाइनेंस लिमिटेड द्वारा वित्तपोषित व बंधक प्रस्तावित है। उपरोक्त संपत्ति के स्वामित्व सम्बंधित मूल दस्तावेज़ आवंटन पत्र दिनांक 23.12.2003, संप्रेषण विलेख दिनांक 01.09.2005 पंजीकृत द्वारा प्रपत्र संख्या 5551 व संप्रेषण विलेख दिनांक 19.09.2005 पंजीकृत द्वारा प्रपत्र संख्या 5249 कहीं गुम हो गए है। इस सन्दर्भ में हरियाणा पुलिस को सूचना शिकायत आवेदन संख्या 132600712301425 में दर्ज करवाई गई है। यदि उपरोक्त मूल दस्तावेज़ किसी भी व्यक्ति के कब्जे में हो तो कृपया हमे इस नोटिस की तारीख से 7 दिनों के भीतर निम्नलिखित पते पर संपर्क करें। उपरोक्त गुम हो गए मूल दस्तावेज़ों के आधार पर उपरोक्त संपत्ति के संबंध में किसी भी प्रकार का दावा अमान्य माना जाएगा।
राघव तिवारी, अधिवक्ता
830, पटियाला हाउस कोर्ट, नई दिल्ली 110001
Mob.:+91-8076188328

PUBLIC NOTICE

It is to inform to the public at large that **Mrs. Sunita Rathaur** who is purchasing the Built-up Third Floor, with roof rights, out of Property bearing portion No. E-53-A, area admeasuring 122.1/2 Sq. Yards, Khasra No.5/6, along with one bike parking, situated in the area of Nilothi colony known as Shiv Vihar Block E, Nilothi Ext., New Delhi-110041; from **S. Darshan Singh** S/o S. Mahender Singh, who is owner/attorney holder of(1) Mr. Ashish Anand (2) Mr. Jasvinder Singh vide notarized GPA, SPA, ATS and Will dated 11.08.2021; and same to be finance & mortgage by **Shubham Housing Development Finance Co. Limited.** To comply the requirements of BANK/NBFC, we give this public notice that if any Person having any type of claim / right / title / interest / creating mortgage over the said property, may inform in writing, at the address mentioned below, about his objections, within 07 days from today, failing which it shall be presumed that the said property is free from all type of Encumbrances, lien etc.
Lucem Legal LLP
Plot No.136, (Basement) Uday Park, New Delhi-110049,Contact # 011-40046316

सार्वजनिक सूचना

आम जनता को एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि श्री सचिन भाटिया, छत के साथ/बिना छत अधिकार के द्वितीय तल और तृतीय तल, प्लॉट नंबर 52 पर निर्मित, खसरा नंबर 31, कृष्णा पार्क एक्सटेंशन गांव नगली जालब, दिल्ली राज्य दिल्ली, अपनी माँ स्वर्गीय श्रीमती सरोज भाटिया जो दिनांक 07.09.1973, दस्तावेज सं. 3551 के तहत पंजीकृत जनरल पावर ऑफ अटॉर्नी के माध्यम से इस संपति की मालकिन थी उसकी मृत्यु के बाद उत्तराधिकार के माध्यम से मालिक है। श्री सुरजन पुत्र श्री मान सिंह (II) श्री भूल्ले राम पुत्र श्री दलीप सिंह (III) श्री जगपाल सिंह पुत्र श्री दलीप सिंह (IV) श्री राम सिंह (नाबालिग) अपने अभिभावक (सगा भाई) भूल्ले राम पुत्र श्री दलीप सिंह (V) श्रीमती बीरो पुत्री श्री दलीप सिंह (VI) श्रीमती होशियारी (नाबालिग) पुत्री श्री दलीप सिंह अपने अभिभावक (सगा भाई) भूल्ले राम पुत्र श्री दलीप सिंह (VII) श्री हरिओम (नाबालिग) पुत्र श्री अर्जुन और (VIII) कुमारी दर्शन(नाबालिग) पुत्री श्री अर्जुन (मृतक) (अपनी माँ) श्रीमती बिरहमो देवी पत्नी श्री अर्जुन (IX) श्रीमती बिरहमो देवी, के द्वारा निष्पादित पंजीकृत जनरल पावर ऑफ अटॉर्नी दिनांक 07.09.1973 क्रम सं. 3551, सभी व्यक्तियों को एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि श्री संकेत शर्मा, श्री सुशील कुमार (द्वितीय तल) और श्री महेश कुमार एंव श्रीमती रेनू बाला (तृतीय तल) उक्त संपत्ति को एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट कंपनी लिमिटेड (पूर्व में फुलर्टन इंडिया क्रेडिट कंपनी लिमिटेड) के पास गिरवी रख दिया है। यदि किसी व्यक्ति को उक्त संपत्ति में कोई प्रभार/हित/अधिकार है या किसी भी प्रकार का विवाद है, तो कृपया अधोहस्ताक्षरी को नीचे दिए गए पते पर लिखित रुप मे वर्तमान से 07 दिनों के भीतर सूचित करें। श्रीमती प्रसून लता, अधिवक्ता
एसजी एसोसिएट्स (लॉ फर्म)
एफएफ18, लोटस पॉन्ड प्लाजा, वैभव खंड, इंदिरापुरम, गाजियाबाद 201014
ईमेल sgassociatespl@gmail.com,फोन 7011172764, 8130200837

PUBLIC NOTICE

Notice is hereby given that my client Alish Sharma is availing the LAP from Piramal Capital & Housing Finance Limited against his Property bearing No. K-705, having land area measuring 100 Sq. Yds., pertaining to the Khasra No. 682, situated at Gali No. 2, in the abadi known as Nehru Marg, Gautam Vihar, in the area of Village Ghonda Gujran Khadar, Illaqa Shahdara, Delhi purchased vide sale deed dated 27-10-2023 (doc. No. 3466) executed by Mr. Sunil Mishra.
All person/s having any claim against or in respect of the said Property, or any part thereof, by way of sale, exchange, mortgage (equitable/registered or otherwise), gift, trust, inheritance, family arrangement, maintenance, bequest, partnership, possession, lease, sublease, tenancy, license, lien, charge, pledge, easement or otherwise howsoever, are hereby requested to notify the same in writing to us with supporting documentary evidence at the address mentioned below within 7 days from the date hereof, failing which the claim or claims, if any, of such person or persons will be considered to have been waived and/or abandoned.
Kamal Kant Gupta (Advocate)
Unit No. FF-2, First floor, Mahaluxmi Metro Tower Sec-4, Vaishali, Gzb., U.P., Mob. 9810063351

PUBLIC NOTICE

This is to inform the general public that **Mr. Murari Lal Sharma**is the unequivocal owner of Entire Third Floor, with roof terrace rights built on property bearing no. 120, area measuring 90 Sq. mtrs., in Pocket-1, Sector-22, situated in the layout plan of Rohini Residential Scheme, Rohini, Delhi. This legal ownership was established through a Relinquishment Deed dated 24.12.2020 vide doc. No. 4146 executed by Mrs. Lata Sharma, Mr. Nand Kishore, Mrs. Jyoti Jangid, Mr. Vijay Sharma and Mr. Devinder Kumar Sharma. **Mr. Murari Lal Sharma**intends to transferthe ownership by way of Sale Deed of the aforementioned property to Mr. Saurabh Arora and Mr. Virender Arora. Subsequently **Mr. Saurabh Arora and Mr. Virender Arora**are in the process of mortgaging the said property with **RBL Bank Ltd. (Our Client).**Any objections or concerns regarding this transaction should be raised within a period of 7 days from the date of this public notice. Any objections submitted after the completion of this 7-day period will not be considered binding with respect to the said property or the interests of our client.If anyone wishes to raise an objection, please do so within the stipulated 7-day period by contacting **Law Veritas: North (Advocates & Legal Consultants) at Office No. 11, 1st Floor, Building No. A-44/A, Sector-16, Noida, Uttar Pradesh-201301;Landline(s):+910120-3101683 /4562809; e-mail: accounts@lvnorth.in**

पायनियर
नई दिल्ली, बुधवार, 22 नवंबर 2023

भारत ने एलएसी पर बुनियादी ढांचे के निर्माण में देर की, अब तेजी से काम जारी: लेफ्टिनेंट जनरल कालिता

गुवाहाटी। थलसेना की पूर्वी कमान के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल राणा प्रताप कालिता ने मंगलवार को कहा कि भारत ने चीन से लगी सीमा पर बुनियादी ढांचे के निर्माण में पड़ोसी देश की तुलना में देर से शुरुआत की, लेकिन अब इसपर तेजी से काम किया जा रहा है। पूर्वी कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ ने यह भी कहा कि वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर स्थिति सामान्य लेकिन कुछ हद तक अप्रत्याशित है। कालिता ने गुवाहाटी प्रेस क्लब के अतिथि के रूप में कहा, उन्होंने (चीन ने) हमसे बहुत पहले बुनियादी ढांचे का निर्माण शुरू कर दिया था। एक राष्ट्र के रूप में हमने बुनियादी ढांचे का निर्माण देर से शुरू किया, लेकिन अब हम इसमें तेजी ला रहे हैं।

उन्होंने कहा कि चीन से लगी सीमा पर बुनियादी ढांचे के निर्माण में जबरदस्त प्रयास किया गया है, चाहे वह लद्दाख हो या सिक्किम या अरुणाचल प्रदेश या उत्तराखंड या हिमाचल। सरकार बुनियादी कनेक्टिविटी के लिए सड़कें और ट्रैक और मोबाइल संचार के लिए हेलीपैड बना रही है। कलिता ने कई विषयों पर खुलकर बात करते हुए कहा, जीवंत ग्राम कार्यक्रम के तहत, भारत एलएसी के करीब स्थित गांवों में बहुत सारे बुनियादी ढांचे का निर्माण कर रहा है ताकि शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल जैसी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध हों।

भारत और चीन के बीच सीमा क्षेत्रों की मौजूदा स्थिति के बारे में उन्होंने कहा, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश में एलएसी के संबंध में स्थिति सामान्य लेकिन कुछ हद तक अप्रत्याशित बनी हुई है। मुद्दों का समाधान होने तक समस्याएं बनी रहेंगी। उन्होंने कहा कि भू-राजनीतिक परिदृश्य में एक बदलाव आ रहा है और सिविल सोसाइटी की भागीदारी के बिना केवल सशस्त्र बल भविष्य में होने वाला कोई युद्ध नहीं जीत सकते। कालिता ने कहा कि बदलाव ने भारतीय थलसेना को प्रभावित किया है, जो फिलहाल पांच अलग-अलग कार्यक्षेत्रों में एक बड़े बदलाव के दौर से गुजर रही है। उन्होंने कहा, रूस-यूक्रेन युद्ध जारी है, इजराइल-हमास संघर्ष भी जारी है। हमारे पड़ोस में भी काफी अस्थिरता है। लिहाजा, पूरी भू-राजनीति बदल रही है। एक बदलाव हो रहा है। और इसका प्रभाव न केवल हमारे देश पर बल्कि हमारी सशस्त्र सेनाओं पर भी पड़ता है। लेफ्टिनेंट जनरल कालिता ने कहा, चूंकि चारों ओर परिवर्तनै हो रहे हैं, तकनीकी विकास हो रहा है तो इससे युद्ध के तरीकों पर प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने कहा, केवल सशस्त्र बल ही भविष्य में कोई युद्ध नहीं जीत सकते। पूरे देश को प्रयास करना होगा। पूरे देश के हर वर्ग को भविष्य की लड़ाई में भाग लेना होगा। हाल के इजराइल-हमास संघर्ष और रूस-यूक्रेन संघर्ष से यह साबित होता है। कलिता ने कहा कि वर्तमान समय के युद्ध में, आबादी का कोई भी हिस्सा अछूता नहीं रहता और इससे नागरिक-सैन्य समन्वय का महत्व पता चलता है। इसलिए, युद्ध लड़ने की पद्धति भी बदल रही है। यही कारण है कि 2023 को भारतीय सेना ने परिवर्तन के वर्ष के रूप में चिन्हित किया है।

यूजीसी नेट पाठ्यक्रम को संशोधित करेगा

नई दिल्ली। विवि अनुदान आयोग के अध्यक्ष जगदीश कुमार ने मंगलवार को कहा कि यूजीसी राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा के पाठ्यक्रम को संशोधित करेगा और इस प्रक्रिया के लिए एक विशेषज्ञ समिति बनाएगा। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी, जूनियर रिसर्च फेलोशिप (जेआरएफ) के लिए यूजीसी-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (यूजीसी-नेट) आयोजित करती है, तथा भारतीय और कुछ विदेशी भाषाओं सहित मानविकी और सामाजिक विज्ञान के विषयों के साथ कुछ विज्ञान विषयों में सहायक प्रोफेसरों की नियुक्ति के लिए पात्रता परीक्षा के रूप में आयोजित करती है। यूजीसी-नेट परीक्षा 83 विषयों में हर साल दो बार, आमतौर पर जून और दिसंबर में आयोजित की जाती है। यूजीसी ने आखिरी बार 2017 में यूजीसी-नेट विषयों के पाठ्यक्रम को अद्यतन करने की प्रक्रिया शुरू की थी। कुमार ने कहा, 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की शुरुआत के बाद, बहु-विषयक पाठ्यक्रम और समग्र शिक्षा प्रदान करने के लिए उच्च शिक्षा में काफी विकास हुआ है।

नई दिल्ली में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ संसद भवन में बच्चों से मुलाकात करते हुए।

विपक्षी गठबंधन से जुड़े छात्र संगठन राष्ट्रीय शिक्षा नीति के खिलाफ संसद तक मार्च निकालेंगे

नई दिल्ली। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के खिलाफ विपक्षी गठबंधन इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इंक्लूसिव अलायंस (इंडिया) से संबंधित संगठनों सहित विभिन्न छात्र संगठन यूनाइटेड स्टूडेंट्स ऑफ इंडिया के बैनर तले एक साथ आए हैं और वे अगले साल 12 जनवरी को संसद तक मार्च निकालेंगे। छात्र संगठनों के प्रतिनिधियों ने कहा कि लगभग पांच करोड़ छात्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले 16 संगठन राष्ट्रीय शिक्षा नीति के विरोध में एक साथ आए हैं और शिक्षा को मुफ्त करने सहित नीति में सुधारों की मांग की है।

संवाददाताओं को यहां संबोधित करते हुए द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम (द्रमुक) की छात्र शाखा के सचिव सी.वी.एम.पी. एझीरासन ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति वाणिज्यीकरण, भगवाकरण और निजीकरण को बढ़ावा दे रही है और यह सामाजिक न्याय के विचार के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि सरकार को स्कूल से लेकर स्नातक स्तर तक मुफ्त शिक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए और एक राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम लाना चाहिए एझीरासन ने कहा कि छात्र समूह 12 जनवरी को दिल्ली में संसद मार्च निकालेंगे तथा एक फरवरी को चेन्नई में एक और रैली आयोजित की जाएगी।

यूनाइटेड स्टूडेंट्स ऑफ इंडिया ने एक बयान में कहा, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा)नीत मौजूदा केंद्र सरकार के शासनकाल में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर हमला भारत में खतरनाक उंचाइयों को छू रहा है। बयान के मुताबिक, आरएसएस समर्थित सरकार का लक्ष्य न केवल सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली को कमजोर और नष्ट करना है, बल्कि वह शिक्षा प्रणाली को एक सांप्रदायिक, विनाशकारी योजना से बदलना चाहती है, जो शिक्षा की संवैधानिक दृष्टि के विपरीत है। भाजपा सरकार ने पाठ्यपुस्तकों से देश के नाम इंडिया को हटाने का प्रयास भी शुरू कर दिया है।

आपराधिक कानूनों को हिंदी में दिए गए नामों पर समिति की मुहर

नई दिल्ली। संसद की एक समिति ने कुछ राजनीतिक दलों और उनके नेताओं द्वारा की जा रही आलोचनाओं को खारिज करते हुए कहा है कि तीन प्रस्तावित आपराधिक कानूनों को हिंदी में दिए गए नाम असंवैधानिक नहीं हैं। भाजपा सांसद बृजलाल की अध्यक्षता वाली गृह मामलों की स्थाई संसदीय समिति ने संविधान के अनुच्छेद 348 के शब्दों का संज्ञान लिया, जिसमें कहा गया है कि उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों के साथ-साथ अधिनियमों, विधेयकों और अन्य कानूनी दस्तावेजों में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा अंग्रेजी होनी चाहिए।

राज्यसभा को सौंपी गई रिपोर्ट में कहा गया, समिति ने पाया कि चूंकि संहिता का पाठ अंग्रेजी में है, इसलिए यह संविधान के अनुच्छेद 348 के प्रावधानों का उल्लंघन नहीं करता है। समिति गृह मंत्रालय के जवाब से संतुष्ट है और मानती है कि प्रस्तावित कानून को दिया गया नाम भारत के संविधान के अनुच्छेद 348 का उल्लंघन नहीं है। भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस-2023), भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसए-2023) और भारतीय साक्ष्य अधिनियम (बीएसए-2023) को 11 अगस्त को लोकसभा में पेश किया गया था। प्रस्तावित कानून क्रमश: भारतीय दंड संहिता, 1860, आपराधिक प्रक्रिया अधिनियम, 1898 और भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 की जगह लेंगे।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी चिदंबरम ने केंद्र सरकार द्वारा विधेयकों को हिंदी नाम देने के पीछे के तर्क पर सवाल उठाया था। उन्होंने कहा था, मैं यह नहीं कह रहा हूं कि (विधेयकों में) हिंदी नाम नहीं दिए जाने चाहिए। जब अंग्रेजी का उपयोग किया जाता है तो इसे अंग्रेजी नाम दिया जा सकता है। यदि हिंदी का उपयोग किया जाता है, तो इसे हिंदी नाम दिया जा सकता है। जब कानूनों का मसौदा तैयार किया जाता है तो यह अंग्रेजी में किया जाता है और बाद में इसका हिंदी में अनुवाद किया जाता है। लेकिन उन्होंने विधेयक के कानूनों और प्रावधानों का मसौदा अंग्रेजी में तैयार किया है और इसे हिंदी नाम दिया है। इसका उच्चारण करना भी मुश्किल है।

तमिलनाडु की सत्तारूढ़ द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) ने भी प्रस्तावित आपराधिक कानूनों के लिए हिंदी नामों के उपयोग के खिलाफ कड़ी आपत्ति जताई थी। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने कहा था कि केंद्र के इस कदम से भाषाई साम्राज्यवाद की बू आती है और यह अनौपनिवेशीकरण के नाम पर पुन: औपनिवेशीकरण करने का प्रयास है। मद्रास बार एसोसिएशन ने तीनों विधेयकों के नाम हिंदी में रखने के केंद्र के कदम को संविधान के खिलाफ बताया था। एसोसिएशन ने इस संबंध में एक प्रस्ताव भी पारित किया था।

द्रमुक सांसद दयानिधि मारन ने समिति के अध्यक्ष बृजलाल को एक पत्र भेजकर विधेयकों के हिंदी शीर्षकों पर आपत्ति जताते हुए कहा था कि ए देश की संगठित प्रकृति का उल्लंघन करते हैं जहां नागरिक हिंदी के अलावा कई अन्य भाषाएं बोलते हैं। हालांकि, केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने स्टालिन के बयान को ओछी राजनीति करार दिया था।

प्रधान ने कहा था कि इस तरह की तुच्छ राजनीति तमिलनाडु के मुख्यमंत्री की राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को पूरा कर सकती है लेकिन यह भारत की भावना को कमजोर करती है। समिति के विचार-विमर्श के दौरान केंद्रीय गृह सचिव अजय भल्ला ने द्रमुक के एन आर इलांगो, दयानिधि मारन और कांग्रेस के दिग्विजय सिंह सहित कुछ विपक्षी सांसदों की आपत्तियों को दूर करने का भी प्रयास किया। भल्ला ने कथित तौर पर कहा था कि किसी भी संवैधानिक प्रावधान का कोई उल्लंघन नहीं हुआ है क्योंकि विधेयक और उनके पाठ अंग्रेजी में लिखे गए हैं। उन्होंने सांसदों से कहा कि जैसा कि अनुच्छेद 348 में सभी विधेयकों, अधिनियमों और अध्यादेशों में अंग्रेजी भाषा के उपयोग का प्रावधान है, अगर विधेयकों को अंग्रेजी में लिखा गया है तो कोई उल्लंघन नहीं है।

महाभारत को सामाजिकविज्ञान पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए: एनसीईआरटी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) की एक उच्चस्तरीय समिति ने सिफारिश की है कि सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों को शामिल किया जाना चाहिए तथा कक्षाओं की दीवारों पर संविधान की प्रस्तावना लिखी जानी चाहिए। यह जानकारी समिति के अध्यक्ष सी. आई. आईजैक ने दी। पिछले साल गठित सात सदस्यीय समिति ने सामाजिक विज्ञान पर अपने अंतिम स्थिति दस्तावेज के लिए कई सिफारिश की हैं, जो नई एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों के विकास की नींव रखने के लिए एक महत्वपूर्ण निर्देशात्मक दस्तावेज है।

एनसीईआरटी ने अभी तक सिफारिशों पर कोई फैसला नहीं लिया है। आइजैक ने कहा, समिति ने छात्रों को सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों को पढ़ाने पर जोर दिया है। हमारा मानना है कि छात्र किशोरावस्था में अपने आत्मसम्मान, देशभक्ति और अपने राष्ट्र के लिए गौरव का निर्माण करते हैं। उन्होंने कहा कि हर साल हजारों छात्र देश छोड़कर दूसरे देशों में नागरिकता चाहते हैं क्योंकि उनमें देशभक्ति की कमी है।

आइजैक ने कहा, इसलिए, उनके लिए अपनी जड़ों को समझना और अपने देश तथा अपनी संस्कृति के प्रति प्रेम विकसित करना महत्वपूर्ण है। कुछ बोर्ड पहले से ही रामायण और महाभारत पढ़ाते हैं लेकिन इसे और अधिक विस्तृत तरीके से किया जाना चाहिए। उन्होंने पूर्व में कहा था कि इसी समिति ने पाठ्यपुस्तकों में देश का नाम इंडिया के स्थान पर भारत करने, पाठ्यक्रम में प्राचीन इतिहास के बजाय क्लासिकल हिस्ट्री को शामिल करने और कक्षा तीन से कक्षा 12 तक की पाठ्यपुस्तकों में हिंदुओं की जीतों को रेखांकित करने की भी सिफारिश की थी। आइजैक ने कहा, हमारी प्रस्तावना लोकतंत्र और पंथनिरपेक्षता सहित सामाजिक मूल्यों को महत्व देती है। यह महान है।

कांग्रेस नेता राहुल ने कहा, पीएम का मतलब पनौती मोदी

जयपुर। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मंगलवार को राजस्थान में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा कि पीएम का मतलब पनौती मोदी है। क्रिकेट विश्व कप फाइनल में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भारत की हार का जिक्र करते हुए राहुल गांधी ने दुर्भाग्य से जुड़े इस शब्द का इस्तेमाल किया। मैच में हार के बाद से सोशल मीडिया पर पनौती शब्द ट्रेंड कर रहा है। मैच के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अहमदाबाद स्थित स्टेडियम में मौजूद थे। इस स्टेडियम का नाम प्रधानमंत्री मोदी के नाम पर रखा गया है। राहुल ने आरोप लगाया कि मोदी लोगों का ध्यान भटकाते हैं जबकि उद्योगपति अडाणी उनकी जेब काटते हैं। उन्होंने कहा कि मोदी टीवी पर आते हैं और हिंदू-मुस्लिम कहते हैं और कभी-कभी क्रिकेट मैच में चले जाते हैं। वो अलग बात है कि हरवा दिया... पनौती।

प्रधानमंत्री के खिलाफ राहुल गांधी की टिप्पणी शर्मनाक, माफी मांगे: भाजपा

नई दिल्ली। भाजपा ने मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पनौती मोदी कहने के लिए कांग्रेस नेता राहुल गांधी की आलोचना की और उनकी टिप्पणी को शर्मनाक व अपमानजनक करार देते हुए उनसे माफी की मांग की। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने राजस्थान में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा कि पीएम का मतलब पनौती मोदी है। क्रिकेट विश्व कप फाइनल में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भारत की हार का जिक्र करते हुए राहुल गांधी ने दुर्भाग्य से जुड़े इस शब्द (पनौती) का इस्तेमाल किया। मैच में हार के बाद से सोशल मीडिया पर पनौती शब्द ट्रेंड कर रहा है। इस पर पलटवार करते हुए भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री के बारे में गांधी की टिप्पणी, शर्मनाक, निंदनीय और अपमानजनक है। प्रसाद ने कहा, उन्होंने अपना असली रंग दिखा दिया है, लेकिन उन्हें याद रखना चाहिए कि उनकी मां सोनिया गांधी द्वारा गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री मोदी को मौत का सौदागर कहे जाने के बाद कांग्रेस गुजरात में कैसे डूब गई थी। कांग्रेस नेता की टिप्पणी पर प्रतिक्रिया मांगे जाने पर प्रसाद ने संवाददाताओं से कहा, मैं प्रधानमंत्री के बारे में राहुल गांधी की टिप्पणी की कड़ी निंदा करता हूं। भाजपा नेता ने दावा किया कि गांधी ने विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की आसन्न हार को देखते हुए हताशा में प्रधानमंत्री मोदी के खिलाफ ऐसी टिप्पणी की है। उन्होंने कहा, राहुल गांधी को माफी मांगनी चाहिए। अन्यथा हम इस मुद्दे को बहुत गंभीर बना देंगे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेता ने मोदी के खिलाफ अपनी टिप्पणी से अपना असली रंग दिखा दिया है कि उनकी हैसियत और समझ क्या है?

उन्होंने कहा, अगर यह पता ही नहीं है कि किसकी आबादी कितनी है, तो हम भागीदारी के बारे में कैसे बात करेंगे। उन्होंने कहा, अगर हम अधिकारों की, भागीदारी देने की बात कर रहे हैं तो हमें यह तो पता लगाना ही पड़ेगा कि कितने लोग किस जाति, समाज के हैं। इसी को हम जाति जनगणना कहते हैं। जाति जनगणना देश का एक्स-रे है। राजस्थान में हमारी सरकार आएगी तो हम यहां जाति जनगणना शुरू कर देंगे। और केंद्र में आएगी तो पूरे देश की हम जाति जनगणना कर देंगे। पिछड़ों को, आदिवासियों को, दलितों को साफ बता देंगे कि आपकी आबादी कितनी है। पहले मोदी कहते थे कि वह ओबीसी हैं, लेकिन जिस दिन उन्होंने (गांधी ने) जाति जनगणना की मांग उठाई, मोदी ने कहना शुरू कर दिया कि भारत में केवल एक ही जाति है - गरीब। प्रधानमंत्री पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा, मैंने संसद में बोला कि नरेंद्र मोदी जी जाति जनगणना करवाइए। उस दिन के बाद मोदी जी के भाषण बिलकुल बदल गए। पहले वे कहते थें मैं ओबीसी हूं। हर भाषण में, दस-पंद्रह बार, मैं ओबीसी हूं (कहते थे)। जिस दिन मैंने जाति जनगणना की बात की.. उस दिन के बाद मोदी कहते हैं... हिंदुस्तान में एक ही जात है - गरीब। हिंदुस्तान में न ओबीसी, आदिवासी, न दलित... सिर्फ एक जात है - गरीब।

कांग्रेस नेता ने कहा, एक बात उन्होंने नहीं कही कि एक जात गरीब है तो दूसरी जात अरबपतियों की भी है। अडाणी, अंबानी की है उनकी स्पेशल जात है। राहुल ने कहा, चुनाव लड़ना है तो मैं ओबीसी, भागीदारी देनी है तो एक ही जात-गरीब? उद्योगपति अडाणी को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने कहा, जेबकतरा क्या करता है? जेबकतरा पहले आपका ध्यान इधर-उधर करता है, दूसरी तरफ से कोई अन्य बंदा आकर आपकी जेब काट लेता है। तो नरेन्द्र मोदी जी का काम आपका ध्यान इधर उधर करने का है, पीछे से अडाणी जेब काट देता है। यह टीम है। आपको कहते हैं हिंदू मुस्लिम, पीछे से अडाणी ने जेब काट दी... आपको कहते हैं कि देखो शाहरुख-ऐश्वर्या राय नाच रहे हैं, पीछे से जेब काट दी... कहते हैं क्रिकेट चल रहा है पीछे से जेब काट दी। यह हो रहा है।

उत्तराखंड में मजदूर फंसे हुए हैं चौबीस घंटे मीडिया, क्रिकेट की बात कर रही है। अच्छी बात है? दो मिनट हमारे मजदूरों को भी दे दो। उन्होंने कहा, मेरा कहना है मीडिया में चौबीस घंटे मोदी का चेहरा आता है क्यों .. क्योंकि नरेंद्र मोदी जी इनका काम करत है। अडाणी, अंबानी व नरेन्द्र मोदी, बड़ा अच्छा सौदा है। नरेंद्र मोदी जी जीएसटी का पैसा उधर भेजते हैं, वे नरेंद्र मोदी का चेहरा इधर दिखाते हैं। कांग्रेस पार्टी आदिवासियों के अधिकारों की रक्षा करेगी। उन्होंने कहा, जब तक कांग्रेस पार्टी है तब तक आदिवासियों के अधिकारों की हम रक्षा करेंगे। आपके साथ खड़े होकर हम आपके बच्चों को शिक्षा दिलवाएंगे, आपको नि:शुल्क स्वास्थ्य सुरक्षा दिलाएंगे और आपका जल, जमीन व जंगल पर जो हक बनता है, हम वह आपको दिलवाएंगे।

भारत-अमेरिका संयुक्त विशेष बल अभ्यास वज्र प्रहार की शुरुआत

गुवाहाटी। भारत-अमेरिका संयुक्त विशेष बल अभ्यास वज्र प्रहार, 2023 के 14वें संस्करण की मंगलवार को मेघालय के उमरोई छावनी के ज्वाइंट ट्रेनिंग नोड में शुरुआत हुई। रक्षा विभाग द्वारा जारी विज्ञप्ति के मुताबिक, अमेरिकी सैन्यदल का नेतृत्व अमेरिकी विशेष बल के प्रथम स्पेशल फोर्सेस ग्रुप (एसएफजी) के कर्मियों ने किया जबकि भारतीय सेना के दल का नेतृत्व पूर्वी कमांड के विशेष बल कर्मियों ने किया। 20 दिवसीय अभ्यास वज्र प्रहार भारतीय सेना और अमेरिकी सेना के विशेष बलों के बीच एक संयुक्त अभ्यास है, जिसका उद्देश्य संयुक्त मिशन योजना व युद्ध रणनीति जैसे क्षेत्रों में सर्वोत्तम तौर-तरीकों और अनुभवों को साझा करना है। पहला संस्करण वर्ष 2010 में भारत में आयोजित किया गया था और भारत-अमेरिका संयुक्त विशेष बल अभ्यास का 13 वां संस्करण विशेष बल प्रशिक्षण स्कूल (एसएफटीएस), बकलोह (एचपी) में आयोजित किया गया था।

अभ्यास का पहला संस्करण वर्ष 2010 में भारत में आयोजित किया गया था जबकि भारत-अमेरिका संयुक्त विशेष बल अभ्यास का 13वां संस्करण हिमाचल प्रदेश के बकलोह में स्पेशल फोर्सेस ट्रेनिंग स्कूल में आयोजित किया गया था। विज्ञप्ति के मुताबिक, अगले तीन सप्ताह के दौरान दोनों पक्ष संयुक्त रूप से पहाड़ी इलाकों में पारंपरिक और अपरंपरागत परिदृश्यों में विशेष अभियान, आतंकवाद विरोधी अभियान, हवाई अभियान योजना बनाएंगे और उनका अभ्यास करेंगे। विज्ञप्ति में बताया गया कि यह अभ्यास दोनों देशों के विशेष बलों के बीच विचारों के आदान-प्रदान और सर्वोत्तम तौर-तरीकों को साझा करने के एक तंत्र के रूप में विकसित हुआ है। विज्ञप्ति के मुताबिक, यह अभ्यास भारत और अमेरिकी सेनाओं के बीच पारस्परिकता बढ़ाने और रक्षा सहयोग को मजबूत करने का भी एक मंच है। मौजूदा अभ्यास 11 दिसंबर को समाप्त होगा।

न्यायालय ने पतंजलि को विज्ञापनों में अपनी दवाओं के बारे में झूठे दावे करने के खिलाफ चेताया

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने योग गुरु रामदेव द्वारा सह-स्थापित और हर्बल उत्पादों का कारोबार करने वाली कंपनी पतंजलि आयुर्वेद को कई रोगों के संबंध में अपनी दवाओं के बारे में विज्ञापनों में झूठे और भ्रामक दावे करने के प्रति मंगलवार को आगाह किया। न्यायमूर्ति अहसानुद्दीन अमानुल्लाह और न्यायमूर्ति प्रशांत कुमार मिश्रा की पीठ ने इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) की याचिका पर सुनवाई करते हुए मौखिक टिप्पणी में कहा, पतंजलि आयुर्वेद के ऐसे सभी झूठे और भ्रामक विज्ञापनों को तुरंत रोकना होगा। अदालत ऐसे किसी भी उल्लंघन को बहुत गंभीरता से लेगी...।

शीर्ष अदालत ने टीकाकरण अभियान और आधुनिक दवाओं के खिलाफ रामदेव पर अभियान का आरोप लगाने वाली आईएमए की याचिका पर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और आयुष मंत्रालय तथा पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड को नोटिस जारी किया था। संक्षिप्त सुनवाई के दौरान पीठ ने पतंजलि आयुर्वेद से कहा कि वह चिकित्सा की आधुनिक पद्धतियों के खिलाफ भ्रामक दावे और विज्ञापन प्रकाशित न करें।

न्यायालय ने कहा कि यदि यह गलत दावा किया जाता है कि किसी विशेष बीमारी को ठीक किया जा सकता है तो पीठ प्रत्एक उत्पाद पर 1 करोड़ रुपए का जुर्माना लगाने पर भी विचार कर सकती है। शीर्ष अदालत ने केंद्र की ओर से पेश वकील से भ्रामक चिकित्सा विज्ञापनों के मुद्दे का समाधान तलाशने को कहा, जहां कुछ बीमारियों का सटीक इलाज करने वाली दवाओं के बारे में दावे किए जा रहे हैं। पीठ अब आईएमए की याचिका पर अगले साल 5 फरवरी को सुनवाई करेगी। शीर्ष अदालत ने याचिका पर नोटिस जारी करते हुए एलोपैथी और एलोपैथिक चिकित्सकों की आलोचना करने के लिए रामदेव की कड़ी आलोचना की थी और कहा था कि उन्हें डॉक्टरों और उपचार की अन्य प्रणालियों को बदनाम करने से रोका जाना चाहिए।

तत्कालीन प्रधान न्यायाधीश एन वी रमण की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा था, गुरु स्वामी रामदेव बाबा को क्या हुआ है?...हम उनका सम्मान करते हैं क्योंकि उन्होंने योग को लोकप्रिय बनाया। हम सभी इसे करते हैं। लेकिन, उन्हें दूसरी पद्धति की आलोचना नहीं करनी चाहिए। पीठ ने कहा था, इसकी क्या गारंटी है कि आयुर्वेद, जो भी पद्धति वह अपना रहे हैं, वह काम करेगी? आप ऐसे विज्ञापनों को देखते हैं जिनमें सभी डॉक्टरों पर ऐसे आरोप लगाए जाते हैं मानो वे हत्यारे हों। बड़े-बड़े विज्ञापन दिए गए हैं। आईएमए ने कई विज्ञापनों का हवाला दिया था, जिनमें कथित तौर पर एलोपैथ और डॉक्टरों को गलत तरीके से दिखाया गया था। आम जनता को गुमराह करने के लिए आयुर्वेदिक दवाओं के उत्पादन में लगी कंपनियों द्वारा भी अपमानजनक बयान दिए गए हैं।

पश्चिम बंगाल में चार औद्योगिक गलियारों का गठन, गांगुली होंगे ब्रांड एंबेसडर: ममता

भाषा। कोलकाता

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मंगलवार को सातवें बंगाल वैश्विक व्यापार शिखर सम्मेलन में राज्य से निर्यात दोगुना करने, लॉजिस्टिक क्षमता को आधुनिक बनाने और नवीकरणीय ऊर्जा विनिर्माण के प्रोत्साहन की योजनाओं समेत कई नई नीतियों की घोषणा की। बनर्जी ने यहां आयोजित व्यापार शिखर सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए पूर्वी क्षेत्र में इंटरनेट कनेक्टिविटी सुधारने के लिए दीघा के समुद्री रिसॉर्ट में एक नए केबल लैंडिंग स्टेशन और जैव-ईंधन को प्रोत्साहन देने की भी घोषणा की। उन्होंने भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान एवं उद्यमी सौरभ गांगुली को पश्चिम बंगाल का ब्रांड एंबेसडर बनाए जाने का भी ऐलान किया। उद्योगपति परिवार से ताल्लुक रखने वाले गांगुली ने पिछले कुछ वर्षों में कारोबारी जगत में भी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है।

बनर्जी ने कहा कि पश्चिम बंगाल की अर्थव्यवस्था 8.41 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है और इसका सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) चालू वित्त वर्ष में 212 अरब डॉलर तक पहुंच जाएगा। फोर्ब्स इंडिया की हालिया रिपोर्ट में पश्चिम बंगाल को भारतीय राज्यों में सकल घरेलू उत्पाद के मामले में छठे स्थान पर रखा गया था। मुख्यमंत्री ने रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी, ऊर्जा दिग्गज संजीव गोयनका और विप्रो के रिशद प्रेमजी जैसे शीर्ष उद्यमियों की मौजूदगी में कहा कि चार नए औद्योगिक गलियारे स्थापित किए जाएंगे। ये गलियारे दानकुनी-कल्याणी, ताजपुर बंदरगाह-रघुनाथपुर, दनकुनी-झारग्राम और दुर्गापुर-कूच बिहार में स्थापित किए जाएंगे।

बनर्जी ने कहा कि इस सम्मेलन के पिछले छह संस्करणों में कुल 190 अरब डॉलर के प्रस्ताव आए थे जिनमें से 121 अरब डॉलर की परियोजनाएं शुरू हो चुकी हैं या क्रियान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं। बंगाल वैश्विक व्यापार शिखर सम्मेलन का आयोजन हर साल होता है। इसके सातवें संस्करण में ब्रिटेन, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, कोरिया, जापान, जर्मनी और फ्रांस सहित 35 देशों की सैकड़ों कंपनियां शिरकत कर रही हैं।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ने अपने उद्घाटन भाषण में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की अगुवाई वाली केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा, मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि राज्य को केंद्र से कोई भी वित्तीय समर्थन नहीं मिल रहा है। हमें माल एवं सेवा कर (जीएसटी) राजस्व में अपना हिस्सा नहीं मिल रहा है और मनरेगा योजना के तहत आवंटन भी रोक दिया गया है। उन्होंने पश्चिम बंगाल को शांति और सुशासन का एक मॉडल राज्य बताते हुए कहा कि विपक्ष इसकी छवि खराब करने का अभियान चलाए हुए है।

इसके साथ ही बनर्जी ने कहा, हालांकि मैं शांति और खुशहाली के पक्ष में हूं। कुछ लोग मुझसे पूछते हैं कि मेरी विचारधारा क्या है। मैं उनसे कहती हूं कि न तो मैं वामपंथ और न ही दक्षिणपंथ के पक्ष में हूं। मैं मानवतावाद में भरोसा करती हूं। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल 1.3 करोड़ लोगों को रोजगार देने वाली लगभग 90 लाख एमएसएमई इकाइयों का घर रहा है। इसके चमड़ा विनिर्माण परिसर को एशिया के सबसे बड़े परिसर के रूप में विस्तारित किया जा रहा है। इसके अलावा बंगाल में देश का एक प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) केंद्र भी है।

उन्होंने कहा कि बंगाल के मशहूर दुर्गा पूजा उत्सव से जुड़ी अर्थव्यवस्था इस साल बढ़कर 80,000 करोड़ रुपए की हो गई। इस अवसर पर रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक मुकेश अंबानी ने अगले तीन वर्षों में पश्चिम बंगाल में 20,000 करोड़ रुपए के अतिरिक्त निवेश की घोषणा की। अंबानी ने कहा कि यह निवेश दूरसंचार, खुदरा और जैव-ऊर्जा के क्षेत्र में किया जाएगा।

अंबानी ने कहा कि रिलायंस इंडस्ट्रीज ने पिछले कुछ वर्षों में राज्य में करीब 45,000 करोड़ रुपए का निवेश किया है। उन्होंने कहा, बंगाल के विकास को गति देने में रिलायंस कोई कसर नहीं छोड़ेगी। अंबानी ने कहा कि रिलायंस फाउंडेशन कोलकाता के प्रतिष्ठित कालीघाट मंदिर के असली गौरव की बहाली के लिए उसके नवीनीकरण एवं जीर्णोद्धार का काम करेगा।

देश की प्रमुख आईटी कंपनी विप्रो के चेयरमैन रिशद प्रेमजी ने कहा, पश्चिम बंगाल आईटी उद्योगों के विस्तार के लिए सही नीतिगत माहौल प्रदान करता है। वहीं आरपीजी समूह के संजीव गोयनका ने कहा कि उनकी कंपनी ने पिछले कुछ वर्षों में राज्य में 25,000 करोड़ रुपए का निवेश किया है। उन्होंने कहा, निर्णय लेना त्वरित और कुशल रहा है। इसके अलावा धीमे चलो, हड़ताल और अशांति का दौर भी बीत चुका है। मुख्यमंत्री काम चाहती हैं।

श्रीलंका में नहीं होगा पुरुष अंडर-19 विश्व कप

● आईसीसी का फैसला दक्षिण अफ्रीका स्थानांतरित किया

भाषा। अहमदाबाद

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के बोर्ड ने अगले साल होने वाले पुरुष अंडर-19 विश्व कप को श्रीलंका से दक्षिण अफ्रीका स्थानांतरित कर दिया है। आईसीसी के बोर्ड ने वैश्विक संचालन संस्था द्वारा श्रीलंका क्रिकेट (एसएलसी) को सरकारी हस्तक्षेप के कारण अस्थाई रूप से निलंबित करने के 11 दिन बाद यह कदम उठाया। आईसीसी बोर्ड ने यहां बैठक करके एसएलसी के निलंबन और आयु वर्ग के इस शीर्ष टूर्नामेंट को स्थानांतरित करने की पुष्टि की। आईसीसी बोर्ड के सदस्य ने कहा, अंडर-19 विश्व कप को एसएलसी के निलंबन के कारण श्रीलंका से दक्षिण अफ्रीका स्थानांतरित कर दिया गया है। प्रतिभागी देशों को एसएलसी को निलंबित करने के बाद कुछ दिन पहले इस बारे में जानकारी दी गई थी। दक्षिण अफ्रीका ने 2020 में भी अंडर-19 विश्व कप की मेजबानी की थी। इस फैसले को अहमदाबाद में आईसीसी बोर्ड की बैठक में स्वीकृति मिली। उन्होंने कहा, श्रीलंका की द्विपक्षीय श्रृंखलाएं और घरेलू क्रिकेट इससे प्रभावित नहीं होगा। हाल में संपन्न एकदिवसीय विश्व कप के लीग चरण से ही राष्ट्रीय टीम के बाहर होने के बाद एसएलसी ने ही आईसीसी से संपर्क करके देश में क्रिकेट के संचालन में सरकारी हस्तक्षेप की जानकारी दी थी। एसएलसी और खेल मंत्रालय पिछले कुछ समय से आमने-सामने हैं। सरकार ने एसएलसी अधिकारियों पर भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन में शामिल होने का आरोप लगाया है। आईसीसी ने बोर्ड बैठक के बाद जारी बयान में कहा, एसएलसी के प्रतिनिधित्व को सुनने के बाद, आईसीसी बोर्ड ने निर्णय लिया कि हाल ही में एक सदस्य के रूप में अपने दायित्वों का उल्लंघन करने के लिए निलंबित होने के बाद श्रीलंका द्विपक्षीय क्रिकेट और आईसीसी दोनों प्रतियोगिताओं में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करना जारी रख सकता है। एसएलसी को होने वाले भुगतान को आईसीसी और आईसीसी बोर्ड नियंत्रित करेंगे। एसएलसी अध्यक्ष शम्मी सिल्वा ने हाल में चेताया था कि सरकारी हस्तक्षेप जारी रहा तो देश 13 जनवरी से चार फरवरी तक होने वाले अंडर-19 विश्व कप की मेजबानी का अधिकार खो सकता है। सोमवार को एसएलसी ने बयान जारी करके कहा, एसएलसी का ध्यान निलंबन समस्या को हल करने पर केंद्रित है। ऐसा प्रतीत होता है कि खेल मंत्री आरोपों को लेकर कानूनी रास्ता अपनाए बिना मीडिया हेरफेर के माध्यम से एक अलग एजेंडा अपना रहे हैं। इसका उद्देश्य अपनी शक्तियों के दुरुपयोग के माध्यम से एसएलसी पर नियंत्रण हासिल करना है।

पुरुष वनडे और टी20 अंतरराष्ट्रीय में स्टॉप क्लॉक का इस्तेमाल करेगा आईसीसी

अहमदाबाद। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने मंगलवार को कहा कि पुरुष एकदिवसीय और टी20 अंतरराष्ट्रीय में अगर गेंदबाज अगला ओवर फेंकने के लिए 60 सेकेंड से अधिक समय लेता है तो पारी में तीसरी बार ऐसा करने पर गेंदबाजी टीम पर पांच रन की पेनल्टी लगाई जाएगी। इस नियम का इस्तेमाल शुरुआत में ट्रायल के तौर पर होगा। आईसीसी के बोर्ड की यहां हुई बैठक में यह फैसला किया गया।

आडवाणी ने 26वीं बार विश्व बिलियर्ड्स चैंपियनशिप का खिताब जीता

दोहा। भारत के दिग्गज क्यू खिलाड़ी पंकज आडवाणी ने मंगलवार को यहां फाइनल में हमवतन सौरव कोठारी को हराकर 26वीं बार आईबीएसएफ विश्व बिलियर्ड्स चैंपियनशिप का खिताब जीत लिया। शुरुआती घंटे में 26-180 से पिछड़ने के बाद आडवाणी ने कुआलालंपुर में पिछले साल के खिताबी मुकाबले की पुनरावृत्ति में 2018 के विश्व चैंपियन कोठारी को 1000416 से हराया। कोठारी शुरुआती बढ़त बनाने के बाद मजबूत स्थिति में थे लेकिन कुछ मौकों पर उन्होंने आसान गलतियां करके आडवाणी को वापसी करने का मौका दिया। आडवाणी ने इसके बाद 150 से अधिक अंक के कुछ ब्रेक के साथ अपनी स्थिति मजबूत की जबकि कोठारी मौकों का फायदा उठाने में नाकाम रहे। आडवाणी ने एक बार मैच का सर्वोच्च 214 अंक का ब्रेक भी बनाया जिसके बाद उन्हें जीत दर्ज करने में अधिक परेशानी नहीं हुई। वापसी करने के बाद आडवाणी ने मैच में अधिकांश समय 250 अंक के आसपास की बढ़त बनाए रखी। कोठारी ने इस बीच 99 के ब्रेक से आडवाणी की बढ़त को 150 रन तक सीमित किया बेंगलुरू के आडवाणी ने हालांकि इसके बाद 199 के अटूट ब्रेक के साथ 1000 अंक के आंकड़े को छूकर जीत दर्ज की। आडवाणी ने जीत के बाद कहा, मैं पहले भी जीत चुका हूं इसलिए मुझे इस अहसास के बारे में पता है लेकिन वर्ष दर वर्ष कई बार इसे जीतना कौशल, शरीर और दिमाग पर की गई घंटों की कड़ी मेहनत को सही साबित करता है। मेरे लिए, निरंतरता सफलता की कुंजी है और देश के लिए विश्व खिताब जीतने को लेकर मैं सबसे अधिक प्रेरित होता हूं। आडवाणी अब विश्व बिलियर्ड्स चैंपियन के अगले टूर्नामेंट में खेलेंगे जो छोटे प्रारूप (150 अप) में होगा। कोठारी ने शुरुआती बढ़त गंवाने के लिए थकान को जिम्मेदार ठहराया। मेरा सेमीफाइनल मुकाबला लगभग पांच घंटे चला और मुझे एक घंटे से कुछ अधिक के ब्रेक के बाद फाइनल खेलना पड़ा। मुझे लगता कि यह थकान के कारण हुआ। आडवाणी ने इससे पहले सेमीफाइनल में हमवतन भारतीय रूपेश शाह को 900-273 से हराया था। कोठारी ने सेमीफाइनल में ध्रुव सितवाला को 900-756 से शिकस्त दी थी।

बोल्ट ने मिशेल और साउथी को कबड्डी में हाथ आजमाने की सलाह दी

मुंबई। न्यूजीलैड के तेज गेंदबाज ट्रेंट बोल्ट, विकेटकीपर टॉम लैथम और मिशेल सेंटनर भारत में हाल ही में संपन्न विश्व कप के दौरान कबड्डी से काफी प्रभावित हुए और उनका मानना है कि टीम के उनके साथी ग्लेन फिलिप्स, डेरिल मिशेल और टिम साउदी इसमें रेडर और डिफेंडर की भूमिका अच्छे से निभा सकते है। लैथम ने इस दौरान कबड्डी की तुलना रग्बी से की।

त्रिनिदाद से हार के बावजूद अमेरिका ने कोपा अमेरिका में जगह बनाई

वाशिंगटन। सर्जिनो डेस्ट को 30 सेकंड के अंदर दो पीले कार्ड मिलने के कारण 10 खिलाड़ियों के साथ खेल रही अमेरिका की टीम त्रिनिदाद से हार के बावजूद अगले साल होने वाली कोपा अमेरिका फुटबॉल प्रतियोगिता के लिए क्वालीफाई करने में सफल रही। त्रिनिदाद ने पोर्ट ऑफ स्पेन में सोमवार को खेले गए मैच में 2-1 से जीत दर्ज की। उसने अपने दोनों गोल डेस्ट को 39वें मिनट में बाहर किए जाने के बाद किए। अमेरिका ने पिछले सप्ताह ऑस्टिन में खेले गए पहले चरण के मैच में 3-0 से जीत हासिल की थी।

गुल और सईद पाकिस्तानी टीम के गेंदबाजी कोच

लाहौर। पूर्व गेंदबाज उमर गुल और सईद अजमल को ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैड के आगामी दौरे के लिए पाकिस्तानी टीम का क्रमशः तेज गेंदबाजी और स्पिन गेंदबाजी कोच नियुक्त किया गया है। उमर इससे पहले भी पाकिस्तान की टीम के साथ गेंदबाजी कोच की भूमिका निभा चुके है जबकि अजमल पहली बार राष्ट्रीय टीम के साथ यह भूमिका निभाएंगे।

इंग्लैंड के खिलाफ वनडे श्रृंखला के लिए वेस्टइंडीज की टीम में दो नए चेहरे

सेंट जोन्स। वेस्टइंडीज ने इंग्लैड के खिलाफ अगले महीने होने वाली एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट श्रृंखला के लिए ऑलराउंडर शेरफेन रदरफोर्ड और मैथ्यू फोर्ड के रूप में दो नए चेहरे अपनी 15 सदस्यीय टीम में शामिल किए है। विकेटकीपर शेन डाउरिच और सलामी बल्लेबाज केजॉर्न ओटले की टीम मे वापसी हुई है। डाउरिच ने अपना एकमात्र वनडे मैच 2019 में खेला था जबकि ओटले ने जनवरी 2021 मे दो वनडे मैच खेले थे।

बीएसएनवी फाइनल में

लखनऊ। 19वीं कर्नल एसएन मिश्र ओ.बीई मेमोरियल क्रि केट के पहला सेमीफ इनल मैच बीएसएन वीण् इंटर कॉलेज एवं रेड रोज पब्लिक कॉलेज के बीच आर्यावर्त ग्राउंड पर खेला गया। टॉस जीत कर रेड रोज पब्लिक स्कूल ने पहले गेंदबाजी चुनी । बीएसएनवी कॉलेज के प्रखर पांडेय के 38,आर्यन के 32 व नीरज के 33 रनों की सहायता से 9 विकेट खोकर 166 रन बनाए। जवाब में रेड रोज पब्लिक स्कूल ने 19 ओवर 110 पर ऑल आउट हो गई। गेंदबाजी में बी एस एन वी इंटर कॉलेज के शिवांशु व काव्यांश ने तीन-तीन विकेट झटके। बीएसएनवी ने यह मुकाबला 61 रनों से जीत कर फाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली है।

सैन्य स्टेडियम में भगदड़ मचने से 37 लोगों की मौत

ब्राजाविले (कांगो गणराज्य)। (एपी) कांगो गणराज्य मे एक भर्ती आयोजन के दौरान युवाओं की बड़ी भीड़ उमड़ने के बाद सैन्य स्टेडियम में भगदड़ मच गई, जिसमे 37 लोगो की मौत हो गई। अधिकारियों ने मंगलवार को यह जानकारी दी।

वनडे विश्व कप में रिकॉर्ड दर्शकों के पहुंचने के बावजूद प्रारूप पर सवाल

भाषा। नई दिल्ली

अहमदाबाद में फाइनल वाले दिन रोहित व विराट से मिले पीएम मोदी

विश्व कप विजेता कप्तान पैट कमिंस ने खुद स्वीकार किया है कि उन्हें फिर से 50 ओवर के क्रिकेट से प्यार हो गया है, लेकिन मौजूदा समय में एकदिवसीय प्रारूप की भविष्य में प्रासंगिकता को लेकर बहस जारी है। इसमें कोई शक नहीं कि भारत विश्व क्रिकेट की धड़कन है और 45 दिनों तक चले विश्व कप के अधिकांश मैचों के दौरान स्टेडियम खचाखच भरे रहे। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि भारत ने अब तक के सबसे अधिक दर्शकों वाले वनडे विश्व कप का आयोजन किया है। भारत में हाल में संपन्न हुए वनडे विश्व कप के मैचों को 12 लाख 50 हजार दर्शकों ने स्टेडियम में जाकर देखा जो हर चार साल में होने वाली इस प्रतियोगिता का नया रिकॉर्ड है। दर्शकों का यह उत्साह हालांकि द्विपक्षीय श्रृंखला में शायद ही बरकरार रहे। खिलाड़ी और इस खेल को दिल से चाहने वाले टेस्ट क्रिकेट को पसंद करते हैं लेकिन टी20 प्रारूप से दर्शक ज्यादा प्रेरित और रोमांचित होते हैं। इस प्रारूप का इस्तेमाल खेल को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने के लिए किया जा रहा है। डिजिटल युग में एकाग्र होकर क्रिकेट देखने का दायरा पहले से कहीं कम हो गया है। इसके साथ ही सभी के पास एक वनडे मैच के लिए आठ घंटे बिताने का समय और उत्साह नहीं है। भारत में आईसीसी वनडे विश्व कप यह साबित करने में सफल रहा कि इस खेल की वैश्विक स्पर्धा को देखने के लिए लोग तैयार हैं लेकिन द्विपक्षीय एकदिवसीय श्रृंखला को लेकर यह विश्वास नहीं जगता है। ऐसे में यह सवाल उठता है: क्या वनडे मैच केवल विश्व कप वर्ष में ही खेले जाने चाहिए? अगर नहीं, तो क्या वसीम अकरम और सचिन तेंदुलकर जैसे दिग्गजों की सलाह पर प्रारूप में बदलाव किया जाना चाहिए। भारतीय टीम अगले साल सिर्फ छह एकदिवसीय मैच खेलेगी जबकि पाकिस्तान का अगला एकदिवसीय मुकाबला नवंबर 2024 में है। यह हाल तब है जबकि यह देश 2025 में चैम्पियंस ट्रॉफी (2025) की मेजबानी करेगा। विश्व कप के दौरान अकरम ने इस प्रारूप को 50 के बजाय 40 ओवरों का करने की वकालत की तो वही तेंदुलकर काफी समय से इसमें रोमांच बढ़ाने के लिए मैचों को 25-25 ओवरों की चार पारियों में बदलना चाहते हैं। अकरम से फॉक्स स्पोर्ट्स से कहा, मुझे अभी वनडे क्रिकेट से थोड़ी समस्या है। आजकल एक दिवसीय क्रिकेट में आप बहुत कम देखते हैं कि बीच के ओवरों (लगभग 30वें ओवर के आस पास) में कुछ दिलचस्प होता है। अगर 40 ओवर का प्रारूप होगा तो उस समय अधिक रोमांच होगा। मुझे नहीं पता कि यह होने वाला है या नहीं, लेकिन मुझे लगता है कि 40 ओवर अधिक दिलचस्प होंगे, खासकर द्विपक्षीय श्रृंखला के लिए। आजकल के दर्शक, हम जानते हैं कि उनके पास समय नब्बे के दशक की तुलना में कम है। हमें इसे टी20 प्रारूप और सोशल मीडिया के अनुकूल बनाना होगा। तेज गेंदबाजी में उनके जोड़ी वकार यूनुस ने आईसीसी को सुझाव दिया कि लगभग 30 ओवर के बाद गेंदबाजी टीम से एक गेंद वापस ली जाए। एकदिवसीय क्रिकेट बहुत हद तक बल्लेबाजों के अनुकूल है। आईसीसी को मेरा सुझाव होगा कि 30 ओवर के बाद दो में से एक गेंद वापस ले ली जाए। इससे गेंद पूरे खेल के दौरान 35 ओवर पुरानी होगी और गेंदबाजों को रिवर्स स्विंग करने का मौका मिलेगा। रिवर्स स्विंग की कला को बचाने के लिए यह जरूरी है। कमिंस ने विश्व चैंपियन बनने के बाद कहा कि उन्हें इस प्रारूप से प्यार है। हम जीत गए शायद इसलिए भी मुझे इस विश्व कप

मेल प्यूबर्टी हासिल करने वाले खिलाड़ी महिला क्रिकेट में प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते: आईसीसी

अहमदाबाद। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने प्रमुख नीतिगत फैसले में मंगलवार को उन क्रिकेटरो को अंतरराष्ट्रीय महिलाओं के खेल में प्रतिस्पर्धा करने से रोक दिया जो मेल प्यूबर्टी (पुरुषो में किशोरावस्था मे होने वाला शारीरिकलैंगिक बदलाव) हासिल कर चुके है। इसमे सर्जरी या लिंग परिवर्तन के मामले भी शामिल हैं। आईसीसी ने कहा कि वह अंतरराष्ट्रीय महिला क्रिकेट की अखंडता और खिलाड़ियो की सुरक्षा के लिए यह निर्णय ले रहा है। आईसीसी ने यहां जारी बयान मे कहा, नई नीति निम्नलिखित सिद्धांतो (प्राथमिकता के क्रम में) पर आधारित है। महिलाओं के खेल की अखंडता, सुरक्षा, निष्पक्षता और समावेशन। इसका मतलब है कि कोई भी पुरुष से महिला बनने वाले प्रतिभागी जो किसी भी प्रकार की मेल प्यूबर्टी से गुजर चुके है वे सर्जरी या लिंग परिवर्तन उपचार के बावजूद अंतरराष्ट्रीय महिला खेल में भाग लेने के पात्र नही होगे। लिंग पुनर्निर्धारण और उपचार वर्षो से विश्व एथलेटिक्स में बहस का विवादित विषय रहा है। आईसीसी ने अंतरराष्ट्रीय महिला क्रिकेट के लिए लिंग पात्रता के नियमो को मजबूत करते हुए घरेलू स्तर पर इस मुद्दे को सदस्य बोर्डों के हाथो में छोड़ दिया।

वार्नर को भारत के खिलाफ टी20 श्रृंखला से विश्राम

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया ने वनडे विश्व कप विजेता टीम के सदस्य रहे सलामी बल्लेबाज डेविड वार्नर को भारत के खिलाफ पांच मैचों की टी20 श्रृंखला से विश्राम दिया है। विश्व कप में ऑस्ट्रेलिया की तरफ से सर्वाधिक 535 रन बनाने वाले वार्नर को शुरू में मैथ्यू वेड की अगुवाई वाली टीम में शामिल किया गया था। विशाखापट्टनम में 23 नवंबर से शुरू होने वाली श्रृंखला के लिए पिछले महीने ही टीम घोषित कर दी गई थी। वार्नर की जगह ऑलराउंडर आरोन हार्डी को टीम में शामिल किया गया है और वह टीम से जुड़ चुके हैं। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने मंगलवार को जारी बयान में कहा, चयनकर्ताओं ने फैसला किया है कि वार्नर विश्व कप के सफल लेकिन चुनौतीपूर्ण अभियान के बाद स्वदेश लौटेंगे। वार्नर ने इस साल के शुरू में संकेत दिए थे कि पाकिस्तान के खिलाफ घरेलू श्रृंखला उनके टेस्ट करियर की अंतिम श्रृंखला हो सकती है लेकिन वह सीमित ओवरों के प्रारूप में खेलने के लिए प्रतिबद्ध हैं। बाएं हाथ के इस बल्लेबाज से सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में पूछा गया था कि क्या उन्होंने अपना अंतिम वनडे विश्व कप खेल लिया।

प्रणय, सात्विक-चिराग चीन मास्टर्स के दूसरे दौर में

भाषा। शेनझेन

स्टार भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी एचएस प्रणय ने मंगलवार को यहां चीनी ताइपे के चाउ टिएन चेन के खिलाफ सीधे गेम में जीत के साथ चीन मास्टर्स सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट के पुरुष एकल के दूसरे दौर में जगह बनाई। पीठ की चोट के कारण कुछ टूर्नामेंट से बाहर रहने वाले 31 साल के प्रणय ने पहले दौर में दुनिया के 12वें नंबर के खिलाड़ी को 21-18 22-20 से हराया और पिछले हफ्ते जापान में मिली हार का बदला चुकता कर दिया। एशियाई खेलों के कांस्य पदक विजेता प्रणय अगले दौर में हांगकांग के ली च्युक ईयू और डेनमार्क के मैग्नस योहानसन के बीच होने वाले मैच के विजेता से भिड़ेंगे। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की एशियाई खेलों की स्वर्ण पदक विजेता शीर्ष वरीय जोड़ी भी इंग्लैंड के बेन लेन और सीन वेंडी के खिलाफ 21-13 21-10 की आसान जीत के साथ पुरुष युगल के दूसरे दौर में पहुंचने में सफल रही। सात्विक और चिराग की राष्ट्रमंडल खेलों की चैंपियन जोड़ी अगले दौर में जापान के अकीरा कोगा और ताइची साइतो के खिलाफ उतरेगी। महिला एकल में भारत की एकमात्र खिलाड़ी आकर्षी कश्यप चीन की झेंग ई मान के खिलाफ 33 मिनट में 12-21 14-21 की हार के साथ प्रतियोगिता से बाहर हो गईं।

बीडब्ल्यूएफ के साल के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी के लिए नामित सात्विक और चिराग

नई दिल्ली। भारत के स्टार बैडमिंटन खिलाड़ियों सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी को बैडमिंटन विश्व महासंघ (बीडब्ल्यूएफ) के साल के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी पुरस्कार के लिए नामित किया गया। सात्विक और चिराग की पुरुष युगल जोड़ी ने हाल मे कई खिताब जीते है जिसमे चीन के हांगझोउ मे एशियाई खेलो का एतिहासिक स्वर्ण पदक भी शामिल है। सात्विक और चिराग ने इससे पहले 2022 राष्ट्रमंडल खेलो का भी स्वर्ण पदक जीता जबकि वह 2022 थॉमस कप मे खिताब जीतने वाली भारतीय टीम का भी हिस्सा रहे।

केडी सिंह बाबू इलेवन का जीत से आगाज

लखनऊ। पंडित रामऔतार मिश्र अंडर-14 हॉकी में केडी सिंह बाबू इलेवन ने जहां अपना मैच जीता वहीं विवेक सिंह इलेवन व रविंद्र इलेवन केबीच मैच गोल रहित ड्रा रहा। पहले मैच में केडी सिंह बाबू इलेवन ने जमन लाल इलेवन को 5-2 से हराया। जबकि विवेक सिंह इलेवन व रविंद्र इलेवन केबीच मैच 0-0 से बराबरी पर छूटा। पूर्व ओलंपियन सुजीत कुमार ने प्रतियोगिता का उद्घाटन किया।

लखनऊ की जीत में ऋतुराज का सैकड़ा

लखनऊ। ऋतुराज सिंह की धुआंधार बल्लेबाजी 35 गेंद पर 11 चौके और 8 छक्के से बनाए शानदार नाबाद शतक 101 रन तथा अजीत वर्मा के 37 गेंद पर छह चौके और 8 छक्के की मदद से बनाए गए नाबाद 96 रन से लखनऊ क्रिकेट संघ ने आयोजित यशोदा नंदन स्मारक अंदर.19 राज्य स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता में कानपुर क्रिकेट एसोसिएशन को 9 विकेट से पराजित कर दिया। कानपुर क्रिकेट एसोसिएशन ने निर्धारित 21 ओवर में तीन विकेट पर 203 रन बनाएं। अनमोल रतन ने 68 व शिवम ने नाबाद 76 तथा समन्वय दीक्षित ने हर्ष सिंह ने दो विकेट लिया। जवाब में लखनऊ ने 12.2 ओवर में एक विकेट पर 205 रन बना लिए।

वेंगर फुटबॉल प्रतिभा को तलाशने के लिए प्रतिबद्ध

भुवनेश्वर। दिग्गज कोच आर्सीन वेंगर ने मंगलवार को यहां फीफा-एआईएफएफ अकादमी का उद्घाटन करते हुए भारत में प्रतिभाओं को तलाशने और देश को विश्व फुटबॉल मानचित्र पर स्थापित करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध बताया। आर्सेनल के पूर्व कोच वेंगर वर्तमान में फीफा (फुटबॉल की वैश्विक संचालक संस्था) के वैश्विक फुटबॉल विकास के प्रमुख के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने हालांकि कोई समय सीमा नहीं दी कि भारत कब तक महान खिलाड़ी तैयार करना शुरू कर देगा। उन्होंने कहा कि जमीनी स्तर पर उचित विकास के बिना, देश वैसा ही रहेगा जैसा अभी है। हमारी परियोजना भारत में प्रतिभाओं की पहचान करना, सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को एक साथ लाना, उन्हें एक अच्छा कोचिंग कार्यक्रम देना, उन्हें अच्छी शिक्षा और अच्छे स्तर की प्रतिस्पर्धा देना और उन्हें महान खिलाड़ी बनाना है। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) और ओडिशा सरकार के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर के दौरान मौजूद वेंगर ने कहा, हमारा बड़ा प्रयास प्रतिभा को बाहर निकालना और उन्हें जितना हो सके उतना अच्छा बनाना है। इस करार के तहत पहले समूह में फीफा के कोच अंडर-14 वर्ग के देश भर के 50 खिलाड़ियों का चयन कर उन्हें दो साल तक अकादमी में प्रशिक्षण देंगे। इसमें से 15 खिलाड़ी ओडिशा के होंगे। ओडिशा सरकार खिलाड़ियों के भोजन, आवास और शिक्षा का ख्याल रखेगी जबकि फीफा तकनीकी जानकारी और कोच प्रदान करेगा। फीफा ने पहले ही कोच के तौर पर स्पेन के सर्गी अमेजकुआ फॉन्ट्रोडोना की सिफारिश की है। वह इससे पहले परियोजना निदेशक के रूप में चीन में फुटबॉल के विकास में शामिल थे। वह दो साल के लिए अकादमी के मुख्य कोच बन सकते हैं जबकि उन्हें सहयोग देने के लिए एक भारतीय (कोच) को कुछ महीनों में नियुक्त किया जाएगा। चार-पांच महीने में एक विदेशी सहायक कोच की नियुक्ति भी की जाएगी। इतनी बड़ी आबादी के साथ भारत के पास दुनिया में शीर्ष पर रहने की अपार संभावनाएं हैं। हम मिलकर यही हासिल करना चाहते हैं। इसमें कितना समय लगेगा, मुझे नहीं पता। वेंगर ने अकादमी का निरीक्षण किया जो शीर्ष श्रेणी की सुविधाओं के साथ तैयार है। इस अकादमी की शुरुआत ओडिशा राज्य फुटबॉल अकादमी के रूप में हुई थी। हमने अभी-अभी अकादमी का दौरा किया है, बुनियादी ढांचे की गुणवत्ता बहुत अच्छी है। एआईएफएफ के अध्यक्ष कल्याण चौबे ने कहा कि इस अकादमी से निकलने वाले खिलाड़ियों से भारत योग्यता के आधार पर फीफा अंडर-17 विश्व कप के लिए क्वालीफाई कर सकता है। भारत ने 2017 फीफा अंडर-17 विश्व कप में मेजबान देश के रूप में भाग लिया था। हमें योग्यता के आधार पर अंडर-17 विश्व कप के लिए क्वालीफाई करने का सपना देखना चाहिए। हमें अंडर-17 आयु वर्ग में सर्वश्रेष्ठ में से एक बनने का प्रयास करना चाहिए और उसके बाद हम दुनिया के शीर्ष देशों में से एक बनने के बारे में सोच सकते हैं। हम आने वाले तीन वर्षों में ऐसा कर सकते हैं।

आईएसएसएफ विश्व कप: दिव्या सातवें, ईशा 13वें स्थान पर, सरबजोत नौवें पायदान पर

दोहा। भारत की दिव्या टीएस मंगलवार को यहां अंतरराष्ट्रीय निशानेबाजी खेल महासंघ (आईएसएसएफ) के सत्र के आखिरी विश्व कप फाइनल में महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल प्रतियोगिता के फाइनल में सातवें जबकि ईशा सिंह 13वें स्थान पर रही। भारतीय निशानेबाजों के लिए यह निराशाजनक दिन था क्योंकि पुरुष वर्ग में सरबजोत सिंह भी करीबी अंतर से अंतिम आठ में जगह बनाने से चूक गए। दिव्या ने 60 निशाने के क्वालिफिकेशन दौर में 576 का स्कोर बनाया। वह 14 प्रतियोगियों के बीच में छठे स्थान पर रही। भारतीय निशानेबाज फाइनल में हालांकि अच्छी शुरुआत नही कर सकी। वह शुरुआती 10 निशाने के बाद सातवें स्थान पर खिसक गई और 14वें निशाने के बाद 137.8 के स्कोर के साथ इस स्पर्धा से बाहर हो गई। हाल ही में एशियाई खेलो में चार पदक जीतने वाली ईशा 571 अंक के साथ 13वें स्थान पर रही। पुरुषों की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में सरबजोत क्वालिफिकेशन में ज्यादातर समय अंतिम आठ में जगह बनाने के लिए अच्छी स्थिति में थे।

अभय, तन्वी और अनाहत राष्ट्रीय स्क्वाश चैंपियनशिप के सेमीफाइनल में पहुंचे

चेन्नई। शीर्ष वरीयता प्राप्त अभय सिंह और तन्वी खन्ना मंगलवार को यहां राष्ट्रीय स्क्वाश चैंपियनशिप में अपने-अपने वर्ग के सेमीफाइनल में पहुंचे में सफल रहे। पुरुष एकल में गत चैंपियन और एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता अभय ने गुहान सेंथिलकुमार को एकतरफा मुकाबले में 11-2, 11-2, 11-5 से हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। अंतिम-चार में उनका मुकाबला सूरज चंद से होगा, जिन्होंने वैभव चौहान को 11-3 11-8, 11-7 से हराया। क्वार्टर फाइनल के अन्य मुकाबले में हरिंदर पाल सिंह संधू ने वीर चोटरानी को 11-9, 11-7, 11-9 से हराया। सेमीफाइनल में उनका मुकाबला वेलावन सेंथिलकुमार से होगा। वेलावन सेंथिलकुमार ने वेदांत पटेल को 11-3, 11-4, 11-7 से पराजित किया। महिला एकल में एशियाई खेलों की रजत पदक विजेता तन्वी ने शमीना रियाज को 11-5, 11-4, 11-4 से हराया। उनके सामने अब राथिका सुथनथिरा सीलन की चुनौती होगी। राथिका ने क्वार्टर फाइनल मे जेनेट विधि को 11-4, 11-6, 11-2 से हराया। अंतिम आठ मे अनाहत और उर्वशी जोशी भी पहुंचने मे सफल रहे। एशियाई खेलों की कांस्य पदक विजेता अनाहत ने दिया यादव को 11-7, 11-2, 11-2 से मात दी। उर्वशी ने पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए सुनीता पटेल को 5-11, 11-6, 11-4, 11-2 से हराया।

भारत के पैरा तीरंदाज चार और फाइनल में, आठ स्वर्ण पदक के लिए चुनौती पेश करेंगे

बैंकॉक। भारतीय तीरंदाजो ने पैरा एशियाई तीरंदाजी चैंपियनशिप में अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए मंगलवार को यहां चार और स्पर्धाओं के फाइनल में जगह बनाई जिससे भारत की नजरें आठ स्वर्ण पदक पर है।भारत ने पुरुष डब्ल्यू। युगल में कजाखस्तान को 128-118 से हराकर फाइनल मे जगह बनाई जहां उनका सामना कोरिया से होगा।भारत ने पुरुष कंपाउंड ओपन युगल में सेमीफाइनल में मलेशिया को 154-153 से हराकर फाइनल मे जगह बनाई। स्वर्ण पदक के मुकाबले के लिए भारत की भिड़ंत चीनी ताइपे से होगी।महिला रिकर्व ओपन युगल में भारत ने सेमीफाइनल मे थाईलैंड को 6-2 से हराया। फाइनल मे अब टीम भिड़ंत इंडोनेशिया से होगी।भारत ने कंपाउंड मिश्रित टीम स्पर्धा के भी फाइनल में जगह बनाई जब राकेश और शीतल देवी की जोड़ी ने फिलीपीस की जोड़ी को 155-139 से हराकर खिताबी मुकाबले में जगह बनाई।

शीर्ष खिलाड़ी विश्व टेनिस के प्री क्वार्टर फाइनल में

बेंगलुरू। भारत की वैदेही चौधरी सहित अन्य शीर्ष खिलाड़ियों ने मंगलवार को यहां अपने पहले दौर के मुकाबले जीतकर आईटीएफ महिला विश्व टेनिस टूर के प्री क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। वैदेही ने वाइल्ड कार्ड धारक और हमवतन अंजलि राठी को सीधे सेटो मे 6-3, 6-3 से हराया जबकि छठी वरीय स्विट्जरलैंड की जेनी डुएर्स्ट ने भारत की क्वालीफायर यशस्विनी पंवार के खिलाफ 6-3, 6-2 से जीत दर्ज की। इटली की सातवी वरीय डिलेटा चेरूबिनी ने अनास्तासिया सुखाटिन को 6-1, 6-2 से हराया। हाल मे राष्ट्रीय चैंपियन बनी श्रीवल्ली रश्मिका भामिदिपाती ने हुमेरा बहारमस को 6-1, 7-5 से हराकर बाहर का रास्ता दिखाया। रश्मिका ने इसके बाद वैदेही के साथ मिलकर युगल में सुहिता मारुरी और प्रतिभा नारायण प्रसाद की जोड़ी को 6-0, 6-3 से हराकर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। इससे पहले एशियाई खेलो की स्वर्ण पदक विजेता रुतुजा भोसले को बोवरिंग इंस्टीट्यूट ने सम्मानित किया जबकि केएसएलटीए ने महाद्वीपीय खेलों में उनकी उपलब्धि के लिए उन्हें एक लाख रुपए का चेक सौपा। तीसरी वरीय रुतुजा एकल वर्ग में बुधवार को अपना अभियान शुरू करेंगी लेकिन युगल वर्ग मे उन्होंने कजाखस्तान की झिबेक कुलाबाएवा के साथ मिलकर आकांक्षा दिलीप और निधित्रा राजमोहन की जोड़ी को 6-1, 6-0 से हराया।

राष्ट्रीय कोचिंग शिविर के लिए महिला हॉकी टीम घोषित

बेंगलुरु। हॉकी इंडिया ने यहां साइ (भारतीय खेल प्राधिकरण) केंद्र में 22 नवंबर से 10 दिसंबर तक चलने वाले सीनियर राष्ट्रीय महिला कोचिंग शिविर के लिए सोमवार को 34 सदस्यीय संभावित टीम घोषित की। भारत को 15 से 22 दिसंबर के बीच वेलेंसिया में होने वाले पांच देशो के टूर्नामेंट में हिस्सा लेना है। भारत के अलावा इस प्रतियोगिता में आयरलैंड, जर्मनी, बेल्जियम और मेजबान स्पेन की टीम भाग लेगी। रांची में 13 जनवरी से शुरू होने वाले एफआईएच हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर्स के लिए भारतीय टीम की तैयारी के लिए यह महत्वपूर्ण कदम है। भारतीय महिला हॉकी टीम की कोच यानिक शोपमैन ने यहां जारी विज्ञप्ति मे कहा, हमारे लिए लय बनाए रखना और यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि अगले साल होने वाली प्रतियोगिताओं से पहले हम सही मानसिक स्थिति मे रहें। हमारी निगाहे पेरिस ओलंपिक पर टिकी है और उसमे अपनी जगह सुरक्षित करने के लिए हमें रांची में अगले साल होने वाले एफआईएच हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर्स में अच्छा प्रदर्शन करना होगा। भारतीय खिलाड़ी इस महीने के शुरू में रांची में एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी में शानदार प्रदर्शन करने के बाद शिविर मे वापसी करेंगे। गोलकीपर: सविता, रजनी एतिमारपु, बिचू देवी खारीबाम, बंसारी सोलंकी,डिफेंडर: दीप ग्रेस एक्का, गुरजीत कौर, निक्की प्रधान, उदिता, इशिका चौधरी, अक्षता अबासो ढेकले, ज्योति छत्री, महिमा चौधरी,मिडफील्डर: निशा, सलीमा टेटे, सुशीला चानू पुखरंबम, ज्योति, नवजोत कौर, मोनिका, मारियाना कुजूर, सोनिका, नेहा, बलजीत कौर, रीना खोखर, वैष्णवी विट्ठल फाल्के, अजमीना कुजूर, फारवर्ड: लालरेम्सियामी, नवनीत कौर, वंदना कटारिया, शर्मिला देवी, दीपिका, संगीता कुमारी, मुमताज खान, सुनेलिता टोप्पो, ब्यूटी डुंगडुंग।

इटली, स्लोवेनिया और चेक गणरज्य ने यूरो 2024 के लिए क्वालीफाई किया

मिलान। पिछले दो विश्व कप के लिए क्वालीफाई करने मे नाकाम रहे इटली ने अगले साल होने वाली यूरोपीय फुटबाल चैंपियनशिप में अपनी जगह सुरक्षित करके राहत की सांस ली। इटली के अलावा स्लोवेनिया और चेक गणराज्य ने भी यूरो 2024 के लिए क्वालीफाई किया। चेक गणराज्य के कोच जारोस्लाव सिलहावी ने मोल्दोवा के खिलाफ अंतिम सीटी बजने के तुरंत बाद इस्तीफा दे दिया। पिछले पांच साल से इस पद पर बने सिलहावी ने कहा कि उन्होंने मैच से पहले ही यह निर्णय कर लिया था। इटली को ग्रुप सी में दूसरा स्थान हासिल करने और प्लेऑफ से बचने के लिए केवल एक अंक की जरूरत थी। उसने यूक्रेन के खिलाफ गोल रहित ड्रा खेल कर यह महत्वपूर्ण अंक अर्जित किया और जर्मनी में होने वाले यूरो 2024 के लिए क्वालीफाई किया। इटली प्लेऑफ में हारने के कारण पिछले दो विश्व कप के लिए क्वालीफाई ही नही कर पाया था।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष: 011-40110455 से प्रकाशित तथा बीएफएल इन्फोटेक लिमिटेड सी-9 सेक्टर-3, नोएडा-201301 (उ.प्र.) से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: प्रदीप तिवारी।
पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।
पत्रवार्ता ऑफिस- एफ-31, सेक्टर 6, नोएडा, गौतमबुद्धनगर-201301, उत्तर प्रदेश, दूरभाष- 120-4879900।